- वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि उपकर से मिला राजस्व राज्यों से होगा साझा - 12

- केंद्रीय मंत्री गोयल बोले-भारत और रूस व्यापार को संतुलित बनाने की जरूरत - 12

- अमेरिकी सांसदों का रूबियो को पत्र, पाकिस्तान पर लगाएं कड़े प्रतिबंध - 13

- सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश ने चंडीगढ़ को 40 रनों से हराया - 14

आज का मौसम

22.0° अधिकतम तापमान

08.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.54

सूर्यास्त 05.17

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

मुरादाबाद

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

पौष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा 12:55 उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025, वर्ष 6, अंक 248, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

गले लग दोस्त पुतिन का स्वागत

ग्रैंड वेलकम देने खुद पहुंचे मोदी, रक्षा व भारत-रूस व्यापार को बाहरी दबाव मुक्त रखने पर चर्चा आज

- शिखर वार्ता में भारत रूस से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल खरीदने से बढ़ते व्यापार घाटे को दुरुस्त करने पर देगा जोर

नई दिल्ली, एजेंसी

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन गुरुवार की शाम को दो दिन के दौरे पर नई दिल्ली पहुंचे। इस यात्रा का उद्देश्य लगभग आठ दशक पुरानी भारत-रूस साझेदारी को और मजबूत करना है, एक ऐसी साझेदारी जो जटिल भू-राजनीतिक माहौल के बावजूद स्थिर बनी हुई है। हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति का गले लग स्वागत किया। चार साल के अंतराल के बाद उनका भारत आगमन हुआ है।

प्रधानमंत्री शुक्रवार को होने वाली 23वीं भारत-रूस शिखर वार्ता को लेकर बेहतर माहौल बनाने के उद्देश्य से गुरुवार शाम को पुतिन के लिए निजी रात्रिभोज की मेजबानी की। दोनों नेताओं के बीच होने वाली वार्ता का मुख्य विषय रक्षा संबंधों को मजबूत करना, भारत-रूस व्यापार को बाहरी दबाव से सुरक्षित रखना और छोटे मॉड्यूलर संयंत्रों में सहयोग की संभावनाओं की तलाश जैसे मुद्दों पर केंद्रित होगा। बैठक के बाद दोनों पक्षों के बीच व्यापार के क्षेत्रों सहित कई समझौते होने की उम्मीद है। दोनों नेताओं के बीच बैठक से पहले शुक्रवार सुबह राष्ट्रपति भवन में पुतिन का औपचारिक स्वागत किया जाएगा। बैठक हैदराबाद हाउस में होगी, जहां मोदी राष्ट्रपति पुतिन और उनके प्रतिनिधिमंडल के लिए भोज का आयोजन करेंगे और इस दौरान कई मुद्दों पर चर्चा भी होगी। मामले से परिचित लोगों के अनुसार, पुतिन सुबह राजघाट भी जाएंगे। बैठक के बाद पुतिन रूसी सरकारी प्रसारक का नया 'इंडिया चैनल' भी शुरू करेंगे। शिखर वार्ता में भारत रूस से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल खरीदने से बढ़ते व्यापार घाटे को दुरुस्त करने पर जोर देगा।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के नई दिल्ली आगमन पर उनका गले लगकर स्वागत करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। **दाएं** : पुतिन को अपने अधिकारिक आवास पर ले जाते प्रधानमंत्री।

वित्त मंत्री व रूसी उपप्रधानमंत्री ने आपसी हित के मुद्दों पर की बात

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रूस के प्रथम उपप्रधानमंत्री डेनिस मेंटुरोव के नेतृत्व वाले एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की जिसमें निवेश, बैंकिंग और वित्त सहित आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि भारत और रूस दोनों ने पांच दिसंबर, 2025 को होने वाले आगामी 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन से मजबूत परिणामों की उम्मीद जताई है। मंत्रालय ने कहा कि रूस के प्रथम उपप्रधानमंत्री ने ब्रिक्स समूह की आगामी अध्यक्षता के लिए भारत को मजबूत समर्थन दिया।

पश्चिमी देश रख रहे करीब से नजर

दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच होने वाली बैठकों पर पश्चिमी देशों करीब से नजर रख रहे हैं। रूसी नेता का नई दिल्ली का लगभग 27 घंटे का दौरा इसलिए और भी अहम हो गया है क्योंकि यह भारत-अमेरिका संबंधों में तेजी से आ रही गिरावट की पृष्ठभूमि में हो रहा है। वहीं, यूक्रेन युद्ध को लेकर भारत लगातार यह कहता रहा है कि बातचीत और कूटनीति ही युद्ध खत्म करने का एकमात्र तरीका है।

संपत्ति का ब्योरा नहीं दिया तो भूल जाएं पदोन्नति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- प्रदेश सरकार का सख्त आदेश, 31 जनवरी तक आठ लाख से अधिक कार्मिकों को चल-अचल संपत्ति बताना अनिवार्य
- मानव संपदा पोर्टल पर विवरण दर्ज नहीं करने वालों के नाम एक फरवरी के बाद होने वाली डीपीसी से स्वत: होंगे बाहर

अमृत विचार: सरकारी अधिकारी व कर्मचारियों की पदोन्नति पर अब संपत्ति की पारदर्शिता का पहरा होगा। योगी सरकार ने स्पष्ट आदेश में कहा है कि जो भी कर्मचारी 31 जनवरी 2026 तक अपनी चल-अचल संपत्ति का ब्योरा मानव संपदा पोर्टल पर दर्ज नहीं करेगा, उसे स्थायी रूप से प्रमोशन से वंचित कर दिया जाएगा। इतना ही नहीं, ऐसे कर्मचारियों पर विभागीय कार्रवाई भी अनिवार्य रूप से की जाएगी। सरकार ने इसे अंतिम चेतावनी करार दिया है।

प्रदेश में आईएएस, आईपीएस, पीसीएस व पीपीएस अधिकारियों समेत आठ लाख से अधिक सरकारी कार्मिक विभिन्न विभागों में कार्यरत हैं। सरकार पिछले कई वर्षों से इस बारे में नोटिस, रिमाइंडर जारी कर रही है। किंतु बड़ी संख्या में कर्मचारी भी लापरवाही बरतते रहे हैं। सरकार ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 31 दिसंबर 2025 तक अर्जित सभी प्रकार की संपत्ति का ब्योरा देना अनिवार्य है। कोई भी कर्मचारी यह समझकर न बैठे कि यह केवल औपचारिकता है। मुख्य सचिव एसपी गोयल की ओर से जारी आदेश में सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है कि पहली फरवरी 2026 के बाद होने वाली किसी भी विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक में उन्हीं कर्मचारियों के नाम शामिल किए जाएं, जिन्होंने समय पर संपत्ति विवरण अपलोड किया हो। जो कर्मचारी इसे नहीं करेंगे, उनके नाम सूची से स्वतः बाहर कर दिए जाएंगे।

यह विवरण देना अनिवार्य

कर्मचारियों को अपनी हर प्रकार की संपत्ति का विवरण देना होगा। इसमें घर, प्लॉट, दुकान, दोपहिया/चार पहिया वाहन, बैंक बैलेंस, फिक्स्ड डिपॉजिट, बीमा, शेयर/म्यूचुअल फंड निवेश, कोई भी अन्य चल-अचल संपत्ति शामिल है। सरकार ने बताया कि मानव संपदा पोर्टल 1 जनवरी 2026 से खुल जाएगा और 31 जनवरी 2026, रात 12 बजे तक ही सक्रिय रहेगा। इसके बाद पोर्टल बंद हो जाएगा और कोई प्रविष्टि स्वीकार नहीं होगी।

इन्हें नियमों के तहत छूट

पहले से नियमों के छूट पाने वालों में चतुर्थ श्रेणी (ग्रुप डी) के कुछ कर्मचारी जैसे चौकीदार, सफाईकर्मी, माली, चपरासी, वाहन चालक (कुछ विभागों में) शामिल हैं। साथ ही आउटसोर्स स्टाफ, संविदा आधारित कर्मी, दैनिक वेतन भोगी, प्रेरक व सहायकों आदि जैसी श्रेणियां, प्रोजेक्ट आधारित कर्मचारी (एनएचएम, मिशन, एड्स कंट्रोल, डूडा आदि) इन पर संपत्ति विवरण देने का प्रावधान ही नहीं था, इसलिए पहले से छूट मानी जाती है। इसके अलावा स्वायत्तशासी व विभिन्न निगमों के वे कर्मचारी जिनके सेवा नियम अलग हैं।

ब्रीफ न्यूज

मिजोरम के पूर्व राज्यपाल स्वराज कौशल का निधन

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा की वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज के पति एवं मिजोरम के पूर्व राज्यपाल तथा वरिष्ठ अधिवक्ता स्वराज कौशल का गुरुवार को यहां निधन हो गया। वह 73 वर्ष के थे। दिल्ली भाजपा ने एक बयान में उनके निधन की जानकारी दी। सुषमा स्वराज और स्वराज कौशल की इकलौती संतान बांसुरी स्वराज नयी दिल्ली से सांसद हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वराज कौशल के निधन पर शोक व्यक्त किया तथा वंचितों की मदद के लिए कानूनी पेशे का उपयोग करने के लिए उन्हें याद किया। मोदी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, स्वराज कौशल जी के निधन से मैं दुखी हूं।

दिल्ली की वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में

नई दिल्ली। प्रदूषण में कई दिनों तक तेज वृद्धि और गिरावट दर्ज किए जाने के बाद, राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता गुरुवार शाम को एक बार फिर बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गई, जिससे सुबह की अल्पकालिक राहत खत्म हो गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 304 रहा, जो बहुत खराब श्रेणी में आता है।

बीएलओ के काम के दबाव को कम करें राज्य और केंद्र

नई दिल्ली, एजेंसी

- सुप्रीम कोर्ट ने और कर्मचारी मुहैया कराने के दिए निर्देश

शीर्ष कोर्ट ने मतदाता सूचियों के समयबद्ध एसआईआर में जुटे बूथ स्तरीय अधिकारियों पर कामकाज का अत्यंत दबाव होने के आरोपों से जुड़ी याचिका पर गौर करते हुए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को और अधिक कर्मचारियों को तैनात करने का निर्देश दिया है ताकि बीएलओ के कामकाज के घंटो में कमी लाई जा सके।

शीर्ष अदालत अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें निर्वाचन आयोग को यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि समयबद्ध तरीके से ड्यूटी न निभाने के लिए बीएलओ के खिलाफ प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत कोई दंडात्मक कार्रवाई न की जाए। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने टीवीके की ओर से पेश वरिष्ठ वकील गोपाल शंकरनारायणन की दलीलों पर गौर किया कि कुछ निर्देश जारी किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि चुनाव आयोग के अधिकारियों की ओर से दबाव डाले जाने के कारण कई बीएलओ की मौत हो चुकी है। अधिवक्ता ने कहा कि इसके अलावा निर्वाचन आयोग के अधिकारी सौंपा गया कामकाज पूरा करने में विफल रहने पर बीएलओ के खिलाफ प्राथमिकियां भी दर्ज करा रहे हैं। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि राज्य सरकार काम का दबाव कम करने के लिए अतिरिक्त कर्मचारी तैनात करने पर विचार कर सकती है।

छूट मांगने का विशिष्ट कारण है तो अन्य कर्मचारी तैनात करें

पीठ ने कहा कि यदि किसी कर्मचारी के पास ड्यूटी से छूट मांगने का कोई विशिष्ट कारण है, तो राज्य सरकार का संबंधित अधिकारी ऐसे अनुरोधों पर मामलों के आधार पर विचार कर सकता है और उस कर्मचारी की जगह किसी अन्य को तैनात कर सकता है। अदालत ने कहा, हालांकि, यह न समझा जाए कि यदि उनके विकल्प उपलब्ध नहीं कराए गए हैं तो वे ड्यूटी पर नियुक्त कर्मचारियों को वापस बुला सकते हैं।

संस्कृति क्षीण होने पर राष्ट्र खो देता है एकात्मता व पहचान : योगी

- सीएम के साथ योगेंद्र डिमरी ने किया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह का उद्घाटन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति, परंपराएं और महापुरुषों से होती है। यदि संस्कृति क्षीण होती है तो राष्ट्र अपनी एकात्मता व पहचान खो देता है।

गुरुवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह-2025 के उद्घाटन अवसर पर योगी बोल रहे थे। इसके पहले योगी के साथ राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल योगेंद्र डिमरी (से.नि.) ने समारोह का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि संकट या राष्ट्रीय चुनौती के समय महापुरुषों का शौर्य नई ऊर्जा देता है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, रानी लक्ष्मीबाई और सीमाओं पर बलिदान देने वाले जवान देश के लिए प्रेरणा हैं। उन्होंने कहा कि ईमानदारी से कर्तव्य पालन, पर्यावरण संरक्षण, लोक कल्याण और एक अच्छा नागरिक बनना भी सच्ची देशभक्ति है। योगी ने परिषद के संस्थापक महंत दिग्विजयनाथ द्वारा वर्ष 1932 में रखी नींव का उल्लेख करते हुए दिवंगत अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह और अन्य सदस्यों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रही शिक्षा परिषद के लिए यह आत्ममंथन का अवसर है कि समाज और राष्ट्र के प्रति उसकी भूमिका कैसी रही।

गोरखपुर में समारोह के उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री योगी व अन्य।

शोभायात्रा में दिखा समूचा भारत

संस्थापक सप्ताह की शोभायात्रा में गोरखपुर की सड़कों पर भारतीय संस्कृति, तकनीकी विकास, विरासत और राष्ट्रीय शौर्य का प्रदर्शन किया गया। एनसीसी कैडेट्स, ताइक्वांडो टीम, स्कूल-कॉलेजों के हजारों विद्यार्थियों ने अनुशासनपूर्ण मार्च पास्ट किया। शोभायात्रा में मां सरस्वती, भारत माता, महायोगी गुरु गोरखनाथ, महाराणा प्रताप, महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवेद्यनाथ के चित्र शामिल रहे। 'ऑपरेशन सिंदूर' से सैनिक शौर्य और राम मंदिर झांकी से विरासत का सम्मान प्रस्तुत किया गया। मुख्यमंत्री योगी और मुख्य अतिथि ने दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज की शोध पत्रिका 'दिग्विजयम्' व महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज की 'मिशन मंझरिया' रिपोर्ट का विमोचन किया। एनसीसी कैडेट्स ने मुख्य अतिथि को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। 'विकसित भारत, विकसित उत्तर प्रदेश @2047' प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया गया।

रामलला को ओढ़ाई जा रही रजाई

- सुबह उन्हें गर्म पानी से स्नान कराकर श्रृंगार के दौरान गर्म कपड़े पहनाए जा रहे

अयोध्या। रामनगरी में ठंड बढ़ने के बाद राम मंदिर में विराजमान रामलला को सुबह ब्लोवर से गर्म हवा दी जा रही है और शयन के दौरान रजाई ओढ़ाई जा रही है। सुबह उन्हें गर्म पानी से स्नान कराकर श्रृंगार के दौरान गर्म कपड़े पहनाए जा रहे हैं। भोग में भी काढ़ा समेत गर्म भोजन खिलाया जा रहा है। जिससे कि उन्हें ठंड से बचाया जा सके।

रामलला के पुजारी संतोष आचार्य के मुताबिक जैसे-जैसे ठंड बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे पांच वर्षीय रामलला को ठंड से बचाने के लिए उनकी दिनचर्या में बदलाव होता जाएगा। पहले चद्दर और कम्बल ओढ़ाया जा रहा था, अब रजाई उड़ाई जा रही है। वहीं कनक भवन, हनुमान गढ़ी, मणिराम दास छावनी, राम बल्भाकुंज, चारुशीला मंदिर समेत अन्य मंदिरों के गर्भगृह में विराजमान देवी-देवताओं की मूर्तियों पर गर्म कपड़े पहनाए जा रहे हैं।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क संशोधन विधेयक पारित

नई दिल्ली, एजेंसी

- शीतकालीन सत्र के दौरान संसद के उच्च सदन ने दी मंजूरी

संसद ने गुरुवार को केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025 को पारित कर दिया, जिसमें तंबाकू उत्पादों पर जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर समाप्त होने के बाद समान कर बोझ रखने के लिए उत्पाद शुल्क लगाने का प्रावधान है। राज्यसभा में उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 में संशोधन वाले विधेयक पर चर्चा और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जवाब के बाद उच्च सदन ने इसे ध्वनिमत से लौटा दिया।

विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए वित्त मंत्री ने कहा, तंबाकू और इसके उत्पादों पर उत्पाद शुल्क लगाने से जीएसटी क्षतिपूर्ति कर समाप्त करने के बाद भी कर का बोझ समान रहेगा। कहा कि चूंकि जीएसटी कानून में अधिकतम कर दर 40 प्रतिशत तय है, इसलिए यदि जीएसटी उपकर हटा दिया जाता है और उत्पाद शुल्क नहीं लगाया जाता है तो तंबाकू पर कुल कर बोझ वर्तमान स्तर से कम हो जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कर बोझ जीएसटी मुआवजा उपकर के दौरान जितना था, उससे कम न हो।

नहीं उड़े इंडिगो के 400 विमान, 3 दिन तक परिचालन रह सकता रद्द

मुंबई, एजेंसी

देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो में परिचालन व्यवधान लगातार तीसरे दिन गुरुवार को भी जारी रहने से 400 से अधिक घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों को रद्द कर दिया गया, जबकि कई देर से रवाना हुईं। इस वजह से हजारों यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ी।

वहीं, इंडिगो ने डीजीसीए को जानकारी दी है कि अगले दो-तीन दिन तक उड़ानों का रद्द होना जारी रहेगा। दिल्ली में इंडिगो की 100, मुंबई में 70, हैदराबाद में 70 और बेंगलुरु में 100 उड़ानें रद्द की गईं। अन्य अड्डों पर भी उड़ानें रद्द होने की बात सामने आई है। छह प्रमुख हवाई अड्डों- दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद के संयुक्त आंकड़ों के आधार पर एयरलाइन की समयपालन दर बुधवार को गिरकर 19.7% पर आ गई जबकि 4 दिसंबर को यह 35 प्रतिशत थी।

- इंडिगो के उड़ान प्रबंधन में आई गिरावट पर यात्रियों के साथ हितधारक भी उठा रहे सवाल

कंपनी परिचालन को सामान्य बनाने में जुटी: सीईओ एल्बर्स

नई दिल्ली। परिचालन संकट से गुजर रही इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स ने कहा कि विमानन कंपनी का तात्कालिक लक्ष्य परिचालन को सामान्य करना एवं सेवाओं का समय पर संचालन करना है लेकिन यह कोई आसान लक्ष्य नहीं है। एल्बर्स ने कर्मचारियों को दिए संदेश में यह स्वीकार किया कि एयरलाइन ग्राहकों को हवाई यात्रा का अच्छा अनुभव प्रदान करने के अपने वादे पर खरी नहीं उतर सकी।

सख्ती | ट्रंप प्रशासन ने वीजा धारकों के लिए जांच और सत्यापन प्रक्रियाएं की कड़ी

एच-1बी वीजा के लिए सोशल मीडिया प्रोफाइल करने होंगे सार्वजनिक

- 15 दिसंबर से आवेदकों और उनके आश्रितों की ऑनलाइन उपस्थिति की समीक्षा की जाएगी

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी सरकार ने एच-1बी वीजा आवेदकों और उन पर आश्रित एच-4 वीजा धारकों के लिए जांच और सत्यापन प्रक्रियाएं कड़ी कर दी हैं। नए निर्देशों के तहत सभी आवेदकों को अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल की निजता सेटिंग्स सार्वजनिक (पब्लिक) रखने के लिए कहा गया है।

विदेश विभाग ने जारी किए नए आदेश में कहा कि 15 दिसंबर से सभी एच-1बी आवेदकों और उनके आश्रितों की ऑनलाइन उपस्थिति की समीक्षा की जाएगी। इससे पहले छात्र (एफ, एम) और 'एक्सचेंज विजिटर' (जे वीजा) पहले से ही ऐसी जांच के दायरे में थे, जिसे अब एच-1बी और एच-4 वीजा तक बढ़ा दिया गया है। विदेश विभाग ने कहा, इस जांच को सुगम बनाने के लिए सभी एच-1बी, एच-4, एफ, एम और जे वीजा आवेदकों को अपने सभी सोशल मीडिया प्रोफाइल की प्राइवेसी सेटिंग्स सार्वजनिक करने के निर्देश दिए जाते हैं।

विभाग ने जोर देकर कहा कि अमेरिकी वीजा कोई अधिकार नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार है और राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में उपलब्ध सभी सूचनाओं का उपयोग करके आवेदकों की गहन जांच की जाती है।

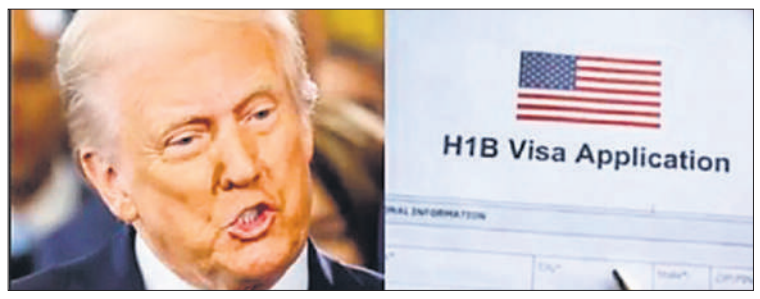

विदेश मंत्रालय ने कहा- अमेरिकी वीजा कोई अधिकार नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार

अमेरिकी बयान में कहा गया है, हर वीजा निर्णय एक राष्ट्रीय सुरक्षा का निर्णय है। यह कदम ट्रंप प्रशासन द्वारा आव्रजन नियमों को कठोर बनाने की नवीनतम कार्रवाई है। प्रशासन एच-1बी वीज़ा के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए व्यापक कार्रवाई कर रहा है, जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियां विदेशी पेशेवरों को नियुक्त करने में करती हैं। भारतीय पेशेवर, विशेषकर प्रौद्योगिकी कर्मी और चिकित्सक एच-1बी वीज़ा के सबसे बड़े लाभार्थी हैं।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार,5 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

दावत में जा रही महिला से छेड़छाड़ तीन पर रिपोर्ट

स्वार, अमृत विचार : कोतवाली के एक गांव निवासी महिला अपने परिवार के साथ मंगलवार की दोपहर गांव में ही एक मैरिज हाल कार्यक्रम में शामिल होने जा रही थीं। रास्ते में खड़े प्रेम सिंह, किशन लाल और रामकुंवर ने उनका रास्ता रोक लिया और गाली गलौज कर महिला के साथ मारपीट शुरू कर दी। आरोप है कि छेड़छाड़ भी की। पीड़िता को बचाने आईं मां और भाभी को भी पीटा। इसके बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। शिकायत पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

स्पीड ब्रेकर पर बाइक से गिरी महिला घायल

स्वार, अमृत विचार : उत्तराखंड के केलाखेड़ा निवासी रहीस बुधवार को अपनी पत्नी अनीसा को साथ लेकर रामपुर किसी से आए थे। देर रात दोनों बाइक से घर लौट रहे थे। जैसे ही उनकी बाइक स्वार रामपुर मार्ग स्थित गांव रुस्तमनगर के पास बने स्पीड ब्रेकर पर पहुंची कि अचानक झटका लगने से पीछे बैठी अनीसा सड़क पर गिर गई। गंभीर रूप से घायल हो गई। नाजुक हालत देखते उन्हें बरेली रेफर किया गया है।

विकास कार्य तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों को दें जवाब

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री ने 472.89 लाख रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण और 333.21 लाख की परियोजनाओं का किया शिलान्यास

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

मंत्री जयवीर सिह का गदा देकर अभिनंदन करते कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह। मंच पर मौजूद एमएलसी डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त, जिपं अध्यक्ष डॉ. शेफाली सिह आदि।

अमृत विचार : प्रदेश के पर्यटन विकास एवं संस्कृति विभाग के मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि विकास कार्यों से सरकार सांप्रदायिकता व तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों को जवाब दे रही है। वर्तमान प्रदेश सरकार वन डिस्ट्रिक्ट वन योजना पर काम कर रही है जबकि अखिलेश यादव की सपा सरकार में वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया के सिद्धांत पर काम होता था। आज प्रदेश में अपराध मुक्त शासन चल रहा है। अपराधियों पर बुलडोजर चलाकर सरकार ने कानून का राज कायम किया है।

प्रदेश के पर्यटन विकास एवं संस्कृति विभाग के मंत्री जयवीर सिंह गुरुवार को रामपुर रोड पर एक बैंक्वेट हाल के परिसर में आयोजित कार्यक्रम में 26 करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास करने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा कराए जा रहे 472.89 लाख रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण और 333.21 लाख की परियोजनाओं का शिलान्यास किया। इसमें 472.89 लाख रुपये लागत की जिले की चार परियोजनाओं ग्रामीण क्षेत्र के प्राचीन कामेश्वर महादेव मंदिर निवाड़खास, बिलारी में पौड़ाखेड़ा मंदिर शाहाबाद रोड, ठाकुरद्वारा क्षेत्र में प्राचीन शिव मंदिर रतुपुरा और हनुमान समाधि प्रेम सन्यास आश्रम न्यास में मल्टीफेसिलीटी सेंटर/हाल, टायलेट ब्लॉक, प्रकाश व्यवस्था, स्टोन बेंच, स्टोन वर्क डस्टबिन, हार्टीकल्चर आदि कार्यों के लोकार्पण किया। इसके अलावा उन्होंने वर्ष 2025-26 के लिए तीन परियोजनाओं प्राचीन महादेव मंदिर कुंदरकी, नगर में द्वारिकाधीश मंदिर और विश्नोई मंदिर लोधीपुर के कार्य का शिलान्यास भी किया। उन्होंने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र पर काम कर बिना भेदभाव के विकास करा रही है। सरकार की योजनाओं का पारदर्शिता से लाभ मिल रहा है। सरकार गरीब कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होकर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार मंदिर, दरगाह लोगों की आस्था के केंद्र का विकास कर विरासत का सम्मान कर रही है।

इसके पहले कार्यक्रम में पहुंचे मुख्य अतिथि प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के मंत्री ने कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पार्चन कर दीप प्रज्वलित कर किया। कुंदरकी के विधायक रामवीर सिंह ने योजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास के लिए पर्यटन मंत्री और प्रदेश सरकार का आभार जताया। विधान परिषद सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त, विधान परिषद सदस्य गोपाल अंजान, अमरोहा के मंडी धनौरा के विधायक राजीव तरारा,जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. शेफाली सिंह ने भी संबोधित किया। भाजपा के जिला प्रभारी राजेश यादव, जिलाध्यक्ष आकाश पाल, केके मिश्रा के अलावा बड़ी संख्या में क्षेत्रीय जनता उपस्थित रही।

रामपुर जिले में लोकार्पण

- मंत्री ने मंच से रामपुर जिले के 331.76 लाख रुपये की लागत से 2023-24 के अन्तर्गत विलासपुर में प्राचीन शिव मंदिर, नवाबगंज, शाहबाद में ऐतिहासिक सिद्धमणि मंदिर मदारपुर, स्वार क्षेत्र में प्राचीन शिव मंदिर सीरका ग्राम रुपापुर में मल्टीपरपज सेंटर, हॉल, टायलेट ब्लॉक, प्रकाश व्यवस्था, स्टोन बेंच, स्टोन वर्क डस्टबिन, हार्टीकल्चर कार्य
- रामपुर जिले में एक परियोजना धनराशि 98 लाख रुपये की लागत से विलासपुर में प्राचीन शिव मंदिर चंदैन में मल्टीपरपज हाल, टायलेट ब्लॉक आदि के कार्य। इसके अलावा पर्यटन विभाग की वर्ष 2021-22 में विलासपुर में प्राचीन शिव मंदिर ग्राम रिठौंडा में 40.29 लाख रुपये से कार्य पूरे

अमरोहा जिले को परियोजनाएं

- विधानसभा धनौरा में प्राचीन शिव मंदिर, पत्थरकुटी लागत 104.16 लाख
- विधानसभा हसनपुर में प्राचीन शिव मंदिर, ग्राम फूलपुर विझनपुर लागत 116.39 लाख
- विधानसभा नौगांवा सदात में शिव मंदिर मेला स्थल ग्राम गजस्थल लागत 98.31 लाख
- विधानसभा अमरोहा सदर में वासुदेव मंदिर लागत रुपये 143.14 लाख से मल्टीपरपज हाल, टायलेट ब्लॉक आदि के कार्य कराए गए इसके अलावा कई कार्यों का शिलान्यास भी किया गया।

मुराएदाबाद जिले के लोकार्पण व शिलान्यास

- मुरादाबाद ग्रामीण में प्राचीन कामेश्वर महादेव मंदिर निवाड़खास लागत रुपये 116.10 लाख
- बिलारी में श्री पौड़ाखेड़ा मंदिर शाहाबाद रोड लागत रुपये 122.77 लाख
- विधानसभा ठाकुरद्वारा क्षेत्र में प्राचीन शिव मंदिर ग्राम रतुपुरा लागत रुपये 110.95 लाख रुपये
- विकास खंड ठाकुरद्वारा में श्री हनुमान मंदिर समाधि प्रेम सन्यास आश्रम न्यास लागत रुपये 123.07 लाख रुपये

इनमें मल्टीफेसिलिटी सेंटर, हॉल, टायलेट ब्लॉक, प्रकाश व्यवस्था, स्टोन बेंच, स्टोन वर्क डस्टबिन, हार्टीकल्चर आदि के कार्य कराए गए।

- प्राचीन महादेव मंदिर कुंदरकी में धनराशि रुपये 84.13 लाख रुपये से विकास कार्य कराए जाएंगे, साथ ही नगर में द्वारिकाधीश मंदिर का 81.29 लाख रुपये से सौंदर्यीकरण व पर्यटन की दृष्टि से विकास कार्य और विश्नोई मंदिर लोधीपुर में 167.79 रुपये से विकास कार्य कराए जाएंगे
- इसके अलावा जिले में पर्यटन विभाग की वर्ष 2022 में चंद्रदेव महाराज मंदिर बिलारी में 342.61 लाख रुपये की लागत से कार्य पूर्ण जिसमें मल्टीपरपज हॉल, टायलेट ब्लॉक व अन्य सौंदर्यीकरण कार्य, वर्ष 2023-24 में गायत्री नगर लाइनपार स्थित प्राचीन शिव मंदिर में 169.57 लाख के कार्य प्रगति पर है।

कार्यकर्ताओं को बेहतर कार्य के लिए मिला सम्मान

पर्यटन मंत्री ने कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र के मंडल अध्यक्षों के अलावा एसआईआर कार्य में बेहतर प्रगति करने वाले पार्टी के बीएलए को भी मंच पर सम्मानित किया। इसके अलावा उन्होंने दिव्यांग मोहम्मद सलमान निवासी ग्राम पंचायत हमीदपुर विधानसभा कुंदरकी को भी संबोधित किया। विधायक ने बताया कि मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिव्यांग मोहम्मद सलमान का जिक्र कर कार्यों की सराहना की थी।

उप चुनाव में मतदाताओं ने चुना विकास का रास्ता

विनोद श्रीवास्तव, मुरादाबाद

लोगों को संबोधित करते कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह।

अमृत विचार: पर्यटन व संस्कृति विभाग के मंत्री जयवीर सिंह ने कुंदरकी विधानसभा के रामपुर रोड स्थित एक फार्म हाउस परिसर में जनसभा को संबोधित किया। कहा कि पहले ये क्षेत्र पूरी तरह उपेक्षित था क्योंकि सपा के चुने गए जनप्रतिनिधि ने कोई काम नहीं कराया। इसलिए मतदाताओं ने उप चुनाव में भाजपा के रामवीर सिंह को विधायक चुना।

मंत्री ने मंच से यह कहकर जन समुदाय की सराहना पाई कि हिंदू मुसलमान के बीच बिना भेदभाव के कार्यों की स्वीकृति कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि योजनाओं का सर्वाधिक लाभ अल्पसंख्यक समाज के लोगों को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि कुंदरकी की जनता ने रामवीर सिंह को विधायक चुन कर साबित कर दिया कि उन्हें विकास चाहिए न कि सपा की भेदभावपूर्ण, सांप्रदायिकता व नफरत वाली राजनीति। विधान परिषद सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. शेफाली सिंह, अमरोहा के मंडी धनौरा से विधायक राजीव तरारा ने भी कुंदरकी विधायक के विकास कार्यों के प्रति लगन व जनता से जमीनी स्तर पर जुड़ाव को अनुकरणीय बताया।

विज्ञान शिक्षिका बबीता मेहरोत्रा का साइंस फेस्टिवल के लिए चयन

मुरादाबाद, अमृत विचार : जिले की राजकीय हाई स्कूल हुसैनपुर छिरावली की विज्ञान शिक्षिका बबीता मेहरोत्रा का चयन इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल की प्रतिष्ठित कार्यशाला के लिए हुआ है। बबीता मेहरोत्रा पहली बार अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में जनपद का प्रतिनिधित्व करने जा रही हैं।

इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार, शिक्षा विभाग तथा विज्ञान जगत से जुड़े लोगों ने उन्हें बधाई दी है। उनके मार्गदर्शन में जिले में विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रगति हो रही है। बबिता मेहरोत्रा पूर्व में आईआईटी गांधीनगर की एडवाइजरी बोर्ड मेंबर के रूप में भी सेवाएं दे चुकी हैं। विज्ञान शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और नवाचारी दृष्टिकोण उन्हें शिक्षकों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करता है।

बिल्डिंग पर चढ़कर मजदूर ने दी आत्महत्या की धमकी

- श्रम प्रवर्तन अधिकारी पर लगाया रिश्वत मांगने का आरोप
- पैसे न देने पर आवेदन निरस्त करने का लगाया आरोप

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

श्रम विभाग के कार्यालय के ऊपर छत पर चढ़ा युवक। ● अमृत विचार

अमृत विचार : श्रम प्रवर्तन अधिकारी पर रिश्वत मांगने व न देने पर आवेदन निरस्त करने का आरोप लगाकर एक मजदूर गुरुवार को श्रम विभाग की बिल्डिंग पर चढ़ गया और आत्महत्या की धमकी देने लगा, जिससे परिसर में अफरा-तफरी मच गई। मजदूर को उतारने के लिए फायर ब्रिगेड कर्मियों के अलावा सिविल लाइन थाने की पुलिस भी पहुंची। पुलिस को देखकर वह छत से कूदने की धमकी देने लगा। किसी तरह उपायुक्त श्रम ने उसे समझाकर शांत करते हुए उतारा। आरोपों की जांच कराने का आश्वासन दिया।

जिला पंचायत कार्यालय परिसर में बने श्रम विभाग कार्यालय की छत पर चढ़कर कूदने की धमकी देने वाले लोकेश पुत्र हरस्वरूप, निवासी सहडोली तहसील कांठ का कहना था कि उसने 18 जनवरी 2022 में श्रमिक के रुप में पंजीकरण कराने के बाद विभाग द्वारा संचालित मातृत्व शिशु एवं बालिका मदद योजना के अन्तर्गत 3 अगस्त 2025 को ऑनलाइन आवेदन किया था। गुरुवार को वह श्रम विभाग के कार्यालय पहुंचा और क्षेत्रीय श्रम प्रवर्तन अधिकारी से मिला। श्रम प्रवर्तन अधिकारी ने बताया कि जांच के दौरान मजदूर के भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार निर्माण श्रमिक होने की पुष्टि नहीं हुई है,जिस पर आवेदन निरस्त हो गया है।

इस पर वह भड़क उठा और छत पर चढ़ गया। कूद कर आत्महत्या की चेतावनी देने लगा। उसने रिश्वत न देने पर उसका आवेदन निरस्त करने का आरोप श्रम प्रवर्तन अधिकारी पर लगाया। शोर सुनकर उपश्रमायुक्त दीप्तिमान भट्ट ने छत पर पहुंचकर उससे बातचीत की। इस बीच जिलाधिकारी के संज्ञान में मामला आने पर उन्होंने अग्निशमन अधिकारी ज्ञान प्रकाश शर्मा को मौके पर जाने का निर्देश दिया। लेकिन फायर ब्रिगेड की गाड़ी देखकर लोकेश कूदने की धमकी देने लगा। हालांकि समझाने के बाद उप श्रमायुक्त ने उसकी शिकायत और आवेदन की दोबारा जांच कराने का आश्वासन दिया। बात के दौरान ही पीछे से पहुंचे फायर ब्रिगेड के कर्मियों ने उसे पकड़ लिया और नीचे ले आए।

ब्लेकमेल करने को लगा रहा रिश्वत मांगने का आरोप

उप श्रमायुक्त दीप्तिमान भट्ट ने बताया कि युवक द्वारा आत्महत्या की धमकी देने के पीछे उसका यह दबाव था कि उसे योजना में पात्र घोषित कर लाभ दिया जाए। उसके आवेदन की जांच के दौरान जांच अधिकारी ने पाया था कि लोकेश ने खुद को खेती करने वाला किसान बताया था, जिसके आधार पर उसका आवेदन अपात्र होने के कारण निरस्त किया गया था। इसने गंभीर बीमारी सहायता योजना में भी आवेदन किया था। जांच में उसके द्वारा मेडिकल से संबंधित दस्तावेज फर्जी लगाने के कारण आवेदन निरस्त हो चुका है। इन सबके बाद वह कार्यालय की छत पर चढ़कर ब्लैकमेल करने के लिए रिश्वत मांगने का आरोप लगा रहा है। उसकी संतुष्टि के लिए आरोप की जांच कराएंगे। उसके आवेदन की दोबारा जांच का भी निर्देश दिया है।

खुलासा: बीमा हड़पने को पिता ने कराई थी पुत्र की हत्या

संवाददाता, कुंदरकी

- वकील से मिलकर रची साजिश परिचितों से कराई हत्या

पुलिस गिरफ्त में पिता व अन्य आरोपी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : बृहस्पतिवार को कुंदरकी पुलिस ने अनिकेत शर्मा हत्याकांड का खुलासा करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया। पुलिसके अनुसार पिता ने ही बीमा की राशि हड़पने के लिए वकील से मिलकर बेटे की हत्या की थी।

पुलिस ने बताया गया कि मृतक के चाचा नवनीत शर्मा की शिकायत पर कुंदरकी पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए जांच शुरू की थी। जांच के दौरान पुलिस को मृतक के पिता बाबूराम शर्मा, आदेश कुमार , विजयपाल, साजिद, असलम उर्फ सुल्तान, तहब्बुर मेवाती, के नाम प्रकाश में आए। पता चला था कि अनिकेत शर्मा के पिता बाबूराम शर्मा ने वकील आदेश कुमार के साथ मिलकर 2 जनवरी 2024 को एचडीएफसी बैंक बहजोई में अनिकेत के नाम से एक खाता खुलवाया था और उसका मोबाइल नंबर भी लिंक कराया था। खाता खुलवाने के बाद एटीएम कार्ड वकील आदेश कुमार ने अपने पास रख लिया। खाता खुलवाने के कुछ दिन आदेश कुमार नेअनिकेत शर्मा व उसके पिता को बुलाकर अनिकेत के नाम से टाटा इंश्योरेंस कंपनी में एक बीमा पॉलिसी कराई। पॉलिसी में साधारण मृत्यु पर एक करोड़ 5 लाख व दुर्घटना मृत्यु पर 2 करोड़ 10 लाख रुपए का क्लेम मिलना था। कुछ दिन बाद बाबूराम शर्मा पुराने मुकदमे में उत्तराखंड जेल भेजा गया। इसी दौरान वकील आदेश कुमार शर्मा ने यूपीआई के जरिये बीमा की किस्तें जमा कीं। कुछ दिन बाद बाबूराम शर्मा जेल से छूअकर आ गया। अनिकेत शराब पीने का आदी था इसी का फायदा उठाकर आदेश कुमार ने बाबूराम शर्मा को लालच देकर उसके पुत्र अनिकेत की हत्या कराने की बात कही। बाबूराम लालच में आ गया। पुलिस के अनुसार बाबूराम ने आदेश कुमार से अक्टूबर में 50,000 रुपये लिए और अनिकेत की हत्या के लिए पुराने परिचित असलम उर्फ सुल्तान पुत्र नन्हे का निवासी नाटिया खेड़ा थाना शाहबाद रामपुर से 3,50,000 रुपए में सौदाकर 50 हजार एडवांस दे दिए। बाबूराम अपने बेटे अनिकेत को मोटरसाइकिल पर बैठाकर विजयपाल निवासी टंकी मोहल्ला नगर पालिका के पास गंगा एक्सप्रेसवे पुलिया के नीचे ले गया। वहां से असलम, साजिद , तहब्बुर मेवाती और बाबूराम शर्मा अनिकेत को कार से चंदौसी ले गया। वहां उसको शराब पिलाकर बिलारी ले गए जहां दोबारा शराब पिलाई। इसके बाद कुंदरकी बाईपास जयपुर पट्टी से मोहनपुर जाने वाले रास्ते पर असलम ने लोहे की राड से अनिकेत के सिर पर तीन बार किये जिससे अनिकेत का सर फट गया और मौके पर ही मृत्यु हो गई। इसके बाद असलम ने कार अनिकेत के ऊपर दो बार चढ़ा दी और शर्ट की जेब में उसका ड्राइविंग लाइसेंस रख दिया।

जिला कारागार में अब्दुल्ला से मिले अधिवक्ता

रामपुर, अमृत विचार: गुरुवार को अधिवक्ताओं ने जिला कारागार में अब्दुल्ला आजम खां से मुलाकात की। हालांकि स्वास्थ्य खराब के चलते आजम खां से मुलाकात नहीं हो सकी। दो पैन कार्ड मामले में 18 नवंबर को सपा नेता आजम खां और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम खां को सात-सात साल की सजा सुनाई गई थी। उसके बाद से दोनों जिला कारागार में बंद है। आजम खां से कोई न कोई मिलने की कोशिश करता है, लेकिन वह मिलने से इंकार कर देते है। बुधवार को आजम खां से उनकी पत्नी, बेटे और बहन ने मुलाकात का प्रयास किया था, लेकिन आजम खां और उनके बेटे ने मिलने से इंकार कर दिया था।

दो पासपोर्ट मामले में आज आ सकता फैसला

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

- 18 नवंबर से जिला कारागार में बंद है अब्दुल्ला

अमृत विचार : सपा नेता आजम खान के बेटे पूर्व विधायक अब्दुल्ला के खिलाफ पासपोर्ट मामले में पिछली तारीखों को बहस पूरी हो चुकी है। शुक्रवार (आज) इस मामले में फैसला आ सकता है। मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए कोर्ट में हो रही है।

सपा नेता मोहम्मद आजम खान के बेटे अब्दुल्ला आजम के खिलाफ भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने सिविल लाइंस में रिपोर्ट दर्ज कराई थी, जिसमें अब्दुल्ला पर अलग-अलग जन्मतिथि से दो पासपोर्ट बनवाने का आरोप था। एक पासपोर्ट में जन्मतिथि पहली जनवरी 1993 है, जबकि दूसरे पासपोर्ट में जन्मतिथि 30 सितंबर 1990 दर्ज है। दूसरा पासपोर्ट संख्या जेड-4307442 अब्दुल्ला के नाम 10 जनवरी 2028 को जारी हुआ था। पुलिस ने जांच पूरी कर अब्दुल्ला के खिलाफ आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल कर दिए थे। इस मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (मजिस्ट्रेट ट्रायल) में चल रही है। शुक्रवार को इस मामले में फैसला आ सकता है। हालांकि अब्दुल्ला आजम खां जिला कारागार में बंद है।

रंजिश के चलते रास्ता रोककर पेंट कारोबारी पर चाकू से किया हमला

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

घायल व्यापारी।

अमृत विचार : रंजिश के चलते कुछ लोगों ने पेंट कारोबारी को रोककर उसके ऊपर चाकू से हमला करके घायल कर दिया। बचाने आए उसके साथी के ऊपर फायर कर दिया। जिससे वह बाल बाल बच गया। पीड़ित के पिता ने थाने में तहरीर दी। जिसके बाद पुलिस ने पिता पुत्र सहित तीन लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

शहजादनगर थाना क्षेत्र के गांव चमरौआ निवासी मुर्तजा अली का कहना है कि उसके बेटे अरशद अली की चमरौआ अड्डे पर पेंट की दुकान है। गुरुवार सुबह नए नंबर से अरशद अली के पास फोन आया कि गांव मौलिया में रंग का काम है। आकर काम देख लो, उसके बाद अरशद अली पेंटर नजीर मियां के साथ काम देखने जा रहा था कि मोमिनपुर रोड पर रंजिश के चलते पहले से घात लगाए बैठे कुछ लोगों ने अरशद अली को रोककर उसके साथ गाली-गलौज कर दी थी। विरोध करने पर उसके ऊपर चाकू से हमला करके घायल कर दिया था। उसके शोर मचाने पर लोग आ गए थे। जब अरशद अली को नजीर मियां ने बचाने की कोशिश की तो उसके ऊपर फायर कर दिया। जिससे वह बाल बाल बच गया। लोगों को आता देखकर आरोपी फरार हो गए। युवक के पिता ने शहजादनगर में तहरीर दी। शहजादनगर एसओ हरेंद्र यादव ने बताया कि तहरीर के आधार पर जमशेद अली,अफसर अली और इरफान के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। फायरिंग का मामला संदिग्ध है, गोली चलने की बात ठीक नहीं है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

- शहजादनगर थाने में तीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज, जांच शुरू

7 दिसंबर को होनी है युवक की शादी

पीड़ित के पिता मुर्तजा अली का कहना है कि उसके बेटे की 7 दिसंबर को बारात जानी है। जिसको लेकर तैयारियां की जा रही है। सुबह के समय काम पर जाते हुए आरोपियों उनके बेटे को रोककर हमला कर दिया। जान से मारने की कोशिश की। गांव में मामला चर्चा का विषय बना हुआ है। माना जा रहा है कि दोनों पक्षों में युवती को लेकर विवाद चला आ रहा है। पहले भी दोनों पक्षों के लोग आमने-सामने आ चुके हैं।

ग्रामीणों ने कानूनगो के सामने प्रधान पति को पीटा

रामपुर, अमृत विचार : जमीन की पैमाइश करने आए कानूनगो और लेखपाल के साथ प्रधान पति को खड़ा होना भारी पड़ गया। गांव के चार लोगों ने अधिकारियों को बुलाने का हवाला देकर प्रधान पति को लाठी डंडों से पीटकर घायल कर दिया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने चार लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

भोट थाना क्षेत्र निवासी वाजिद अली का कहना है कि वह मौजूदा समय में उसकी पत्नी भोट गांव की प्रधान है। तीन दिन दिसंबर को कस्बा भोट में कानून गो और लेखपाल जमीन की नपाई करने आए थे। इसी बीच गांव के दूसरे पक्ष के नाजिम, दानिश, इमरान, आरिफ भी मौके पर पहुंच गए। प्रधानपति के साथ गाली-गलौज करते हुए मौके पर ही लाठी डंडों से पीटकर घायल कर दिया। जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। लोगों को गांव में एकत्रित होता देखकर आरोपी मौका पाकर फरार हो गए। बाद में थाने में तहरीर दी।

कुपोषण | जिला अस्पताल के एनआरसी केंद्र में कुपोषण के मात्र 6 बच्चे भर्ती

250 बच्चे अतिकुपोषित, एनआरसी में आधे बेड खाली

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

103 जिला अस्पताल परिसर में बना एनआरसी में खाली पड़े आधे बेड।

अमृत विचार : जिले में कुपोषण की समस्या चिंताजनक होती जा रही है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार जिले में 250 से अधिक बच्चे अति कुपोषित हैं, जिला अस्पताल के एनआरसी (न्यूट्रिशन रिहेबिलिटेशन सेंटर) में हालात इसके बिल्कुल उलट हैं। यहां बेड आधे खाली पड़े हुए हैं।

कुपोषित और अतिपोषित बच्चों के उपचार के लिए जिला अस्पताल में एनआरसी बना हुआ है। अभी यहां कुपोषण के शिकार मात्र 6 बच्चे ही भर्ती हैं। पिछले माह 6 बच्चों को भर्ती कराया गया था, जिन्हें 14 दिन के उपचार के बाद घर भेज दिया गया। अब इनकी मॉनिटरिंग आंगनबाड़ी व आशा वर्कर के माध्यम से कराई जा रही है। छह महीने पहले तो स्थिति और भी गंभीर थी तब एक-दो बच्चे ही एनआरसी पहुंच रहे थे। गांवों में घर-घर जाकर कुपोषण के प्रति जागरूक किया गया तब जाकर मामूली सुधार हो पाया। एनआरसी चिकित्सकों का कहना है कि अब स्थिति बदली है। जो परिजन अपने बच्चे का यहां से उपचार कराकर जा रहे हैं वह भी लोगों को जागरूक कर रहे हैं। एनआरसी में 12 बेड पड़े हुए हैं, जिसमें से छह बेड पर बच्चे भर्ती हैं और छह बेड खाली पड़े हुए हैं।

एनआरसी में डॉ. ध्युती गुप्ता ने बताया कि अभिभावक बच्चों को केंद्र में भर्ती कराने से बचते हैं। हालांकि, एनआरसी सेंटर से पोषण पुनर्वास के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध उपचार, संतुलित आहार और यहां 14 दिन तक बच्चे का संपूर्ण नियमित मॉनिटरिंग की जाती है। इसके बावजूद कई परिजन बच्चों को भर्ती नहीं करवा रहे। बताया कि कुपोषित बच्चों की सेहत लगातार बिगड़ती है। एनआरसी में समय से पहुंचने पर बच्चा जल्दी सामान्य स्थिति में आ जाता है। इसके लिए जन-जागरूकता और परिजनों की सक्रिय भागीदारी बेहद जरूरी है।

यह है कुपोषण का मानक

0 से 5 साल के बच्चों का वजन उनकी उम्र और लिंग के अनुसार अलग-अलग होता है। स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से निधारित मानकों के अनुसार एक साल के लड़के का वजन लगभग 10.2 किग्रा और लड़की का 9.5 किलो होना चाहिए। दो से पांच साल के बच्चों का वजन 12.3 किलो से 16 किग्रा और लड़कियों का 12 किलो से 15 किलो तक हो सकता है। तीन से पांच साल के बच्चों में लड़कों का वजन 14 से 17 किलो और लड़कियों का 14 से 16 किलो तक होना चाहिए। इसी तरह 0 से पांच साल के बच्चों की लंबाई उनकी उम्र, लिंग और आनुवंशिकता के आधार पर अलग-अलग होती है। स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बच्चों के विकास के लिए कुछ सामान्य दिशा-निर्देश दिए गए हैं। एक नवजात शिशु की औसत लंबाई 46-55 सेमी (18-22 इंच) होती है। एक साल की उम्र तक लंबाई 72-76 सेमी (28-30 इंच) तक बढ़ जाती है। दो साल की उम्र में यह 82-91 सेमी (32-36 इंच) तक हो सकती है। वहीं, पांच वर्ष की उम्र तक लंबाई 100-110 सेमी (39-43 इंच) होनी चाहिए। इसके कम होने पर बच्चा कुपोषित की श्रेणी में आता है।

एनआरसी में सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। घर-घर जाकर आंगनबाड़ी व आशा वर्कर लोगों को कुपोषण के प्रति जागरूक कर रही हैं। बच्चे के साथ अभिभावक को भी भोजन दिया जा रहा है ताकि उन्हें रुकने में कोई समस्या न हो। -डॉ. कुलदीप सिंह, सीएमओ

व्यावसायिक वाहनों में रिफ्लेक्टिव टेप जरूरी

मुरादाबाद, अमृत विचार : अपर परिवहन आयुक्त सड़क सुरक्षा उत्तर प्रदेश के निर्देश पर संभागीय परिवहन कार्यालय मुरादाबाद में जिले की ट्रक, बस, ऑटो और टैक्सी यूनियनों के पदाधिकारियों के साथ बैठक की गई। बैठक का उद्देश्य व्यावसायिक वाहनों में रिफ्लेक्टर व रियर मार्किंग टेप लगाने को लेकर वाहन स्वामियों को जागरूक किया गया।

संभागीय परिवहन अधिकारी राजेश सिंह ने कहा कि सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी वाहनों की फिटनेस, बीमा, परमिट आदि वैध पाए जाने पर ही सड़क पर संचालन हो सकेगा। व्यावसायिक वाहनों में मानक के अनुरूप रिफ्लेक्टिव व रियर मार्किंग टेप लगाना अनिवार्य है। ओवरलोडिंग और ओवरहाइटिंग पर सख्त रोक है। कोहरे में रात्रि के दौरान वाहन संचालन से बचने की अपील।गन्ना ढुलाई वाहनों में रिफ्लेक्टिव टेप एवं पीछे लाल कपड़ा लगाना अनिवार्य है और गलत तरीके से ओवरटेक न करने की हिदायत दी। परिवहन विभाग ने यूनियन प्रतिनिधियों से अपील की कि वे चालकों को इन नियमों के पालन हेतु जागरूक करें, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके।प्रवर्तन अधिकारी, सहायक परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन, प्रशासन) सहित राणा, अगवानपुर, स्योहारा और असमोली शुगर मिलों के प्रबंधक तथा विभिन्न यूनियनों के पदाधिकारी मौजूद रहे।

सुबह छाया कोहरा, धूप निकलने के बाद भी होता रहा ठंडक का अहसास

पारा गिरा, ठंडी हवा ने बढ़ाई ठिठुरन

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- अधिकतम 23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 10 डिग्री सेल्सियस रहा तापमान

अमृत विचार : गुरुवार को ठंड का असर बढ़ा हुआ महसूस हुआ। सुबह पूरे शहर में कोहरे की चादर छाई रही, जिससे लोगों को ठिठुरन का सामना करना पड़ा। सुबह के समय कोहरा इतना घना था कि धूप निकलने के बाद भी ठंडक का अहसास बना रहा। अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

पारा लगातार गिर रहा है, जिससे ठंड संवेदनशील लोगों के लिए कष्टदायक साबित हो रही है। खासकर सुबह और शाम के समय ठिठुरन अधिक महसूस की गई। कोहरे की वजह से शहर की विजिबिलिटी भी कम रही, जिससे आवागमन पर भी असर पड़ सकता है। मौसम विशेषज्ञों ने बताया कि आने वाले दिनों में तापमान इसी रेंज में बना रह सकता है और रात का पारा और नीचे जा सकता है। स्थानीय लोग भी ठंड से बचाव के लिए अलाव जलाते और गरम कपड़े पहनते नजर आए। कई इलाकों में स्कूलों में बच्चे भी मोटे स्वेटर, मफलर व टोपी में आए। इस बार के मौसम में धूप निकलने के बाद भी ठंड की तीव्रता बनी हुई है, जिससे शहरवासी मौसम के बदलाव के प्रति सतर्क बने हुए हैं। यदि कोहरे का यह सिलसिला जारी रहा तो सुबह-शाम की सर्दी और बढ़ सकती है। इस बीच चिकित्सक भी लोगों को सलाह दे रहे हैं कि वे ठंड से बचाव करें, खासकर बुजुर्ग और बच्चों को ज्यादा ध्यान दिया जाए क्योंकि सर्दी-जुकाम, खांसी और जुकाम जैसी बीमारियां इस मौसम में तेजी से फैलती हैं। इस दौरान सर्दी से बचाव के लिए गर्म कपड़े पहनना और समय-समय पर गर्म पेय पदार्थ लेना जरूरी बहुत जरूरी है।

सुबह कोहरे में गुजरते वाहन सवार। • अमृत विचार

रोडवेज परिसर में रैन बसेरा अब तक अधूरा

मुरादाबाद, अमृत विचार : शीतलहर और गलन बढ़ने के बावजूद रोडवेज परिसर में पीतल नगरी डिपो पर प्रस्तावित रैन बसेरा अब तक तैयार नहीं हो सका है। इन दिनों शाम और रात में ठंडी हवा तेज होने पर बसों का इंतजार कर रहे यात्री ठिठुर रहे हैं। यात्रियों का कहना है कि रोडवेज परिसर में रैन बसेरा बनने से उन्हें ठंड, बारिश और रात की प्रतिकूल परिस्थितियों से राहत मिलती, लेकिन निर्माण कार्य लंबे समय से अधर में लटका हुआ है। कई बार शिकायत के बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है।ठंड बढ़ने के साथ ही बसों के लेट होने की समस्या भी बढ़ जाती है, ऐसे में परिसर में खड़े यात्रियों को गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग यात्री सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। यात्रियों ने मांग की है कि रैन बसेरे का जल्द निर्माण कर सभी सुविधाएं दी जाएं। जिससे शीतकाल में राहत मिल सके। रोडवेज प्रशासन का कहना है कि निर्माण से संबंधित तकनीकी औपचारिकताएं पूरी होते ही रैन बसेरा शुरू कर दिया जाएगा।

शहर में आज

- रेल मंडल की ओर से अंतर विभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट का दूसरा दिन रेलवे स्टेडियम में 11 :00 बजे
- लालबाग स्थित काली मंदिर में सायंकालीन आरती 7 :00 बजे

सिटी ब्रीफ

एसआईआर फार्म भरकर निभाएं अपनी जिम्मेदारी: राम गिरि

मुरादाबाद, अमृत विचार : मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया में सभी मतदाताओं से शामिल होकर अपनी जिम्मेदारी समझते हुए फार्म भरकर जमा करें। यह अपील प्राचीन सिद्धपीठ श्री काली माता जी मंदिर लालबाग के महंत राम गिरि महाराज ने लोगों से की है। उन्होंने कहा कि जिले की जनता जिला प्रशासन को सहयोग करते हुए सभी पात्र व्यक्ति अपना एसआईआर फॉर्म भरकर बीएलओ के पास जरूर जमा कर दें।

डीपीआरओ की बैठक में नहीं पहुंचे कई सचिव, नोटिस जारी

मुरादाबाद, अमृत विचार : ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों की निधि से संबंधित गबन और अनियमितताओं और ग्राम पंचायत में विकास योजनाओं को लेकर जिला पंचायत राज अधिकारी (डीपीआरओ) द्वारा बुलाई गई बैठक में कई पंचायत सचिव अनुपस्थित रहे। संबंधित सचिवों को नोटिस जारी कर दिया है। जिलाधिकारी ने विभागीय समीक्षा के दौरान पंचायत निधि से जुड़े मामलों में आई ऑडिट आपत्तियों को जल्द निस्तारित करने के निर्देश दिए थे। गुरुवार को डीपीआरओ आलोक कुमार ने ऑडिट में आपत्तियों वाली ग्राम पंचायतों के सचिवों के साथ बैठक कर अनियमितताओं को दूर करने को कहा था। हालांकि, निर्धारित समय पर कई सचिव बैठक में शामिल नहीं हुए। जिनमें ग्राम विकास अधिकारी लखपत सिंह, विनय आशीष, जरीफ अहमद और नीरज कुमार ग्राम पंचायत अधिकारी को डीपीआरओ आलोक कुमार ने अनुपस्थित होने पर उनके खिलाफ कार्रवाई करते हुए नोटिस जारी कर दिया है।

एक पंडाल दो रस्में, हिंदू विवाह और निकाह भी हुआ

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत बुद्धि विहार में भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ, एक दूसरे के हुए 820 जोड़े

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह प्रोत्साहन योजना के तहत गुरुवार को महानगर के बुद्धि विहार स्थित ग्राउंड पर बने पंडाल भव्य तरीके से रीति रिवाज से 820 जोड़े एक दूसरे के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। पंडाल में हिंदू जोड़ों ने हवन की वेदी पर सात फेरे लेकर जीवनभर साथ निभाने की शपथ ली, जबकि मुस्लिम समुदाय के जोड़ों ने निकाह कर एक दूसरे का साथ कबूल किया। 820 जोड़ों का विवाह की पुष्टि लखनऊ निदेशालय से भी कर दी गई। इस कार्यक्रम में जिलाधिकारी अनुज सिंह, सीडीओ मृणाली अविनाश जोशी और एसपी सिटी रणविजय सिंह ने नवविवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया।

प्रभारी जिला समाज कल्याण अधिकारी पंखुरी जैन ने बताया कि सुबह से ही दंपत्तियों का बायोमेट्रिक सत्यापन कर उपस्थित दर्ज की गई, जिसके बाद ही उन्हें समारोह में शामिल कराया गया। जिनका फेस मैच नहीं हुआ, उनकी उंगलियों के माध्यम से बायोमेट्रिक किया गया। शुरुआत में सिस्टम की गति धीमी रहने से कुछ परेशानी हुई, लेकिन प्रक्रिया सुचारू रूप से पूरी की गई।सुबह समारोह स्थल पर जिलाधिकारी, सीडीओ और एसपी सिटी ने व्यवस्था का निरीक्षण किया। हिंदू जोड़ों को विधि-विधान से हवन वेदी पर विवाह संपन्न कराया गया जबकि काजी साहब ने मुस्लिम जोड़ों का निकाह पढ़ाया। एमएलसी गोपाल अंजान भी समारोह में पहुंचे और अधिकारियों संग नवदंपत्तियों को आशीर्वाद दिया। जिला समाज कल्याण अधिकारी पंखुरी जैन ने बताया कि बायोमेट्रिक व्यवस्था चलते ही कुछ फर्जी जोड़े लाइनों से गायब हो गए, जो अपने सत्यापन में सफलता की उम्मीद नहीं कर रहे थे। समारोह में सुरक्षा, व्यवस्था और अनुशासन को लेकर सभी विभाग सक्रिय रहे।सामूहिक विवाह कार्यक्रम शांतिपूर्वक और गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

- बायोमेट्रिक सत्यापन कर दंपतियों को समारोह में शामिल किया

बुद्धि विहार स्थित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह में शामिल वर वधू।

वर वधु को उपहार देते जिलाधिकारी अनुज सिंह व एमएलसी गोपाल अंजान व अन्य अधिकारी।

सामूहिक विवाह में भोजन करते वर वधु के परिजन। • अमृत विचार

भगवान परशुराम और गंगा मैया की महाआरती की

मुरादाबाद, अमृत विचार : राष्ट्रीय पुजारी परिषद द्वारा मार्गशीर्ष पूर्णिमा के अवसर पर अटल घाट के पास प्राचीन शिव राम गंगा मंदिर के घाट पर गुरुवार को भगवान परशुराम और गंगा मैय्या की महाआरती की गई। परिषद के संस्थापक श्याम कृष्ण रस्तोगी ने कहा कि मां गंगा और उसकी सहायक नदियों के प्रति हिंदू समाज की गहरी आस्था और श्रद्धा है लेकिन सरकार और समाज के कुछ लोग इसके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। गंगा और उसकी सहायक नदियों के सफाई के नाम पर करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है पर सफाई कहां हो रही है दिखाई नहीं देता। नदियों में सैकड़ो गंदे नाले मिल रहे हैं। रामगंगा में जानवरों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाए और जो गंदे नाले मिल रहे हैं उन्हें तुरंत बंद किया जाए। संजय नंद गिरि, आचार्य कामेश्वर मिश्रा, पंडित तेज नारायण मिश्रा, पुजारी महेंद्र, पंडित विनोद शर्मा, पुजारी भारत, श्याम शुक्ला, नितिन दुबे, संतोष गुप्ता, सतीश अग्रवाल, अंकुर अग्रवाल, विनोद रस्तोगी, शम्मी रस्तोगी, शलभ गुप्ता, बब्बू भटनागर, कैलाश भटनागर, आराधना अग्रवाल, वंदना शर्मा, सुमन रोहिल्ला, गीता पांडे, शकुंतला शर्मा आदि मौजूद रहे।

कफ सिरप का अच्छा विकल्प है धनिया और सोंठ का पानी

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- बीमारी में चिकित्सक घरेलू नुस्खे अपनाने की दे रहे सलाह

अमृत विचार : बीते दिनों एक बच्चे की कोडीन युक्त कफ सिरप से मौत के बाद लोगों में इस सिरप को लेकर डर बढ़ गया है। चिकित्सकों ने भी अब कोडीन युक्त कफ सिरप लेने की सलाह बेहद कम देना शुरू कर दिया है। इस वजह से लोगों ने आयुर्वेदिक और घरेलू नुस्खों को अपनाना शुरू कर दिया है। खासकर सर्दी-खांसी-जुकाम के मौसम में लोग जड़ी-बूटियों व प्राकृतिक उपचार को प्राथमिकता दे रहे हैं ताकि स्वास्थ्य सुरक्षित रहे और दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. अमरदीप ने बताया कि सर्दी, जुकाम और खांसी की समस्या में सितोपलादि चूर्ण बेहद प्रभावी रहता है। सूखी खांसी में इसे घी और शहद के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने पर लाभ होता है। इसके अलावा ठंड से बचाव और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुर्वेद ने सोंठ और धनिया के पानी को बहुत लाभदायक माना है। घर पर आधा चम्मच सोंठ और एक चम्मच धनिया पानी में उबालकर पीने से पाचन ठीक रहता है और इम्युनिटी मजबूत होती है। इससे शरीर के अंदर संक्रमण से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और बीमारियां जल्दी हमला नहीं कर पातीं। बताया कि सर्दी-जुकाम के दौरान सावधानी बरतना बहुत जरूरी है। छोटी सी लापरवाही से समस्या विकराल हो सकती है। इसलिए कोडीन जैसे केमिकल युक्त उत्पादों की जगह घरेलू नुस्खे अपनाकर स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना बेहतर माना जा रहा है। उन्होंने कहा कि सर्दी-खांसी में बिना डॉक्टर की सलाह के किसी दवा का सेवन न करें। प्राकृतिक, आयुर्वेदिक दवाएं और घरेलू उपाय अपनाएं, जो प्रभावी होने के साथ शरीर को नुकसान भी नहीं पहुंचाते। सर्दी-खांसी के अलावा अच्छी नींद, पौष्टिक आहार और साफ-सफाई का भी पूरा ध्यान रखना जरूरी है। इस तरह जागरूकता और सही उपचार के माध्यम से सर्दी और खांसी जैसे सामान्य रोगों से बचाव संभव है।

एसआईआर को लेकर दबाव में बीएलओ : अजय राय

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय गुरुवार को मुरादाबाद पहुंचे। वह प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका आभा सोलोमन के घर पर पहुंचे, जिन्हें हाल ही में बीएलओ ड्यूटी के दौरान ब्रेन हेमरेज हो गया था। आभा सोलोमन एक निजी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती हैं। अजय राय ने उनके परिवार से मुलाकात की और इस दुख की घड़ी में कांग्रेस पार्टी की ओर से पूरे समर्थन का भरोसा दिलाया।

उन्होंने कहा कि एसआईआर को लेकर बीएलओ पर दबाव चिंता का विषय है। इस मामले में चुनाव आयोग सरकार की कठपुतली बन गया है। उन्होंने मांग की कि बीएलओ पर अत्यधिक दबाव न डाला जाए और उन्हें जो भी सरकारी सुविधाएं मिलनी चाहिए वे निर्बाध रूप से दी जाएं। उन्होंने एसआईआर के समय में बढ़ोतरी की भी मांग की। इस मौके पर पूर्व विधायक हाजी इकराम कुरैशी, कांग्रेस के पूर्व महानगर अध्यक्ष असलम खुर्शीद, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष विनोद गुंबर, कांग्रेस महानगर अध्यक्ष जुनैद इकराम, देशराज शर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष असलम खुर्शीद, आनंद मोहन गुप्ता, अशरफ अली, शमीम चौधरी, संजीव सिंघल, याकूब कुरैशी, अनवर अली, अली हसनैन, विवेक आदि मौजूद रहे।

अस्पताल में भर्ती बीएलओ का हाल लेते अजय राय। • अमृत विचार

- कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने ब्रेन हेमरेज की शिकार अध्यापिका का हाल जाना

भाजपा सरकार पर साधा निशाना

पत्रकारों से बातचीत में कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि कफ सिरप के मामले में पूरा माफिया तंत्र सक्रिय है, जो मुख्यमंत्री की कैबिनेट के संरक्षण में काम कर रहा है। सरकार को इस मुद्दे पर जनता को तत्काल जवाब देना चाहिए। उन्होंने आरोप मढ़ा कि सरकार विपक्ष के नेताओं के साथ अनुचित व्यवहार कर रही है। राहुल गांधी को विदेशी मेहमानों से मिलने तक नहीं दिया जाता। जिला पंचायत चुनाव पर कहा कि कहा कि कांग्रेस पार्टी अलग रणनीति के साथ लड़ेगी। हर एक वार्ड में कांग्रेस का प्रत्याशी मैदान में होगा, ताकि स्थानीय मुद्दों को बेहतर तरीके से उठाया जा सके और जनता की सरकार तक आवाज पहुंच सके।

भोजपुर के बाद अब पाकबड़ा में ई-कचरा माफिया सक्रिय

संवाददाता, पाकबड़ा

अमृत विचार : पाकबड़ा में भी ई-कचरा जलाने एवं गलाने का काम शुरू हो गया है। आसपास रह रहे लोगों को भट्ठियों से निकल रहे धुएं एवं पास में भरे पानी से दिक्कत हो रही है। लेकिन कचरे को जलाने का काम लगातार जोरों पर चल रहा है। इस ओर किसी का भी कोई ध्यान नहीं है। आसपास में रह रहे लोगों का सांस लेना भी दुश्वार हो रहा है।

थाना क्षेत्र के डींगरपुर रोड हाशमपुर चौराहे से आगे साइड में बसी नई कॉलोनी में ए कचरा जलाने एवं गलाने का काम बड़े स्तर पर चल रहा है। लगातार बड़ी-बड़ी गाड़ियों से ई कचरा वहां पर लाया जाता है। उसे जलाया जाता है। भट्ठियों से निकल रहे जहरीले धुएँ एवं जहरीले पानी से आसपास के लोगों को भारी दिक्कत हो रही है। लेकिन कचरा माफिया लगातार अपना काम जोरों पर चला रहे हैं।

लोगों को सांस लेने में भी दिक्कत हो रही है। आसपास के रह रहे लोगों ने बताया कि यह काफी समय से यहां पर बड़े स्तर पर लगातार दिनो रात काम चलाया जाता है। जिससे सभी को दिक्कत होती है। पास में ही नालियों में एवं प्लाटो में इसका गंदा पानी भर जाता है। जिससे बीमारी फैलने का खतरा लगातार बना रहता है। लेकिन जिम्मेदार अभी भी मौन हैं। कोई भी कार्यवाही करने को तैयार नहीं है।

- भट्ठियों से निकल रहे धुएं एवं पानी से लोगों को हो रही दिक्कत

रात में ई-कचरा जलने से बढ़ा प्रदूषण

मुरादाबाद, अमृत विचार : थाना भोजपुर क्षेत्र में इन दिनों ई-कचरा माफिया ने लोगों का जीना दूभर कर दिया है। वे धड़ल्ले से ई-कचरा जला रहे हैं, जिससेजहरीला धुआं फैलने से लोगों के स्वास्थ्य को गंभीर खतरा है। भोजपुर रेलवे स्टेशन के पास पड़े खाली में जंगल में रात को ई कचरा जलाया जाता है। रेलवे स्टेशन के पास रहने वाले उवैद ने बताया कि हवा में घुल रहा यह जहर अब रोजमर्रा की बात हो गई है। पुराने तारों और इलेक्ट्रॉनिक पार्ट्स को जलाकर कॉपर, एल्यूमिनियम सहित अन्य कीमती धातुएं निकालते हैं और उन्हें ऊंचे दामों पर बेच देते हैं। शिकायत के बावजूद भी पुलिस प्रशासन और विभागीय टीमें मौके पर नहीं पहुंच रही हैं। क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड डीके गुप्ता ने बताया कि वायरल वीडियो में ई कचरा जलता तो दिख रहा है। लेकिन किस स्थान है यह स्पष्ट नहीं हालांकि मैं विभागीय ट्रेनिंग पर हूं लेकिन भोजपुर के संबंधित अधिकारी को तत्काल जानकारी कर ई कचरा जलाने वाले पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

बॉयज कबड्डी प्रतियोगिता में टीम अग्नि 40-19 से जीती

स्पोर्ट्स एंड कल्चरल इवेंट में खेलतीं प्रतिभागी। • अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के कॉलेज ऑफ नर्सिंग की स्पोर्ट्स एंड कल्चरल इवेंट ब्रह्मोत्सव में बैडमिंटन, कबड्डी, बास्केटबाल की प्रतियोगिताएं गुरुवार को हुईं। ब्वायज़ की कबड्डी प्रतियोगिता में टीम अग्नि 40-19 से विजेता रही, जबकि टीम नीर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

गर्ल्स की कबड्डी में 38-29 से नीर टीम अव्वल रही और वायु टीम द्वितीय स्थान पर रही। बैडमिंटन सिंगल्स ब्वायज़ में टीम अग्नि के रिभव ने 21-13 से टीम वायु के रितिक को मात दी, जबकि गर्ल्स सिंगल्स में टीम वायु की कशिश यादव ने आकाश टीम की खुशी को 13-11 से हराया। इससे पूर्व बास्केटबाल के ब्वायज़ मुकाबले में नीर टीम ने वायु टीम को 13-02 से हराया। इस मौके पर नर्सिंग की डीन प्रो. एसपी सुभाषिनी, प्राचार्या डॉ. जेसलीन एम., तीर्थंकर पार्श्वनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्रिंसिपल डॉ. श्योली सेन, प्रो. रामनिवास, डॉ. रामकुमार गर्ग, डॉ. योगेश कुमार, डॉ. सपना सिंह के अलावा स्पोर्ट्स कोर्डिनेटर्स सतीश प्रजापति, पूजा झा, रितिक रकवाल, विनय लाल आदि मौजूद रहे।

जाम लगने से लोगों की बढ़ी परेशानी

मुरादाबाद, अमृत विचार : महानगर की प्रमुख सड़कों पर बढ़ता जाम लोगों के लिए संकट बन गया है। खासकर पुराना बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, बुध बाजार, चौमुखापुल और मंडी चौक पर ट्रैफिक जाम के कारण राहगीरों और आम जनता को दिन भर कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

शहर में अतिक्रमण और अव्यवस्थित पार्किंग के चलते कई मुख्य मार्गों पर घंटों जाम रहता है। इससे स्कूली बच्चे, दुकानदार और रोजाना आने-जाने वाले लोग भी काफी परेशान हो रहे हैं। पुलिस जाम हटाने में लगातार प्रयास करती रही है, लेकिन समस्या बनी हुई है। विशेषकर बुध बाजार और चौमुखापुल पर जाम अक्सर घंटों तक रहता है, जिससे क्षेत्र की भीड़ और खरीदारों को भीषण परेशानी होती है। रेलवे स्टेशन के आसपास खड़े वाहनों के कारण भी ट्रैफिक प्रभावित हो रहा है। गुरुवार को भी स्थानीय प्रशासन द्वारा अस्थायी पार्किंग बनाने के बावजूद समस्या कम नहीं हो पाई है। इसके समाधान के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है।

जप, तप, भजन और सुमिरन न होने से आती है विपत्ति

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- आचार्य धीरशांत अर्द्धमौनी ने किया श्रीरामचरितमानस एवं सत्संग

अमृत विचार : श्रीराम चरित मानस पाठ एवं श्री गीता भागवत सत्संग का आयोजन बैंक कालोनी व रामपुर रोड पर किया गया। कथा व्यास धीरशान्त अर्द्धमौनी ने बताया कि हनुमान जी महाराज ने कहा कि हमें सबसे पहले अपना हरि भजन, नामजप एवं ठाकुर सेवा में निपुण हो जाना चाहिए। नहीं तो संकटों में फस जाएंगे।

उन्होंने कहा कि जीवन में हमें क्या करना है यह रामायण सिखाती है। जीवन में हमें क्या नहीं करना है, यह महाभारत सिखाती है और जीवन को हमें कैसे जीना है। यह श्रीमद्भागवत गीता सिखाती है। जीवन में परेशानी चाहे कितनी भी बड़ी हो। चिंता करने से और भी बड़ी हो जाती है। कथा व्यास ने कहा कि जैसे बीज खेत में बोये बिना फल नहीं दे सकता, उसी प्रकार प्रारब्ध भी पुरुषार्थ के बिना नहीं सिद्ध होता, पुरुषार्थ खेत है और दैव बीज है। खेत और बीज के संयोग से ही अनाज पैदा होता है। राम को अहंकार का ज्ञान था ओर रावण को ज्ञान का अहंकार था। जीवन में ऐसे कई लोग होते हैं, जिन्हें आप समय के साथ भूल जाते हैं। लेकिन ऐसे कुछ ही लोग होते हैं, जिनके साथ आप समय भूल जाते हैं, उनको कभी न छोड़ें। जीवन में केवल दो ही वास्तविक धन है- समय ओर सांसे ओर दोनों ही सीमित हैं। जो इंसान दूसरे की पीड़ा और दुःख को समझता है वही सज्जन पुरुष है और जो दूसरे की पीड़ा न समझ सके ऐसे इंसान होने से क्या फायदा। कथा में अजीत पाल, सीमा पाल, मनोज पाल, सुनील अग्रवाल, सोनी पाल, हरविंदर सिंह, आदित्य पाल, कुशांक पाल, कृष्ण गुप्ता, सौरभ अग्रवाल, सोनू दक्ष, निखिल प्रभु आदि मौजूद रहे।

आचार्य धीरशांत अर्द्धमौनी।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार,5 दिसंबर 2025

लोक अदालत में आपसी सहमति से होगा समझौता

कांठ, अमृत विचार : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मुरादाबाद की ओर से 13 दिसंबर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन कांठ तहसील कार्यालय में किया जाएगा।

लोक अदालत में तहसील न्यायालय से लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय स्तर तक के किसी भी न्यायालय अथवा विभागीय स्तर के मामलों को सुलह समझौते के आधार पर निस्तारित करने हेतु आवेदन पत्र देकर अंतिम आदेश व निर्णय प्राप्त कर सदैव के लिए लंबित मामलों से छुटकारा पाने का एक स्वर्णिम अवसर है। इसमें शमनिय वाद, स्टाम्प वाद,राजस्व वाद,भूमि अधिग्रहण वाद,बैंक ऋण वसूली वाद,उपभोक्ता फोरम वाद,वैवाहिक/पारिवारिक वाद,टैक्स संबंधित वाद,बिजली चोरी वाद अन्य मामलों से संबंधित वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत में सुना जाएगा। जिससे लोगों को न्याय मिलने में आसानी होगी। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रदीप कुमार एडवोकेट ने बताया कि पक्ष, विपक्ष दोनों समय से पहुंच कर राष्ट्रीय लोक अदालत का लाभ उठाएं।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने बीएलओ की पत्नी को नौकरी दिलाने को कहा

मृतक की बेटियों की परवरिश के लिए सरकार से एक करोड़ देने की अपील की

संवाददाता, भोजपुर

अमृत, विचार : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि मंडल ने गुरुवार को प्रदेशाध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में आत्महत्या करने वाले बीएलओ सर्वेश सिंह के घर जाकर परिजनों से मुलाकात की। उन्होंने सरकार से मृतक की पत्नी को अध्यापक की नौकरी एवं बेटियों की परवरिश के लिए एक करोड़ देने की मांग की है।

ठाकुरद्वारा विधानसभा क्षेत्र के गांव जाहिदपुर सीकमपुर के बीएलओ सर्वेश सिंह ने काम के दबाव के चलते तीन पन्नों का सुसाइड नोट लिखकर अपना रोते हुए बीडीओ वायरल कर रविवार को पैतृक गांव बहेड़ी ब्रहमान में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। प्रशासन की ओर से उप जिला मजिस्ट्रेट ठाकुरद्वारा ने मृतक की पत्नी को दो लाख का चेक दिया था। गुरुवार को कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष अजय राय ने गांव बहेड़ी ब्रहमान जाकर मृत बीएलओ के परिजनों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने मृतक की पत्नी बबली, मां सोमवती और बहन राजबाला देवी को सांत्वना दी। पीड़ित परिवार ने उन्हें बताया की घटना के दिन ज्वाइंट मजिस्ट्रेट सदर राम मोहन मीणा ने पत्नी बबली को योग्यतानुसार आवेदन करने के दस दिन में सरकारी नौकरी देने का पत्र जारी किया था।

बीएलओ सर्वेश सिंह की मां सोमवती, बहन राजबती, पत्नी बबली को ढांढस बंधाते अजय राय।

बबली का कहना है कि जिला मजिस्ट्रेट फोर्थ क्लास की नौकरी देने की बात कह रहे हैं। अजय राय ने कहा की चुनाव आयोग से मांग करेंगे कि मृतक की पत्नी जो

- बीएलओ सर्वेश सिंह ने रविवार को एसआईआर को लेकर आत्महत्या की थी

एमए बीएड है को अध्यापक पद पर नौकरी देने, चारों बेटियों को उच्चस्तरीय स्कूल में शिक्षा दिलाने और एक करोड़ रुपए देने के निर्देश दे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार कर्मचारियों का उत्पीड़न कर रही है।

भाजपा सरकार में सरकारी नौकरी करना गुनाह हो गया है। सरकार की नीतियों से तंग आकर बीएलओ आत्महत्याएं कर रहे हैं और सरकार मूकदर्शक बनी तमाशबीन बनी हुई है। प्रतिनिधि मंडल में जिलाध्यक्ष विनोद गुंबर, महानगर अध्यक्ष वंटी कुरैशी, पूर्व जिलाध्यक्ष अजय सारस्वत सोनी व असद मौलाई,शमीम चौधरी, फईम चौधरी आदि मौजूद थे।

संदिग्ध हालात में महिला की मौत

मूंढापाण्डे, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव में विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई।

मूंढापाण्डे के गांव गोविंदपुर कला निवासी मुकेश पुत्र रोहन के साथ रामपुर के गांव मढ़ैया लौकी निवासी सोनम की 12 वर्ष पूर्व में शादी हुई थी। मृतका के ममेरे भाई सोनू यादव के मुताबिक वह मूंढापाण्डे के गांव नाजरपुर से भैंस खरीदने के लिए आए थे। भैंस को घर ले जाने के लिए उन्होंने साथ के व्यक्ति को अपनी बहन के घर से छोटा हाथी लाने के लिए गोविंदपुर कला भेजा। उसने फोन कर जानकारी दी आपकी बहन की मौत हो गई है। सोनू परिजनों एवं पुलिस को लेकर अपनी बहन के गांव पहुंच गया। परिजनों ने आरोप है सोनम की गला दबाकर हत्या की है। घटनास्थल का सीओ हाइवे ने जायजा लिया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतका के परिजन कार्यवाही की मांग पर अड़े है। हालांकि पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है। थानाध्यक्ष, मोहित चौधरी ने बताया कि महिला की मानसिक हालत ठीक नहीं थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद जांच की जाएगी।

नहरों में पानी नहीं, किसान सिंचाई के लिए परेशान

पानी नहीं आने से सूखी पड़ी नहर। ● अमृत विचार

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार: क्षेत्र की नहरों में पानी न होने से किसानों में नाराजगी है। किसानों का कहना है कि नहरों में पानी न होने से गेहूं की बुवाई के लिए पलेवा एवं गन्ने की सिंचाई के लिए देरी हो रही है। 15 नवंबर तक नहरों में पानी आ जाना चाहिए था। जिससे किसान समय से पलेवा एवं गन्ने की सिंचाई कर सके।

कांठ तहसील क्षेत्र में छोटी बड़ी कई नहरे हैं जिनसे किसान अपने खेतों की सिंचाई करते हैं। नियम अनुसार 15 नवंबर तक नहरों नहरों की सफाई का कार्य पूरा होकर अब तक पानी की आपूर्ति शुरू हो जानी चाहिए थी। लेकिन बृहस्पतिवार की शाम तक भी नहरों में पानी नहीं आने से क्षेत्र के किसानों में भारी रोष व्याप्त है। भारतीय किसान यूनियन ने भी कई बार नहर विभाग के खिलाफ आंदोलन करने की चेतावनी दी, लेकिन वह भी हवा हवाई साबित हुई। नहरों में पानी न आने से गेहूं की बुवाई के लिए किसान पलेवा करने के लिए लेट हो रहा है। क्षेत्र के किसानों का कहना है कि इस समय गन्ने की सिंचाई करना अति आवश्यक है, लेकिन नहर में पानी न होने से गन्ना सूख रहा है। समय से नहरों में पानी न आने से किसान नाराज है। पिछले दिनों हुई सिंचाई विभाग की बैठक में 30 नवंबर तक नहर में पानी छोड़ने का वादा किया गया था, लेकिन दिसंबर के पहले सप्ताह तक भी नहर में पानी नहीं आने से किसान परेशान है।

गेहूं की उन्नत बुवाई के बारे में बताया

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

अमृत विचार : कृषि विभाग द्वारा ब्लॉक परिसर में ब्लॉक स्तरीय कृषि गोष्ठी आयोजित की गई । गुरुवार को आयोजित गोष्ठी का शुभारंभ विषय वस्तु विशेषज्ञ रामगोपाल सिंह ने किया ।

विज्ञान गोष्ठी में कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि उद्यान विभाग वैज्ञानिक डॉ शिव शंकर वर्मा, सेवानिवृत्त विशेषज्ञ महाराज सिंह यादव, मुनेश कुमार आदि वैज्ञानिकों और कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को गेहूं की बुवाई के आधुनिक तरीकों, उचित खाद एवं बीज की मात्रा तथा फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों की रोकथाम के बारे में जानकारी दी ।कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि गेहूं के उन्नत किस्मों का चयन और बीज का शोधन अत्यंत आवश्यक है, जिससे फसल रोगों से सुरक्षित रहती है और उत्पादन में वृद्धि होती है ।समय पर सिंचाई, संतुलित उर्वरक प्रबंधन तथा खेत की नमी एवं स्प्रिंकलर सिंचाई के लाभों पर भी प्रकाश डाला, जिससे पानी की बचत के साथ बेहतर उत्पादन संभव है। गोष्ठी के अंत में किसानों की समस्याएं सुनी गईं और विशेषज्ञों ने खेत संबंधी चुनौतियों का समाधान देने के साथ किसानों को प्रोत्साहित किया कि वे उन्नत कृषि पद्धतियों को अपनाकर अधिक लाभ अर्जित करें।

ठाकुरद्वारा में कृषि विज्ञान गोष्ठी में किसानों को संबोधित करते वैज्ञानिक।

- कृषि विज्ञान गोष्ठी में रोग प्रबंधन की भी जानकारी दी

बनाए रखने के टिप्स भी दिए।

कृषि विशेषज्ञों ने गेहूं में लगने वाली प्रमुख बीमारियों करनाल बंट, झुलसा रोग, दीमक व कीट प्रकोप की पहचान और उनके प्रभावी उपचार के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि बीजों को बुवाई से पहले ट्राइकोडर्मा या अन्य अनुशंसित दवाओं से उपचारित करना अनिवार्य है। एक बीघा गेहूं के लिए 35-40 किलोग्राम बीज तथा खाद के रूप में डीएपी, पोटाश व यूरिया की संतुलित मात्रा का उपयोग उत्पादन को दोगुना कर सकता है। वैज्ञानिकों ने ड्रिप

सीएमओ ने सीएचसी का किया निरीक्षण

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार: मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कांठ का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान गैर हाजिर एक चिकित्सक एवं एक लैब टेक्नीशियन का जवाब तलब करने के निर्देश दिये। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर कुलदीप सिंह, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर संजीव बेलवाल अचानक 3 बजे के करीब अचानक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कांठ पहुंचे। उन्होंने चिकित्सा अधीक्षक के कक्ष में बैठकर अस्पताल के चिकित्सकों एवं कर्मचारियों का उपस्थिति रजिस्टर चेक किया रजिस्टर चैक करने के बाद सभी चिकित्सकों एवं कर्मचारियों को मौके पर बुलाकर अधिकारियों ने चैक किया। जिसमें एक लैब टेक्नीशियन एवं एक चिकित्सक मुख्य चिकित्सा अधिकारी को अनुपस्थित मिले। उनके

- गैर हाजिर चिकित्सक एवं लैब टेक्नीशियन से मांगा जवाब

बारे में जब चिकित्सा अधीक्षक से पूंछा कि इन्हें बुलाओ तो वह नहीं मिले। इसके बाद अनुपस्थित चिकित्सक एवं लैव टेक्नीशियन का जवाब तलब करने के निर्देश चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर राजीव सिंह को दिए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने हिदायत दी कि अस्पताल में मरीजों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए और 10:00 से 4:00 तक सभी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कर्मी अपनी ड्यूटी पर मौजूद रहे। उन्होंने एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड टेक्निशियन प्रदीप कुमार को मौखिक रूप से निर्देश दिए कि वह तीन दिन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिलारी और तीन दिन मुरादाबाद के अस्पताल में ड्यूटी करेंगे। इस अवसर सभी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

रेलवे क्रॉसिंग पर जाम से लोग परेशान

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार : नगर में कांठ-अमरोहा मार्ग पर रेलवे फाटक बार-बार बंद होने के कारण मुरादाबाद-हरिद्वार मार्ग पर भीषण जाम लग गया। जाम के कारण मार्ग के दोनों और लगभग 1 किलोमीटर लंबी वाहनों की कतार लग गईं। फाटक खुलने के बाद भी लंबे समय तक जाम की स्थिति बनी रही।

कांठ अमरोहा मार्ग रेलवे फाटक 433-बी, पर छोटे बड़े वाहनों का आवागमन ज्यादा हो रहा है। फाटक बार-बार बंद होने से कई किलोमीटर तक लंबा जाम लग जाता है। अधिक जाम लगने के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जाम की वजह से एंबुलेंस एवं अन्य वाहनों को भी रास्ता नहीं मिल पाता है। लंबे अरसे से इस समस्या का कोई भी समाधान नहीं होने के कारण लोगों में प्रशासन व रेलवे विभाग के खिलाफ रोष व्याप्त

कांठ अमरोहा मार्ग पर रेलवे फाटक बंद होने से लगा जाम। ● अमृत विचार

- कांठ-अमरोहा मार्ग पर रेलवे फाटक बार-बार बंद होने से मुसीबत

है। कई सामाजिक संगठनों ने रेलवे फाटक पर ओवरब्रिज बनवाने की मांग समय-समय पर उठाई, लेकिन अभी तक कोई भी सकारात्मक कार्यवाई नहीं हुई है। आसपास के करीब 35 गांव के ग्रामीणों को कांठ तहसील आना-जाना होता है। बरसों से ग्रामीण फाटक पर भीषण जाम का घूंट पी रहे हैं। इस फाटक पर सबसे ज्यादा आवाजाही होती है, लेकिन फाटक थोड़े समय ही खुलता है। मुख्य रेल मार्ग होने से दिन भर में रेलवे लाइन से करीब 100 से ज्यादा ट्रेनें गुजरती हैं। यदा कदा 2 से 3 10 लगातार गुजरने पर तो जान की स्थिति अत्यंत भयावह हो जाती है। रेल यातायात ज्यादा होने के कारण फाटक अधिकतर समय बंद ही रहता है। इस कारण राहगीरों को घंटो तक फाटक खुलने का इंतजार करना पड़ता है। कुछ लोग जल्दबाजी के कारण गलत तरीके से फाटक पार करने की कोशिश करते हैं। जिसकी वजह से राहगीर दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं।

यज्ञ में डाली आहुति

छजलैट : ग्राम कुचावली में क्षेत्र की सुख, शांति और समृद्धि के लिए पंचकुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। ग्राम कुचावली में बृहस्पतिवार को पूर्व की भांति क्षेत्र में देश की सुख शांति एवं विकास के लिए ग्राम प्रधान शशि वाला एवं चौधरी ऋषिपाल सिंह के आवास पर पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया ।

अमृत विचार
एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मो.7906815587

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम Zaheer Alam से बदलकर Zaheer Islam S/o Mohammad Islam R/o Muslima College karula Moradabad रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना जाए।

सूचना

पहले मेरा नाम खान मौ. वारिस अशरफ अली था, अब बदलकर मौ. वारिस पुत्र अशरफ अली नि. ग्रा. गागन नगला पो. सैदनगर टांडा रामपुर रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जानें।

नाम परिवर्तन

मैंने अपने नाम की स्पेलिंग अंग्रेजी में Saeed Ahmad से बदलकर Saeed Ahamad R/O Masjid Fatma Karbala Moradabad रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना जाए।

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

डिप्टी रेंजर को धमकी देने वाला पुलिस की पकड़ से दूर

संवाददाता,कांठ

अमृत विचार: वन विभाग के डिप्टी रेंजर को जान से मारने की धमकी देने और रुपए की मांग कर सरकारी कार्य में बाधा डालने के आरोपियों की गिरफ्तारी नही हुई है। वन विभाग के अधिकारी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से शिकायत करेंगे। वन विभाग के डिप्टी रेंजर पुष्पेंद्र सिंह विगत एक सप्ताह पूर्व ऊमरी कलां में आम के हरे पेड़ काटने की शिकायत पर जांच करने पहुंचे थे। जांच में ऊमरी कलां के ही सलाउद्दीन उर्फ पिद्दी का नाम सामने आया था। सलाउद्दीन एवं एक महिला ने डिप्टी रेंजर को जान से मारने की धमकी दी थी और पैसे की मांग की थी। सरकारी कार्य में भी बाधा डाली और झूठे केस में फंसने की धमकी दी थी, जिसको गंभीरता से लेते हुए डिप्टी रेंजर ने थाना कांठ पुलिस को तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कराया था। पुलिस ने अभियोग पंजीकृत करने के बाद डिप्टी रेंजर को जान से करने की धमकी एवं झूठे केस में फंसाने की धमकी, सरकारी कार्य में बाधा डालने और रुपए मांगने के आरोपी महिला पुलिस को गिरफ्तार नहीं किया है। थाना प्रभारी निरीक्षक कांठ सुदेश पाल सिंह ने बताया कि वन विभाग के डिप्टी रेंजर की तहरीर पर आरोपियों के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कर लिया गया है लेकिन 7 साल से कम की धारा होने के कारण उसकी गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। फिर भी उसकी गिरफ्तारी के लिये दबिश दी जा रही है।

एसआईआर को लेकर किया जागरूक

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार : समाजवादी पार्टी ने गुरुवार को एसआईआर जागरूकता पंचायत का आयोजन किया ।वक्ताओं ने कहा कि एसआईआर जैसी प्रक्रियाएं आम नागरिकों के अधिकारों को मजबूत करती हैं और लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक पारदर्शी बनाती हैं। इसी कारण समाजवादी पार्टी ने इसे जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कई बार नागरिक जानकारी के अभाव में समय पर आवश्यक सुधार नहीं करा पाते, जिससे मतदान अधिकार प्रभावित होता है। विधायक कमाल अख्तर ने कहा कि समाजवादी पार्टी की राजनीति का मूल केंद्र जनता और उसकी समस्याएं हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी हमेशा से जनसरोकारों को प्राथमिकता देती आई है और एसआईआर जागरूकता कार्यक्रम इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते कांठ विधायक कमाल अख्तर। ● अमृत विचार

- एसआईआर जागरुकता पंचायतकी बैठक को कांठ विधायक ने किया संबोधित

है। कमाल अख्तर ने क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे एसआईआर में सक्रिय रूप से भाग लें और अपने परिवार व पड़ोस के लोगों को भी "समझें और समझाएँ" अभियान के तहत जागरूक करें।

संचालन कारी हसमत अली जी ने किया। जाहिद नेता जी, कलवा ठीकेदार, विधानसभा अध्यक्ष नाज़िम सैफी,अमानुल्लाह चौधरी हम्मू प्रधान, हाजी मोबिन, यूसुफ प्रधान, रहमत प्रधान, मेहबूब प्रधान, शकील प्रधान, नवाजिश प्रधान, शाकिर प्रधान, मास्टर जाहिद हुसैन, अहमदुल्ला प्रधान, जहांगीर प्रधान, जाहिद प्रधान, अतीक उर रहमान, चौधरी अफ़ाक़, मुनाजिर चौधरी, रिजवान चौधरी, बिट्टू चौधरी, शराफत प्रधान, डॉक्टर कल्लू, प्रधान हाजी अली हसन, हामिद मलिक, बून्दू नेताजी, डॉक्टर जुबैर आदि उपस्थित रहे।

नवोदय विद्यालय की चयन परीक्षा12 केंद्रों पर होगी

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

अमृत विचार : पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, कालेवाला (ठाकुरद्वारा) द्वारा जनपद में आयोजित होने वाली नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा के संबंध में सूचना जारी की गई है। विद्यालय प्रशासन ने सभी अभ्यर्थियों, अभिभावकों तथा स्थानीय जनता से अपील की है कि वे निर्धारित समय व केंद्रों पर परीक्षा की पूर्ण तैयारी के साथ उपस्थित हों।

नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा 13 दिसंबर को 12 केंद्रों पर होगी। परीक्षा का समय सुबह 11:30 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक रहेगा। अभ्यर्थी परीक्षा प्रारंभ होने से कम से एक घंटा पूर्व केंद्र पर पहुंचें, ताकि सत्यापन व अन्य औपचारिकताएं समय से पूरी की जा सकें। परीक्षा जनपद के विभिन्न केंद्रों केंद्र पर आयोजित की जाएगी जिसमें । किसान इंटर कॉलेज, जाईंपुर हरदोई,सनातन धर्म हिंदू इंटर कॉलेज, ठाकुरद्वारा, महर्षि दयानंद इंटर कॉलेज, कांठ,विद्याभूषण इंटर कॉलेज, सिरसाली हरदत्तपुर भगतपुर टांडा, त्रिवेणी इंटर कॉलेज, मुरादाबाद, पी.एच.पी. राजकीय इंटर कॉलेज, मुकेश पांडेय, मदन स्वरूप इंटर कॉलेज, हरिया खंड, कुंदरकी, जे.पी.एम. इंटर कॉलेज, कुंदरकी , रामजीलाल राय इंटर कॉलेज, बिलारी राजकुमार इंटर कॉलेज, बिलारी–पीएचपी राजकीय इंटर कॉलेज, नगल्या जट, बिलारी ,विद्यालय प्रशासन ने अभ्यर्थियों से आग्रह किया है कि वे अपना प्रवेश पत्र अनिवार्य रूप से साथ लाएं तथा परीक्षा से संबंधित पूरी जानकारी वेबसाइट पर भी देख सकते हैं। उक्त जानकारी जवाहर नवोदय विद्यालय कालेवाला के प्राचार्य संतोष गौड ने दी ।

पुलिस ने पकड़े तीन चोर, ई-रिक्शा और बैटरी बरामद

बिलारी, अमृत विचार: बिलारी पुलिस ने ई-रिक्शा बुक कर चोरी कर ले जाने वाले तीन चोरों को पकड़ लिया, साथ ही ई-रिक्शा ,बैटरी भी बरामद कर लिया है।

संभल के चंदौसी के गांव आसलपुर जारई निवासी विमल ने बुधवार को बिलारी कोतवाली में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया बिलारी कोतवाली क्षेत्र के बरौली रुस्तमपुर निवासी अजय उसके रिक्शे को किराए पर चलता था। 1 दिसंबर को 3 व्यक्ति ई-रिक्शा बुक करके ले गए । रास्ते में टॉयलेट के बहाने तीनों ने उसका ई-रिक्शा चोरी कर लिया। पुलिस ने गुरुवार को ई-रिक्शा चोरी करने वाले तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।उनकी निशानदेही पर ई-रिक्शा और बैटरी बरामद कर ली।

ठंड छुड़ा रही लोगों की कंपकंपी, धूप बेअसर

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार : दिन प्रतिदिन मौसम का पारा गिरने के साथ ही ठिठुरन भी बढ़ती जा रही है। जिससे जनजीवन प्रभावित हो रहा है।

दिन प्रतिदिन ठंड बढ़ने से निमोनिया, वायरल बुखार, खांसी, जुकाम आदि के मरीज भी सामने आ रहे हैं। हालांकि अभी दिन प्रतिदिन सूर्य के दर्शन हो रहे हैं, लेकिन बेअसर धूप लोगों को बड़ी राहत नहीं दे पा रही है। बृहस्पतिवार को भी पूरा दिन हल्की हवा चलती रही जिसके चलते धूप बेअसर दिखाई दी। शाम ढलते ही ठंड फिर से पूरे शवाब पर पहुंच गई। सुबह के समय ठंड से बचने के लिए लोग अलाव जलाकर तापते नजर आए, क्योंकि नगर पंचायत प्रशासन ने अभी तक अलाव जलाने की कोई भी व्यवस्था नहीं की है। बढ़ती ठंड को देखते हुए क्षेत्र के नागरिकों ने मुख्य जगहों पर अलाव जलाने की मांग की है।

- शाम होते ही अलाव के सहारे बैठे नजर आ रहे लोग

ठंड में हाथ सेंकते लोग।

भतीजी को बेचने पर बुआ,फूफा समेत पांच पर रिपोर्ट

बिलारी, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के निकटवर्ती गांव निवासी एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत कर कहा था कि उसकी बहन बहनोई परिवार के साथ हिमाचल प्रदेश के बद्दी में मजदूरी करते हैं। 5 महीने पूर्व उसकी बहन ने अपना मकान बनाने के लिए उसे बद्दी बुलाया था । वह अपनी पत्नी व नाबालिग बेटी के साथ बद्दी में जाकर उसकी बहन का मकान बनाने लगा। 29 अगस्त को उसकी बहन, बहनोई, भांजा बद्दी से अपने गांव के लिए निकले। उसकी नाबालिग बेटी को उसके गांव छोड़ने को कहकर अपने साथ ले गए । आरोप लगाया कि इसके बाद सभी ने उसकी 15 वर्षीय बेटी को किसी अज्ञात युवक को बेच दिया। काफी तलाश के बाद भी उसकी बेटी का पता नहीं चल सका है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

अमृत विचार : संघटक राजकीय महाविद्यालय द्वारा नगर के शिव सेट जोसेफ इंटर कॉलेज में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चीफ प्रोफेसर डॉ. रविंद्र कुमार मिश्रा व इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य रजनीश प्रताप सिंह व प्रबंधक द्वारा संयुक्त रूप से माता सरस्वती देवी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया गया ।

कार्यक्रम में विद्यालय के 70 छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। प्रथम पुरस्कार कुमारी विधि, कुमारी खुशी चौहान,कुमारी ईसीका, को संयुक्त रूप से दिया गया । द्वितीय पुरस्कार श्रद्धा शर्मा, रितु चौधरी श्रद्धा सिंह व शैली को दिया । तृतीय पुरस्कार हर्षिता सौरभ कुमार

राजकीय महाविद्यालय में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजय छात्र-छात्राएं।

मो अल्फज , व मोहम्मद रेहान को दिया गया ।राजकीय महाविद्यालय के के प्रोफेसर डॉक्टर रविंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि प्रतियोगिता मतदाता जागरूकता, स्वास्थ्य जागरूकता, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण व भाषण, निबंध, चित्रकला और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शामिल थीं। सभी प्रतिभागियों ने सामाजिक सरोकारों से संबंधित विषयों पर प्रभावशाली प्रदर्शन किया। अतिथियों ने छात्रों को जीवन में अनुशासन, सेवा भाव और जागरूकता के महत्व पर प्रेरक संबोधन दिया। कार्यक्रम में विजयी छात्रों को सम्मानित भी किया गया। संचालन राजकीय विद्यालय के प्रोफेसर डॉ. गौरव दीक्षित ने किया। कार्यक्रम में डॉ. उमेश कुमार व विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित रहे।

बिजली बिल में हो रही धांधली के विरोध में भरी हुंकार

शाहबाद सीएचसी में भ्रष्टाचार को लेकर किसानों ने किया प्रदर्शन, भाकियू भानू ने उठाया सिंचाई का मुद्दा

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : विभिन्न मांगों को लेकर अलग अलग किसान संगठनों ने कलेक्ट्रेट, शाहबाद सीएचसी और शाहबाद गेट बिजली गेट पर प्रदर्शन किया। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) ने शाहबाद सीएचसी पर धांधली का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया और डीएम व सीएमओ को ज्ञापन सौंपा। वहीं भाकियू (भानू) सिंचाई विभाग पर भ्रष्टाचार को आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। इसके अलावा भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) ने बिजली बिलों में हो रही धांधली पर विरोध प्रदर्शन किया।

वीपीएम पर पर लगाए भ्रष्टाचार के आरोप : भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को प्रदर्शन करते हुए सीएचसी पर तैनात वीपीएम तमाम आरोप लगाए हैं। किसान कार्यकर्ता प्रदेश महासचिव हसीब अहमद के नेतृत्व कार्यकर्ता सीएमओ कार्यालय पहुंचे। वहां प्रदर्शन कर सीएमओ को ज्ञापन सौंपा। हसीब अहमद ने बताया कि सीएचसी पर तैनात वीपीएम आयुष्मान और सफाई घोटाले में पूरी तरह लिप्त है। उनका ट्रांसफर मिलक हो चुका है, लेकिन मिली भगत करके रूकवा लिया है। बताया कि 60 एएनएम में से 25 अवकाश पर रहती हैं। आरोप है कि छुट्टी देने के नाम पर भी वसूली की जाती है। वहीं बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर भी वसूली का आरोप लगाया है। प्रदर्शनकारियों में दरबारी लाल शर्मा, धर्मेंद्र सिंह, खलील अहमद, प्रमोद यादव, चना खान, अफरोज, भूप सिंह यादव, सत्येंद्र यादव, राजेश, पप्पू खान, गुड्डू, फरमान मौजूद रहे।

विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते किसान संगठन के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

नालों की सफाई को लेकर किसानों ने कलेक्ट्रेट में किया प्रदर्शन

रामपुर, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन (भानू) के कार्यकर्ता गुरुवार को प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष कुमार सिकदर के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां सभी ने प्रदर्शन करते हुए डीएम अजय कुमार को ज्ञापन सौंपा। मांग की जिले में 32 नालों की सफाई दिखाकर पैसे निकाला गया। नहर विभाग शासन के विरुद्ध कार्य कर रहा है। जिन नालों की सफाई दर्शाई है, उसमें अधिकतर नाले कागजों में है, मौके पर नहीं है। जनपद में हजारों एकड़ जमीन सिंचाई विभाग की है। जिन पर अवैध कब्जे हैं। डीएम ने जांच कर कार्रवाई का अश्वासन दिया है। इस मौके पर तपन कुमार, नाजिम, फरजंद अली, आबिद अली, हरताल सिंह, बब्बू, जाकिर अली, महेंद्र सिंह, विकास बैरागी, महेंद्र सिंह, सोनू, मनोज कुमार, वीरेंद्र कुमार, श्याम मोहन पांडे, लोकेश पांडे राधेश्याम मौजूद रहे।

समस्याओं को लेकर एसडीओ को सौंपा ज्ञापन

रामपुर, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के कार्यकर्ता गुरुवार को जिला महासचिव बाबर के नेतृत्व में शाहबाद गेट बिजली गेट पहुंचे। यहां बिजली बिल में हो रही अनियमितताओं को लेकर प्रदर्शन करते हुए एसडीओ बकार अहमद को ज्ञापन सौंपा। किसानों ने कहा कि बिजली बिल बहुत अधिक बढ़कर आ रहे हैं। बिल के नाम पर अवैध वसूली की जा रही है। इनमें सुधार की मांग की है। एसडीओ ने आश्वासन दिया कि समस्याओं का समाधान करेंगे। उसके बाद कुछ समस्याओं को लेकर पहाड़ी गेट बिजली घर पहुंचे, लेकिन यहां जेई नहीं मिले। इस पर किसानों ने नाराजगी जताई। इस मौके पर मोहम्मद नादिर, फरीद खां, मुनीब खां, मुशीब अली खां, जुनैद खां, अब्दुल रज्जाक, खां सामी खां मौजूद रहे।

पहाड़ी गेट बिजली घर पर प्रदर्शन करते किसान। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

सीडीओ ने धमोरा में हाईटेक नर्सरी का किया निरीक्षण

रामपुर, अमृत विचार : सीडीओ गुलाब चंद्र ने गुरुवार को धमोरा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में हो रही जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, सब्जियों की खेती विभिन्न फसलों की नर्सरी व बीज उत्पादन के साथ-साथ हाईटेक नर्सरी का निरीक्षण किया। गुणवत्तायुक्त बीजों का उत्पादन करने तथा समय-समय पर कृषकों को प्रशिक्षित कर किसानों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। कृषि सूचना तंत्र के सुदृढ़ीकरण एवं कृषक जागरूकता कार्यक्रम के तहत 6 से 8 दिसंबर तक नुमाइश ग्राउंड, पनवड़िया, बरेली रोड पर कृषि विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय एग्रो क्लाइमेटिक जोन-1 भावर एवं तराई जोन स्तरीय विराट किसान मेला की तैयारियों का जायजा लिया। मेला में स्टॉल लगवाकर उनके माध्यम से किसानों को कृषि की उन्नत जानकारी उपलब्ध कराने और मेला का आयोजन कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के समय राम किशन सिंह उप कृषि निदेशक, जिला कृषि अधिकारी कुलदीप सिंह राणा, भूमि संरक्षण अधिकारी डॉ. भगवत सरन, डॉ. नरेंद्र सिंह, अजय कुमार अधीक्षक राजकीय उद्यान मौके पर मौजूद रहे।

किशोरी के अपहरण मामले में दो पर रिपोर्ट

टांडा, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने कोतवाली में तहरीर देकर कहा कि वह रविवार को अपने माता-पिता के साथ किसी काम से बाहर गया था। घर पर उसकी बहन अकेली थी। जब वह वापस आया तो उसकी बहन घर पर नहीं थी। बाद में लोगों से पूछने पर पता चला कि गांव के ही आरोपी दीनू और अमन उसका अपहरण करके ले गए। उसके बाद पीड़ित ने थाने में तहरीर दी। जिसके बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

घर के बाहर खड़े युवक को पीटा, रिपोर्ट दर्ज

रामपुर, अमृत विचार : भोट थाना क्षेत्र के गांव बांसनगली निवासी तुलाराम का कहना है कि शाम को सात बजे उसका बेटा मुकेश के घर के बाहर खड़ा था। तभी गांव के रोहित, जैनु, लाला, सिवित ने आकर बेटे के साथ गाली-गलौज करते हुए लाठी डंडों से पीटकर घायल कर दिया। इस मामले में तहरीर के आधार पर पुलिस ने चार लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

धोखाधड़ी मामले में कोर्ट के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज

स्वार, अमृत विचार: धोखाधड़ी एवं बकाया राशि न चुकाने और जान से मारने की धमकी देने का व्यापारी पर गंभीर आरोप लगाएं है। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कोतवाली के गांव अलीनगर उत्तरी निवासी जलीस लकड़ी के सेल एंड सप्लाई का व्यवसाय करते हैं। आरोप है कि आर के प्लाईवुड के प्रोपराइटर दित्यांश निवासी कचनाल मानपुर रोड काशीपुर उनसे लगातार लकड़ी मंगवाते रहे, लेकिन भुगतान रोकते रहे। बाद में फोन कर बताया कि कुल 40,50,551 रुपये बकाया हो गए हैं। व्यापारी ने दो बार भुगतान भी किया लेकिन उसके बाद आरोपित ने फोन उठाना बंद कर दिया। 29 अप्रैल 2025 को उन्होंने 75,000 रुपये ऑनलाइन ट्रांसफर किए, लेकिन आरोपी उन्हें लगातार गुमराह करता रहा। भुगतान की मांग की गई तो आरोपी ने फोन पर गाली गलौज की। व्यापारी व उनके पिता को जान से मारने की धमकी दी। व्यापारी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के कोतवाली पुलिस को तहरीर दी प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज न कर टरका दिया।

घेर मर्दान खां में दो पक्षों में चले धारदार हथियार, पांच गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● कोतवाली पुलिस ने दोनों पक्षों के 14 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज की

अमृत विचार: मामूली बात को लेकर बुधवार को घेर मर्दान खां में दो पक्षों के लोग आमने-सामने आ गए। जिसके बाद दोनों पक्षों की ओर से लाठी डंडे और धारदार हथियार चले। दोनों पक्षों की ओर पुलिस ने 14 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है। जिसमें से पांच लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट में पेश किया। मामला रुपयों के विवाद का बताया जा रहा है।

कोतवाली थाना क्षेत्र के घेर मर्दान खां निवासी जैद का कहना है कि वह बुधवार को अपने बच्चों का बाल कटवाने के लिए नाई की दुकान पर गए थे। इस दौरान वहां पर पहले से मौजूद बिट्टू और उसके साथियों ने मारपीट करके घायल कर दिया। उसके बाद दूसरे पक्ष के लोग भी आ गए। दोनों के बीच जमकर लाठी डंडे चले। दोनों के बीच खूनी संघर्ष हो गए। इस मारपीट में कई लोग घायल हो गए है। मौके पर लोगों ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।इस मामले में बिट्टू,नवेद, जावेद, अब्दुल्ला, तालिब, सालिब इस्लाम, तन्नू, शहजाद, अन्दादा के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।वहीं दूसरे पक्ष की शन्नों ने जैद, उबैद, शाकिब और नवाब नूर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। शहर कोतवाली प्रभारी ओंकार सिंह ने बताया कि पांच लोगों को गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट में पेश किया। बचे आरोपियों को तलाश किया जा रहा है।

ठंड से बचाने के लिए रैन बसेरे तैयार, राहगीरों को मिलेगा आसरा

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● डीएम ने रैन बसेरों में पहुंचकर किया निरीक्षण

● दिए जरूरी निर्देश, यात्रियों से ली सुविधाओं की जानकारी

अमृत विचार: ठिठुरन भरी सर्दी से निजात दिलाने के लिए रोडवेज समेत जिले भर में 247 रैन बसेरे बनवाए गए हैं। रैन बसेरों में भूखों को निशुल्क भोजन और सर्दी से बचने के लिए गर्म बिस्तर मिलेगा। इसके अलावा सार्वजनिक स्थानों पर अलाव जलवाए जाएंगे। ताकि ई-रिक्शा चालकों, मुसाफिरों को रात में हो रही सर्दी में अलाव से राहत मिल सके। तैयार रैन बसेरों का डीएम अजय कुमार द्विवेदी ने निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।

अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संदीप कुमार वर्मा ने उप जिलाधिकारियों, तहसीलदारों और निकायों के अधिशासी अधिकारियों को रैन बसेरे और सार्वजनिक स्थानों पर अलाव जलवाए जाने के आदेश दिए हैं। ताकि रात्रि में कोई भी व्यक्ति सड़क अथवा फुटपाथ पर सोने के लिए बाध्य नहीं हो। रैन बसेरों में रुकने वाले लोगों को निशुल्क गद्दे, कंबल, स्वच्छ पेयजल और भोजन की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। प्रत्येक रैन बसेरे के लिए नोडल अधिकारी नामित किया गया है। तहसील क्षेत्रों में उपजिलाधिकारी एवं संबंधित नगर निकाय के अधिशासी अधिकारी नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। प्रत्येक रैन बसेरे में केयर टेकर की तैनाती रहेगी, जिसका नाम, पदनाम एवं मोबाइल नंबर रैन बसेरे के गेट पर लिखा रहेगा। रैन बसेरों का रात में अधिकारियों द्वारा निरीक्षण कर देखा जाएगा कि रैन बसेरों में रुकने वालों को सुविधाएं मिल रही हैं अथवा नहीं। अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अधिकारी ने बताया कि रैन बसेरों रुकने वालों को किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं होगी, सर्दी के बचने के पूरे इंतजाम किए गए हैं।

रैन बसेरा निरीक्षण करते डीएम अजय कुमार द्विवेदी। ● अमृत विचार

सुविधाओं की जानकारी लेते डीएम।

डीएम ने शाम ढलते ही रैन बसेरों का किया निरीक्षण

रामपुर, अमृत विचार : बढ़ती सर्दी के चलते गुरुवार शाम डीएम ने शाम ढलते ही जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संदीप वर्मा और नगर निकाय अधिकारियों के साथ शहर में स्थापित रैन बसेरों और अलाव की व्यवस्थाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया। डीएम ने निरीक्षण के दौरान रैन बसेरा में मिले राहगीरों से व्यवस्था की पूछताछ की। डीएम ने व्यवस्थाओं में लापरवाही ना करने के निर्देश दिए। रैन बसेरा में निराश्रित व असहाय व्यक्तियों के लिए भोजन, कम्बल पर्याप्त व्यवस्था करने को कहा।

समस्याओं को लेकर शिक्षकों ने बीएसए को सौंपा ज्ञापन

बीएसए को ज्ञापन सौंपते शिक्षक। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का प्रतिनिधिमंडल जिलाध्यक्ष रवेंद्र गंगवार के नेतृत्व में गुरुवार को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कल्पना देवी से मिला। उसके बाद मांगों को लेकर 12 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। जिसमें कहा कि जिले में ऐसे विद्यालय है जो एक शिक्षक के सहारे संचालित है, उन विद्यालयों में शिक्षकों की तैनाती की जाए।

शिक्षक का दीपावली बोनस एवं लंबित डीए का भुगतान शीघ्र करने, बिना ठोस कारण अवकाश निरस्त न किए जाने और लेखा पर्ची उपलब्ध कराने की मांग की है।

इसके अलावा अन्य मांगों के साथ साथ 72 हजार भर्ती शिक्षकों का चयन वेतनमान दिलाए जाने की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में जिला महामंत्री विपेंद्र कुमार, विनीत श्रीवास्तव, डॉ. वसीम अहमद, संदीप शर्मा, राजकुमार तोमर, योगेश कश्यप, कपिल कुमार, मंजू सिंह, आकांक्षा सिंह, ममतेश चौधरी, अवंतिका गुप्ता, संगीता गौतम मौजूद रहे।

परिजनो से बिछड़े बच्चों को पुलिस ने खोजकर मिलाया

रामपुर, अमृत विचार : गंज थाने में बनी मिशन शक्ति केंद्र की टीम ने 7 और 3 वर्ष के बच्चे के गुमशुदा होने की सूचना पर दोनों बच्चों को 20 मिनट के अंदर परिजनों से संपर्क कर परिजनों को सकुशल सुपुर्द किया।।

बुधवार रात दिल्ली के तुर्कमान गेट पंत हॉस्पिटल निवासी महिला रिश्तेदारी में मोहल्ला घेर इनायत दूल्हा खां में आई थी। रात को उसकी 7 वर्षीया बालिका घर से बाहर रास्ता भटक गई थी। सूचना पर प्रभारी निरीक्षक गंज व उप निरीक्षक संदीप कुमार शर्मा और मिशन शक्ति टीम ने बच्ची को 20 मिनट में तलाश कर लिया। बच्ची को उसके परिजनों को सौंप दिया। इसके अलावा तीन वर्षीय बालक जो कि मछली बाजार थाना गंज का रहने वाला है। वह भी घर के बाहर खेलते खेलते रास्ता भटक कर कहीं निकल गया था। थाना गंज की टीम के द्वारा तुरंत कार्रवाई करते हुए बच्चे को 20 मिनट के अंदर खोज कर थाने पर लाया गया।

एसपी ने कंट्रोल रूम का किया निरीक्षण, दिए निर्देश

कंट्रोल रुम का निरीक्षण करते एसपी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र और अपर पुलिस अधीक्षक अनुराग सिंह ने बुधवार को पुलिस कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान एसपी ने पुलिस कर्मियों को जरूरी दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान एसपी ने डायल-112 कॉल रिस्पॉन्स, संचार प्रणाली, रिकॉर्ड, सीसीटीवी निगरानी एवं टीवी मॉनीटरिंग सिस्टम की कार्यप्रणाली को देखा। उन्होंने कंट्रोल रूम स्टाफ को निर्देशित किया कि आपात सूचना पर त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करें। इसके अलावा महिला थाने का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान थाना कार्यालय पर बने अपराध, विवेचना रजिस्टर एवं उनके रख रखाव, साफ-सफाई, उनमें अंकित की जाने वाली प्रविष्टियों को चेक किया। थाना परिसर में बने कार्यालय, भोजनालय, हवालात, कम्प्यूटर कक्ष, मिशन शक्ति केंद्र आदि की साफ- सफाई का जायजा लेकर संबंधित को दिशा निर्देश दिए।

न्यूज डायरी

अलग-अलग सड़क हादसों में चार लोग घायल

मिलक, अमृत विचार : अलग-अलग जगह हुए सड़क हादसों में दो भाई बहन समेत चार लोग घायल हो गए।सभी घायलों को नगर के सरकारी अस्पताल लाया गया। जहां से गंभीर अवस्था में घायलों को रेफर कर दिया गया। हादसा बुधवार की देर रात नगर के बिलासपुर मार्ग स्थित एक मंडप के समीप हुआ। नगर के मोहल्ला नसीराबाद निवासी अश्वनी रस्तोगी स्कूटी से कोचिंग पढ़ कर घर वापस लौट रहा था। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें सरकारी अस्पताल में लोग लेकर पहुंचे, जहां से डॉक्टरों ने हायर सेंटर रेफर कर दिया। दूसरा हादसा नगर के हाइवे स्थित मोहल्ला रोरा कलां के पास हुआ। मोहल्ला निवासी शंकर लाल का चार वर्षीय पुत्र प्रेमपाल बुधवार की रात सड़क पार कर रहा था। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी। परिजन बेहतर उपचार के लिए उसे अपने साथ ले गए। तीसरा हादसा गुरुवार को हाईवे स्थित ग्राम लोहा पट्टी भागीरथ के पास हुआ। जहां गांव निवासी अभिषेक स्कूटी से अपनी बहन मीनाक्षी के साथ स्कूल जा रहा था। हाईवे स्थित सर्विस रोड पर सामने से आ रही बाइक से उनकी स्कूटी में टक्कर मार दी। हादसे में दोनों भाई-बहन घायल हो गए। वही मौका पाकर बाइक सवार बाइक लेकर वहां से फरार हो गया। हादसे में दोनों घायलों को मौके पर परिजनों ने निजी अस्पताल में भर्ती कराया है जहां उनका उपचार चल रहा है।

एआरटीओ ने तीन डंपर किए सीज, 23 का चालान

रामपुर, अमृत विचार : एआरटीओ ने अभियान चलाकर तीन डंपर को सीज किया। साथ ही मानक पूरे नहीं करने पर 23 वाहनों का चालान किया। जिन पर 2.43 लाख का जुर्माना लगाया गया। एआरटीओ राजेश श्रीवास्तव ने बुधवार रात और गुरुवार तड़के चेकिंग अभियान चलाया। एआरटीओ ने बताया कि यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

एएसपी ने विवेचकों को दिए निर्देश

रामपुर, अमृत विचार : अपर पुलिस अधीक्षक अनुराग सिंह द्वारा थाना कोतवाली का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान थाना कार्यालय पर बने अपराध, विवेचना रजिस्टर आदि एवं उनके रख रखाव को चेक किया। इसके अलावा साफ-सफाई, उनमें अंकित की जाने वाली प्रविष्टियों को चेक किया। साथ ही थाना परिसर में बने कार्यालय, भोजनालय, हवालात, कम्प्यूटर कक्ष, मिशन शक्ति केंद्र आदि की साफ- सफाई का जायजा लिया। विवेचकों के साथ गोष्ठी कर दिशा निर्देश दिए।

रेस्क्यू करके 7 किशोरों को छुड़ाया

रामपुर, अमृत विचार : सहायक श्रमायुक्त राजकुमार के नेतृत्व में महिला कल्याण विभाग, चाइल्ड लाइन एवं एएचटीयू टीम के साथ संयुक्त अभियान चलाया। अभियान ज्वाला नगर, पंजाबनगर, बिसरी पटवाई आदि स्थानों पर स्थित विभिन्न होटलों, ढाबा, रेस्टोरेंट, ऑटोमोबाइल्स एवं अन्य दुकानों पर कार्यरत 7 किशोर श्रमिकों को चिन्हांकित करते हुए संबंधित सेवायोजकों के विरुद्ध नियमानुसार विधिक कार्रवाई की। अभियान में अभिभावकों एवं व्यापारियों को दुकानों,प्रतिष्ठानों तथा सार्वजनिक स्थानो पर बाल श्रम न करने के लिए हिदायत दी। 1098 कि कार्यप्रणाली के बारे में जानकरी दी गई।अभियान में देवेन्द्र सिंह, निजामुद्दीन, मनोज कुमार त्रिपाठी,नसीम, राहुल, अमित कुमार मौजूद रहे।

टंकी बनाने आए मजदूर ने किया युवती का अपहरण

शाहबाद, अमृत विचार : शाहबाद थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक ग्रामीण ने टंकी बनाने आए मजदूर पर बेटी के अपहरण का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। पीड़ित ने बताया कि उसके गांव में पानी का टंकी का निर्माण कार्य चल रहा था। जिस पर जनपद बरेली के विशारतगंज थाना क्षेत्र के गांव वलई निवासी बब्लू काम करता था। वह पहले से शादीशुदा था। पीड़ित के घर भी उसका आना जाना था। आरोप है कि बब्लू युवती का अपहरण करके ले गया। घर में रखे 70 हजार नगद और जेवरात भी गायब हैं। पीड़ित में कोतवाली में तहरीर देकर अपनी बेटी बरामद करने की गुहार लगाई है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर युवती के तलाश शुरू कर दी है।

इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने एसई को बताई औद्योगिक समस्याएं

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

एसई से वार्तालाप करते आईआईए के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

● पुरानी जर्जर लाइन, ट्रिपिंग सहित अन्य समस्याओं के बारे में बताया

अमृत विचार : इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के प्रतिनिधि मंडल गुरुवार को अधीक्षण अभियंता विद्युत सतेंद्र कुमार चौहान से मुलाकात की और रामपुर में नवीन तैनाती के लिए स्वागत किया। उसके बाद उनके सामने पुरानी जर्जर लाइन, ट्रिपिंग ,बिल संबंधी समस्याएं रखी।

बैठक में चेयरमैन आईआईए ने जिले के उद्योगों को जो कठिनाइयां विद्युत सबंधी आ रही है। उन्हें विस्तार से रखा एवं एक मांग पत्र दिया। इसमें बताया कि बरेली रोड, पनवड़िया, रोशन बाग, अजीतपुर इंडस्ट्रियल एरिया, बिलासपुर की इंडस्ट्री को होने वाली समस्याओं के बारे में बताया। जिसमें पुरानी जर्जर लाइन, ट्रिपिंग ,बिल संबंधी समस्याएं रखी। एसई ने सभी समस्याओं को सुना और सभी समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया। बैठक में सचिव मनोज गर्ग, व्यापार मंडल के अध्यक्ष शैलेंद्र शर्मा, निर्यातक एसके गुप्ता, नीरू मेंथोल, जीरो फुट प्रिंट आदि उद्यमियों ने भाग लिया।

चयन वेतनमान को लेकर लेखा अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

रामपुर, अमृत विचार : उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष डॉ. राजवीर सिंह ने वित्त एवं लेखाधिकारी को पत्र सौंपा है। उन्होंने मांग की है कि जिले में 335 शिक्षकों को चयन वेतनमान स्वीकृत हो चुका है।

● शिक्षकों को चयन वेतनमान स्वीकृत हो चुका है, लेकिन नहीं मिला लाभ

इसके बाद भी अब तक इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। इससे शिक्षकों में रोष है। उन्होंने लेखाधिकारी से मांग की है कि जिन शिक्षकों की सूचियां लेखा कार्यालय को प्राप्त हो चुकी हैं। उनका वेतनमान अबिलंब दिया जाए। इस मौके पर अंजुम स्नेही भी मौजूद रहे।

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

वन विभाग की टीम ने पकड़ा सांप

मसवासी, अमृत विचार : वन विभाग की टीम ने एक सांप को पकड़ने के बाद कर अपने साथ ले गई। गुरुवार को काशीपुर मार्ग स्थित रहमतगंज में गांव बाहरी छोर पर मंदिर के पास ग्रामीणों ने एक सांप देखा। जिसे देखकर गांव के लोगों ने इस मामले की जानकारी आसपास के लोगों को दी। जिससे उसे पकड़ने के लिए ग्रामीणों ने काफी मशक्कत की, लेकिन सांप को नहीं पकड़ा जा सके। किसी ने इस मामले की सूचना वन विभाग को दी। सूचना पाकर वन विभाग के कर्मचारी शकील अहमद और हरिश्चंद्र मौके पर पहुंचे। उसके बाद सांप को पकड़कर ले गए।

पुलिस अधीक्षक को पत्र देकर कार्रवाई की मांग

रामपुर, अमृत विचार : भारतीय वाल्मीकि धर्म समाज के जिलाध्यक्ष अनिल राज के नेतृत्व में पदाधिकारी गुरुवार को एसपी कार्यालय पहुंचे।उसके बाद ज्ञापन देकर कहा है कि चौकी मसवासी के ग्राम हसनपुर निवासी राकेश वाल्मीकि की पुत्री को गांव निवासी रोहित मौर्य अपने एक अन्य साथी के साथ 20 नवंबर को अपहरण कर ले गया था। जिसका मुकदमा कोतवाली स्वार में दर्ज है।

इंटरचेंज पर एक सप्ताह में फर्राटा भरेंगे वाहन

फोरलेन पर खर्च हुए 188 करोड़ रुपये, जीरो प्वाइंट से शहजादनगर दुर्गनगला तक तैयार हुआ फोरलेन

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार: जीरो प्वाइंट पर नवनिर्मित इंटरचेंज पर एक सप्ताह के भीतर वाहन फर्राटा भरने लगेंगे। शहर की ओर आने वाले मार्ग का चौड़ीकरण का काम भी पूरा हो गया है और इंटरचेंज चालू करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा अंतिम टेस्टिंग होनी बाकी है। नए साल से पहले रामपुर और उत्तराखंड जाने वाले पर्यटकों को इसके चालू होने के बाद बड़ी राहत मिलेगी। रामपुर में प्रवेश से पहले जाम और अव्यवस्था से नहीं जूझना पड़ेगा।

मुरादाबाद और बरेली की ओर से उत्तराखंड जाने वाले वाहनों की राह को आसान करने के लिए नेशनल हाईवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) द्वारा रामपुर में एक फोरलेन बाईपास का काम लगभग पूरा हो चुका है। इनमें दो बड़े इंटरचेंज बनाए गए हैं, जो शहर को जाम मुक्त बनाने में मददगार साबित होंगे। जीरो प्वाइंट से दुर्गनगला तक फोरलेन बाईपास पर वाहन फर्राटा भरने लगे हैं, इसमें जीरो प्वाइंट पर

नेशनल हाईवे पर बना इंटरचेंज।

नवनिर्मित इंटरचेंल भी एक सप्ताह में चालू होने जा रहा है। जबकि मुरादाबाद-बरेली हाईवे स्थित सिहोरा बाजे पंजाब-हरियाणा ढाबे से कोयला जाने वाले बाईपास पर काम तेजी से चल रहा है। एनएचएआई ने बाईपास के दोनों प्रोजेक्ट पर 428 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। जीरो प्वाइंट से शहजादनगर दुर्गनगला फोरलेन मार्ग पर कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। वहीं हाईवे स्थित सिहोरा बाजे पंजाब-हरियाणा ढाबे से कोयला तक फोरलेन मार्ग 31 मार्च 2026 तक पूर्ण होने का लक्ष्य है।

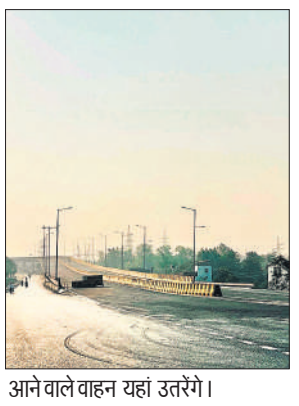

आने वाले वाहन यहां उतरेंगे।

एनएचएआई के सहायक अभियंता गुरविंदर सिंह ने बताया कि जीरो प्वाइंट से शहजादनगर दुर्गनगला तक 10.190 किमी. फोरलेन पर 188 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। जो मुरादाबाद और बरेली से आने वाले वाहनों को जीरो प्वांइट इंटरचेंज से नैनीताल हाईवे को जोड़ेगा। जो इसी एक सप्ताह में टेस्टिंग के बाद चालू हो जाएगा। इंटरचेंज का मार्ग का निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है, इसमें रामपुर शहर की ओर से चौड़करण का कार्य कराया गया है। वहीं मुरादाबाद-बरेली हाईवे स्थित सिहोरा बाजे पंजाब-हरियाणा ढाबे से कोयला के लिए 13.7 किमी. फोरलेन पर 240 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

इसके चालू होने के बाद उत्तराखंड जाने वाले वाहनों को शहर से होकर नहीं गुजरना पड़ेगा। अभी तक मुरादाबाद-बरेली हाईवे से नैनीताल रोड होते हुए वाहन निकलते हैं। ऐसे में गर्मियों की छुट्टियों में उत्तराखंड में पर्यटकों की संख्या के साथ शहर में वाहनों का दबाव कम होगा। अधिकारियों के अनुसार दोनों फोरलेन 2025 की शुरुआत में शुरू होने थे, लेकिन बरसात के मौसम में कोसी नदी में बाढ़ आने के कारण कार्य बाधित रहा, इसके चलते लक्ष्य का समय भी बढ़ा दिया गया था। जिसके बाद हाईवे स्थित सिहोरा बाजे पंजाब-हरियाणा ढाबे से कोयला तक फोरलेन मार्ग 31 मार्च 2026 तक पूर्ण होने का समय दिया गया है।

चौड़ीकरण और फ्लाईओवर के ये होंगे फायदे

- जीरो प्वाइंट से दुर्ग नगला तक पर होने वाले हादसों में कमी आएगी
- चौड़ीकरण से दोनों ओर वाहन आसानी से आ जा सकेंगे
- जाम की समस्या से मिलेगी निजात
- शहर से मुरादाबाद जाने वाले वाहन भी जाम में नहीं फंसेंगे
- मुरादाबाद और बरेली की ओर से आने वाले वाहनों का दबाव रामपुर शहर में नहीं पड़ेगा।

> बाईपास के फोरलेन व इंटरचेंज के निर्माण का काम लगभग पूरा हो गया है। दुर्ग नगला इंटरचेंज वाहनों के लिए खोल दिया गया है, जबकि जीरो प्वाइंट पर इंटरचेंज को एक सप्ताह में टेस्टिंग के बाद खोल दिया जाएगा। जबकि पंजाब-हरियाणा ढाबा से कोयला तक 13 .70 किमी मार्ग 31 मार्च 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य है।
>
> – **गुरविंदर सिंह**, सहायक अभियंता, एनएचएआई

पोस्टर प्रतियोगिता में मुस्कान प्रथम, खुशी द्वितीय

कॉलेज में प्रतियोगिता के बाद पोस्टर दिखातीं छात्राएं। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● राजकीय महिला डिग्री कालेज में पोस्टर प्रतियोगिता

अमृत विचार: राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गुरुवार को जंतु -विज्ञान विभाग परिषद के तत्वावधान में पोस्टर प्रतियोगिता हुई। पोस्टर प्रतियोगिता में मुस्कान प्रथम, खुशी गौतम द्वितीय, इशिका गुप्ता तृतीय जबकि, स्वालेह और निशा सांत्वना स्थान पर रहीं।

कालेज सभागार में हुई प्रतियोगिता में कालेज प्राचार्य डॉ. सुनीता ने कहा कि पोस्टर प्रतियोगिता से छात्राओं को कल्पना को उड़ान देने का मौका मिलता है। छात्राओं ने पैरामीशियम, एड्स, ओबेलिया कॉलोनी, माइक्रोर्गनिस, जैली फिश, न्यूक्लियस, हार्डमैनिया और हाइजीन मेंस्ट्रुअल आदि के पोस्टर बनाए। निर्णायकों में महाविद्यालय की चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर सबीहा परवीन और डॉ. टिकेंद्र शामिल रहे। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. वंदना राठौर ने किया। डॉ. मनोरमा चौहान का विशेष सहयोग रहा।

बाबा इलेविन की टीम ने आसानी से जीता लीग क्रिकेट मैच

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार: महात्मा गांधी स्टेडियम पर गुरुवार को रामपुर ट्रॉफी क्रिकेट लीग टूर्नामेंट में दो लीग मैच खेले गए। इसमें बाबा इलेविन और एकता क्लब ने जीत दर्ज कर अगले राउंड में प्रवेश किया।

पहले मैच में रजा क्लब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में आठ विकेट के नुकसान पर 102 रन बनाए। जवाब में खेलने उतरी बाबा इलेविन की टीम ने 9 ओवर 4 गेंदों में 104 रन बनाकर मैच जीत लिया। गेम चेंजर गुलवेज खां और प्लेयर ऑफ द मैच फिरोज अली रहे। दूसरे लीग मैच में एकता क्लब के कप्तान ने टॉस जीतकर निर्धारित 20 ओवर में 170 रन

महात्मा गांधी स्टेडियम पर शॉट लगाता बल्लेबाज। ● अमृत विचार

● महात्मा गांधी स्टेडियम में हो रहा रामपुर ट्रॉफी क्रिकेट लीग टूर्नामेंट

बनाए। वहीं लक्ष्य का पीछा करते हुए गोल्डन क्लब की टीम 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 130 रन ही बरना सकी। उस्मान ख्वाजा को मैन ऑफ द मैच और फव्वाद मियां को गेम चेंजर का आवार्ड दिया गया। खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि शारिब अली खां, शाहवेज खां उर्फ शैजी ने सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजक सैयद अदील मियां, आमिर कुरैशी, फरहान गुल, ज्वाला प्रसाद, पवन यादव आदि मौजूद रहे।

शिक्षा-शिक्षण, व्यक्तित्व के विकास पर हुई चर्चा

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● 11 दिसंबर तक महाविद्यालय में आयोजित होगा कार्यक्रम

अमृत विचार: राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के तत्वावधान में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से ओरिएंटेशन एंड सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम जारी है। समन्वय डॉ. मोनिका खन्ना ने बताया कि यह कार्यक्रम 11 दिसंबर तक आयोजित होगा।

ऑनलाइन कार्यक्रम में राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, यूजीसी मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने शिक्षा-शिक्षण और व्यक्तित्व के समग्र विकास के विभिन्न आयामों पर चर्चा की। प्रो. साजिद जमाल ने भारतीय शिक्षण विज्ञान से रूबरू कराते हुए कहा कि यह विश्व का सबसे प्राचीनतम शिक्षण विज्ञान है, जिसके अधिकांश का प्रयोग शिक्षण-प्रशिक्षण में आज भी किया जाता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. परवेज तालिब ने समग्र व्यक्तित्व विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में प्रो. शीबा हामिद ने कौशल विकास विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में कोर्स कोऑर्डिनेटर डॉ. मोनिका खन्ना ने निदेशक डॉ. फायजा अब्बासी, राजकीय रजा डिग्री कालेज की प्राचार्य प्रो. जागृति मदान धींगड़ा, रिसोर्स पर्सन्स प्रो. दिव्या जोशी एवं प्रो. शीबा हामिद समेत प्रतिभागियों का आभार जताया।

लक्ष्य पाने के लिए स्पष्ट हो दृष्टिकोण

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार: राजकीय हामिद इंटर कॉलेज में गुरुवार को करियर गाइडेंस मेला और वार्षिक महोत्सव मनाया गया। मुख्यातिथि अभिलाष कुमार ने कहा कि हमें अपने लक्ष्य को पाने के लिए दृष्टिकोण बड़ा ही स्पष्ट एवं अटूट होना चाहिए।

मुख्यातिथि राजकीय रजा इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अभिलाष कुमार, जिला क्रीड़ा अधिकारी संतोष कुमार, पूर्व जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी असरार अहमद ने संयुक्त रूप से फीता काटकर शुभारंभ किया। मुख्यातिथि ने बताया कि मानवीय मूल्यों के साथ युवा वर्ग को बड़ा ही सजग एवं संवेदनशील होकर अपने अध्ययन करने की आवश्यकता है। छोटी सी भी लापरवाही भविष्य के साथ बड़ा नुकसान कर सकती है। इस मौके पर जिला क्रीड़ा अधिकारी संतोष कुमार, पूर्व जिला

छात्रों द्वारा लगाई गई मॉडल प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि। ● अमृत विचार

● राजकीय हामिद इंटर कॉलेज में मनाया गया वार्षिकोत्सव

अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी असरार अहमद, प्रधानाचार्य डॉ. अरविंद कुमार गौतम ने विचार व्यक्त किए। संचालन ओमप्रकाश सैनी ने किया। इस मौके पर पॉलिटेक्निक कॉलेज के व्याख्याता धीरज कुमार, राजकीय हाई स्कूल रजा नगर के प्रधानाचार्य विनोद कुमार, जिला सेवायोजन कार्यालय के राजीव कुमार, फरीद अहमद, इको क्लब प्रभारी राजकुमार और पंख पोर्टल के मोहम्मद मुनजम अली समेत कई लोग रहे।

कबाड़ बन चुके शासकीय वाहनों से मिलेगा रोजगार

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

● डीएम अजय द्विवेदी की पहल, मोबाइल यूनिट बनाने का काम शुरू

● रेहड़ी-पटरी वालों के लिए आजीविका के लिए मिलेंगे नए अवसर

अमृत विचार : जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने कबाड़ से जुगाड़ बनाने की अच्छी पहल शुरू की है। कबाड़ बन चुके शासकीय वाहनों से मोबाइल यूनिट बनाकर रेहड़ी-पटरी से जुड़े जरूरतमंद लोगों को रोजगार देंगे। इस पहल के लिए एक वाहन को मोबाइल यूनिट बनाने का काम शुरू हो गया है।

डीएम ने बताया कि जिले में रोजगार सृजन और आजीविका को नई दिशा देने के लिए एक अनूठी एवं दूरदर्शी पहल की जा रही है। इस पहल के तहत जिले में निष्प्रयोज्य पड़े शासकीय वाहनों को पुनः उपयोगी बनाकर रेहड़ी पटरी कार्य के लिए उपयुक्त मोबाइल यूनिट के रूप में विकसित किया जा रहा है। डीएम ने इस प्रयास की शुरुआत जिला चिकित्सालय में खड़ी एक निष्प्रयोज्य एम्बुलेंस से की है। जिसे इस प्रकार परिवर्तित कराया जा रहा है।

ताकि रेहड़ी-पटरी से जुड़े पात्र व्यक्तियों को संगठित, सुरक्षित और सम्मानजनक रोजगार का अवसर मिल सके। चयनित व्यक्तियों को यह वाहन ऐसे स्थानों पर लगाने के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे, जहां यातायात बाधित न हो तथा रोजगार की संभावनाएं स्वाभाविक रूप से मौजूद हों। उन्होंने कहा कि यदि यह प्रयास सफल रहता है तो जिले में मौजूद 50 से अधिक निष्प्रयोज्य शासकीय वाहनों को भी इसी प्रकार रूपांतरित कर पात्र व्यक्तियों को उपलब्ध कराने पर कार्य किया जाएगा।

कई जिलों में कबाड़ से जुगाड़ हुए कामयाब

मेरठ महानगर में एक नगरायुक्त ने कबाड़ से जुगाड़ की तर्ज पर शहर के चौराहों का सौंदर्यीकरण कराया था। जो बेहद कामयाब रहा। जबकि एक कमिश्नर ने भी मेरठ पुराने टायरों को सड़कों के किनारे लगाकर सौंदर्यीकरण कराया था। इसके अलावा कई जिलों में इसके लिए प्रयोग हुए हैं और सफल भी हुए हैं। लेकिन रोजगार के लिए कबाड़ से जुगाड़ की पहल प्रदेश में पहली बार हो रही है।

निष्प्रयोज्य एंबुलेंस का निरीक्षण करते डीएम। ● अमृत विचार

कार्रवाई के लिए डीएम को भेजा पत्र

रामपुर, अमृत विचार: थाना टीन निवासी मोहम्मद हुसैन साबरी ने जिलाधिकारी को पत्र दिया है। जिसमें कहा कि 17 मार्च को कलेक्ट्रेट सभागार में कलेक्ट्रेट परिसर में पार्किंग स्थल, साइकिल स्टैंड की नीलामी निर्धारित थी। जिसमें भाग लेकर बोली देकर ठेका वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए लिया है। जो एक अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 तक चलेगा। ठेका धनराशि का भुगतान ग्यारह लाख उनतीस हजार पांच सी अदा कर चुका है, परन्तु सुरक्षा प्रबंध के असहयोग के कारण ठेकेदार को हानि का सामना करना पड़ रहा है। ठेका संपूर्ण कलेक्ट्रेट परिसर का दिया गया था। प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ बार काउंसिल के अधिवक्ताओं के अतिरिक्त सभी अन्य वाहनों का परिसर में जाना वर्जित है।

एमएसपी पर मूंग, उड़द-तिल की खरीद

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार: गेहूं और धान के बाद अब मूंग, उड़द, तिल और मूंगफली की खरीद भी एमएसपी पर होगी। लगातार किसानों की मांग के बाद सरकार ने यह फैसला लिया है। इसके लिए जिले में बिलासपुर में एक, मिलक में एक और शाहबाद में दो क्रय केंद्र बनाए गए हैं।

दलहनी और तिलहनी फसलों की खरीद 29 जनवरी 2026 तक होगी। सरकार ने उड़द का एमएसपी मूल्य 7800 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली का एमएसपी मूल्य 7263 रुपये, मूंग का एमएसपी मूल्य 8768 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया है। दलहनी और तिलहनी फसलों की खरीद सहकारिता विभाग की एजेंसियों द्वारा की जाएगी। निर्धारित क्रय केंद्रों पर किसान अपने पंजीकरण प्रमाण पत्र के साथ निर्धारित एमएसपी पर फसल बेच सकेंगे। सहायक

नवीन मंडी में बनाया गया क्रय केंद्र। ● अमृत विचार

यहां बेंच सकते हैं दलहन

किसान मूंग, उड़द, तिल और मूंगफली की बिक्री नवीन मंडी स्थल मिलक, नवीन मंडी स्थल बिलासपुर, नवीन मंडी स्थल शाहबाद, नवीन मंडी हब पटवाई शाहबाद में बेंच सकते हैं।

● मिलक, शाहबाद और बिलासपुर में बने क्रय केंद्र

आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता डॉ. गणेश गुप्ता ने बताया कि किसानों को अपनी फसल विक्रय करने में यदि किसी प्रकार की कोई कठिनाई आती है तब जिला प्रबंधक पीसीएफ, जिला प्रबंधक पीसीयू या सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता के विकास भवन स्थित कार्यालय में अपनी समस्या दर्ज करा सकते हैं। बताया कि किसानों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण कराया जाएगा।

शाह दरगाही के मजार पर पहुंची चादर शरीफ

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● अरुकी नमाज के बाद मौलाना नासिर ने की तकरीर

अमृत विचार: शहर के मोहल्ला पुराना गंज मंगल की पैंठ स्थित हाजी आकिल के आवास से चादर शरीफ का जुलूस शहर के मोहल्ला पक्का बाग स्थित हजरत शाह दरगाही महबूबे इलाही के मजार शरीफ पर पहुंचा।

मजार शरीफ पर अस्र की नमाज के बाद मौलाना नासिर ने तकरीर में कहा कि बुजुर्गों के आस्तानों से कोई सवाली खाली हाथ नहीं लौटता है। हजरत सैयदना शाह दरगाही महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह के 221वें सालाना उर्स के दूसरे दिन हाजी आकिल के आवास पर हुई महफिले दरगाही में कारी फैयाज ने तिलावते कुरआन मजीद की। शहर इमाम नासिर खां ने दुआ कराई। मौलाना शाह खालिद, मुकर्रम हुसैन, आदिल अलमास, मजार शाह विलायत साहब के सज्जादानशीं नासिर मियां, शाह दरगाही महबूबे इलाही के सज्जादानशीं शाहिद मियां, डॉ. शायर उल्लाह खां आदि मौजूद रहे।

हाजी आकिल के आवास पर दुआ करते उलमा। ● अमृत विचार

न्यूज डायरी

छात्राओं को सरकारी नंबरों के बारे में किया जागरूक

रामपुर, अमृत विचार : मिशन शक्ति-5 अभियान के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उनको जागरुक किया जा रहा है। उसी के चलते गुरुवार को महिला सुरक्षा एवं आत्मरक्षा से जुड़े आवश्यक उपाय, कानूनी अधिकार, नारी सम्मान से संबंधित प्रावधान एवं तत्काल सहायता के विकल्प व हेल्पलाइन सेवाओं 1090 महिला शक्ति हेल्पलाइन के बारे में बताया। मिशन शक्ति टीम थाना कोतवाली द्वारा महिलाओं व बालिकाओं को पंपलेट, कॉमिक्स एवं जागरूकता सामग्री वितरित की।

सांसद ने केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्यमंत्री को सौंपा पत्र

रामपुर, अमृत विचार : सपा सांसद मोहिब्बुल्लाह नदवी ने गुरुवार को केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू से मुलाकात कर पत्र सौंपा। जिसमें उम्मीद पोर्टल पर वक्फ डेटा अपलोड करने की अंतिम तिथि बढ़ाने का अनुरोध किया है। रिजिजू ने इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए जल्द ही सकारात्मक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। यह जानकारी सांसद मीडिया प्रभारी एडवोकेट महबूब अली पाशा ने दी।

छात्र-छात्राओं को हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी

रामपुर, अमृत विचार : राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गुरुवार को रसायन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में छात्र- छात्राओं में हेल्पलाइन नंबरों जानकारी दी गई। कालेज प्राचार्य प्रो. जागृति मदान धींगड़ा ने कहा कि महिला हेल्पलाइन महिलाओं को पुलिस, वन स्टॉप सेंटर, अस्पताल, विधिक सेवा प्राधिकरण आपातकालीन और गैर-आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रदान करती है। महिला हेल्पलाइन को वन स्टॉप सेंटर योजना और महिला सशक्तिकरण केंद्र के साथ एकीकृत किया जा रहा है ताकि महिलाओं को निवारण सेवाएं मिल सकें। भाषण में मदीहा आबाद, सुरभि मौर्य, नमीरा जुनैद तथा फैजान उस्मानी आदि छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

त्याग और सेवा के प्रतीक थे चौधरी रणवीर सिंह: चौधरी नलिन

रामपुर, अमृत विचार : गुरुवार को आंबेडकर पार्क में राष्ट्रीय युवा क्रांति मोर्चा के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी नलिन सिंह के पिता चौधरी रणवीर सिंह की प्रथम पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम से पूर्व संगठन के कार्यालय पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हवन कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष नलिन सिंह ने कहा कि उनके पिता चौधरी रणवीर सिंह ने संगठन की स्थापना कर इसकी बागडोर उन्हें सौंपी। उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर हम सब संकल्प लेते हैं कि उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। प्रदेश अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव, प्रवक्ता एडवोकेट क्रान्ति शेखर सारंग ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर जगदीश शर्मा, सुनील यादव, श्याम यादव, संजीव यादव, अनुज पाण्डेय, शेखर पाण्डेय, विनय गंगवार, बीडी शर्मा, नौनिहाल सिंह, कर्मवीर सिंह, चंचल सिंह, प्रेम राजपूत, वेद पाल, सूर्य प्रकाश, शिवम कश्यप, सुरेश श्रीवास्तव व वेदपाल आर्य सहित कई लोग रहे।

न्यूज ब्रीफ

एसडीएम ने सुपरवाइजर को किया सम्मानित

एसडीएम ने सुपरवाइजर को किया

मंडी धनौरा, अमृत विचार : तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी विभा श्रीवास्तव ने एसआईआर (स्पेशल समरी रिवीजन) अभियान में अच्छा प्रदर्शन करने वाले सुपरवाइजर रमेश सैनी को सम्मानित किया। एसडीएम विभा श्रीवास्तव ने बताया कि क्षेत्र में मतदाता सूची के शुद्धिकरण को पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से पूरा कराने में सुपरवाइजरों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सुपरवाइजर रमेश सैनी द्वारा अपने दस बीएलओ से शत प्रतिशत गणना प्रपत्रों का कार्य संपन्न करा लिया है। कार्य पूरा होने पर एसडीएम ने उन्हें सम्मानित किया।

खेत पर गई मां-बेटी से मारपीट, लॉकेट छीनने का आरोप, दी तहरीर

हसनपुर, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव लठीरा माफी निवासिनी मां-बेटी ने गांव के ही कुछ लोगों पर मारपीट का आरोप लगाते हुए थाना में तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव निवासिनी राखी ने बताया कि गुरुवार को वह अपनी मां के साथ खेत पर गई थी। तभी गांव के कुछ लोग लाठी-डंडों लेकर आ गए और हमला कर दिया। मारपीट में उसकी मां और वह घायल हो गई। आरोप है कि उसके गले में पड़ा सोने का ओम का लॉकेट भी छीन लिया। आरोपियों ने धमकी दी है कि उनके रूपये भी वापस नहीं करेंगे। तहरीर लेकर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

श्रद्धालुओं ने बृजघाट व तिगरी गंगा में लगाई आस्था की डुबकी

गजरौला, अमृत विचार : पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। बृजघाट और तिगरी गंगा तट पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। गंगा-स्नान कर परिवार व समाज में सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की। गुरुवार की सुबह से ही गंगा घाटों पर हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ जुटनी शुरू हो गई।

चार परिवारों की खुशियां छीन ले गया एक हादसा

घटना स्थल पर पहुंचे परिजनों ने डॉक्टरों के देखे शव तो बिलख कर रो पड़े

कार्यालय संवाददाता अमरोहा

अमृत विचार : रजबपुर क्षेत्र में बुधवार रात साढ़े दस बजे कार से निकले चारों दोस्तों ने ये नहीं सोचा था कि उनका यह सफर अंतिम सफर होगा। कार में सप्तऋषि, आयुष शर्मा, अर्नव चक्रवर्ती और श्रेयस पंचोली—हंसते हुए, अपने आने वाले कल के सपनों पर बातें कर रहे थे। पढ़ाई पूरी कर चुके थे और वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी में इंटर्नशिप कर रहे थे। भविष्य उज्ज्वल दिख रहा था। घर से दूर थे, लेकिन दोस्ती ने एक-दूसरे को परिवार का सहारा दे दिया था।

बुधवार रात लगभग साढ़े दस बजे, तेज रफ्तार में आती उनकी कार अतरासी के पास सर्विस रोड पर खड़ी डीसीएम से जा टकराई। टक्कर इतनी भीषण थी कि पल भर में हंसी चीख़ में बदल गई, सपने मलबे में दब गए और चार परिवारों की दुनिया उजड़ गई।

हादसे के बाद पुलिस और राहगीरों ने जब कार के पास पहुंचकर अंदर झांका, तो दिल दहल उठा। कार कबाड़ में बदल चुकी थी और भीतर फंसे युवकों को निकालने के लिए गैस कटर मंगाना पड़ा। रात के अंधेरे में भड़कती गैस कटर की चिंगारियों के बीच चारों के निर्जीव शरीर बाहर निकाले गए। हर एक के शरीर के साथ जैसे एक सपना भी बाहर आता जा रहा था जो अब कभी पूरा नहीं होगा।

अर्नव चक्रवर्ती। सप्तऋषि। आयुष शर्मा। श्रेयस पंचोली।

- डीसीएम में पीछे से कार ने मार थी टक्कर, कार में सवार थे चारों दोस्त

आयुष के पिता ने दी तहरीर रिपोर्ट दर्ज

आयुष के पिता महेश कुमार शर्मा ने पुलिस में तहरीर दी। डीसीएम के चालक पर मुकदमा दर्ज हुआ और वाहन को पुलिस कब्जे में ले लिया। लेकिन दुनिया जानती है। कानूनी कार्रवाई भले ही चलती रहे, पर चार परिवारों की जिंदगी में जो खालीपन इस हादसे ने पैदा किया है, उसे कोई मुकदमा, कोई सजा नहीं भर सकती। रजबपुर—अतरासी का वह मोड़ आज भी वहीं है। हाईवे पर गाड़ियां पहले की तरह दौड़ रही हैं। लेकिन उस रात की सन्नाहट, गैस कटर की चमक, परिजनों की करुण चीखें और चार सपनों की मौत उस सड़क की गूँज शायद हमेशा वहीं कहीं हवा में तैरती रहेगी। चारों युवकों की दोस्ती अब सिर्फ यादों में है—और वही यादें चार सूने घरों में एक-एक माँ की आँखों में नम होकर बह रही हैं।

शवों को देखकर बिलख पड़े परिजन

गुरुवार की सुबह चारों के परिजन अमरोहा पहुंचे। पोस्टमार्टम हाउस पर माहौल ऐसा था कि हवा भी भारी लग रही थी। जैसे ही आयुष, अर्नव और श्रेयस पंचोली के परिजनों ने उनके शव देखे एक दर्दनाक चीख गूंज उठी। एक मां के पैरों तले जमीन खिसक गई, एक पिता का सीना फटने को हो आया, बहनें भाई का चेहरा देखकर बेसुध हो गईं। किसी ने धीरे से कहा अरे ये तो कल ही वीडियो कॉल पर हंस रहा था। वहां मौजूद हर किसी की आंखें नम थीं।

रास्ते में सप्तऋषि के परिजन : सप्तऋषि के परिजन त्रिपुरा निकल चुके हैं, लेकिन अब तक यहां नहीं पहुंचे हैं। उनका बेटा अमरोहा में निर्जीव पड़ा था, और वे हजारों किलोमीटर दूर दर्द से तड़प रहे थे। देर रात तक इंतजार चलता रहा एक अंतिम दर्शन के लिए। चारों साथी आखिरी बार एक साथ सफर पर निकले थे। किसे पता था कि यह सफर जिंदगी से नहीं, मौत से मिलने का सफर बन जाएगा। पोस्टमार्टम के बाद तीनों के शव अपने-अपने घरों के लिए रवाना किए गए। सुबह तक चार घरों में दीपक बुझने की खबर पहुंच चुकी थी। जिन माता-पिता ने उन्हें बड़े अरमानों के साथ पढ़ाया था, नौकरी लगने का सपना देखा था, आज वही अपने बेटों को ताबूत में लेकर घर लौट रहे थे।

छात्रों को दी भावभीन श्रद्धांजलि

गजरौला, अमृत विचार : श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय परिवार की ओर से गुरुवार को भीषण सड़क हादसे में अपनी जान गवाने वाले अपने चार मेडिकल (इन्टर्न्स) छात्रों को श्रद्धांजली दी। इस दौरान हजारों की संख्या में स्टूडेन्टस, फैकल्टी एवं प्रबंधन के सदस्यों ने कैंडल जलाकर एवं पुष्प अर्पित कर नम आंखों से अपने प्यारे चारों साथियों को श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन किया। श्रद्धांजलि सभा में संस्थापक अध्यक्ष सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी, कुलपति प्रो. (डॉ.) कृष्ण कान्त दुबे, एडवाईजर युवराज सिंह, कुलसचिव डॉ. पीयूष कुमार पांडेय, डॉ. बीएस त्यागी, डॉ. प्रभु, डॉ. सची अहलावत, सीएफओ विकास भाटिया, एचआर हेड कुलदीप सिंह, सीए दसमीत, रंजीत मुलतानी, कुणाल सिंह, एसएस बघेल, डॉ. अश्विन सक्सेना, डॉ. आशुतोष, डॉ. थामस, डॉ. नीतू पंवार, डॉ. सुमन, विशाल, राजीव सिंह, तरुण कम्बोज, नीरज गिरि, संजीव, प्रशान्त कुमार, विवेक शर्मा, सौरभ यादव, सोमपाल, सेल्वा, शीलभद्र, शक्ति ध्वज, श्रीराम गुप्ता आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

मृतक छात्रों को श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी में श्रद्धांजलि देते लोग। • अमृत विचार

ईंटों के विवाद में छोटे भाई का सिर फोड़ा

हसनपुर, अमृत विचार: क्षेत्र के एक गांव में दो सगे भाइयों के बीच घर में पड़ी ईंटों को लेकर हुए विवाद बड़े भाई ने डंडा मार छोटे का सिर फोड़ दिया। पीड़ित घायल हालत में कोतवाली पहुंचा और आरोपी बड़े भाई के खिलाफ नाम दर्ज तहरीर दी। पुलिस ने घायल को मेडिकल के लिए सीएचसी भेजा। जहां उसका उपचार किया गया।

गुरुवार की शाम कोतवाली क्षेत्र के गांव दियावली खालसा निवासी अजीत सिंह पुत्र विशाल सिंह घायल ने पुलिस को दी तहरीर में कहा है कि घर में पड़ी ईंटों को लेकर अपने बड़े भाई से कुछ कह दिया था। इस बात से नाराज बड़े भाई ने घर में पड़ी लकड़ी की फंटी उठाकर उनके सिर पर वार कर दिया, जिससे वह लहूलुहान होकर घायल हो गए। परिजन तुरंत घायल को लेकर कोतवाली पहुंचे और मामले की शिकायत दर्ज कराई।कोतवाली में तहरीर देने के बाद घायल को तत्काल नगर के सीएचसी में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

छात्र पर दबंगों ने किया जानलेवा हमला

संवाददाता सैदनगली

- स्कूल से वापस घर जा रहा था छात्र समुन
- रास्ते में तीन स्थानों पर की पीड़ित की घेराबंदी

अमृत विचार : स्कूल से घर लौट रहे छात्र पर चार युवकों ने तीन अलग-अलग जगहों पर हमला कर दिया। इस हमले में छात्र घायल हो गया। पीड़ित छात्र ने उझारी चौकी में चार नामजद युवकों के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस जांच कर रही है।

थाना आदमपुर निवासी इरफान का बेटा समुन हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव काला खेड़ा स्थित एक स्कूल में इंटर का छात्र है। बुधवार शाम को छुट्टी होने के बाद वह स्कूल वैन से अपने घर लौट रहा था। छात्र का आरोप है कि चार युवक अपने कुछ साथियों के साथ पहले से ही स्कूल गेट पर मौजूद थे। आते ही उन्होंने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। वहां मौजूद लोगों ने बीच-बचाव कर दिया। इसके समुनबाद समुन वैन में बैठकर आगे बढ़ा। जैसे ही वैन उझारी के मोहल्ला टीपू चौक पर पहुंची, हमलावरों ने वैन को रोककर दोबारा छात्र के साथ मारपीट की। छात्र ने किसी तरह वहां से अपनी जान बचाई। इसके बाद छात्र उझारी के मोहल्ला शाही चौक पर पहुंचा, जहां इन्हीं युवकों ने उस पर बेल्ट और चाकू से हमला कर दिया। छात्र ने एक दुकान में छिपकर अपनी जान बचाई। पीड़ित छात्र ने बताया कि हमलावर उसे जान से मारने की धमकी देकर मौके से फरार हो गए। घायल छात्र समुन ने चार युवकों को नामजद करते हुए तहरीर दी है।

झूठे केस की धमकी देकर मांग रहा रंगदारी

पीड़ित एवं ग्रामीण कोतवाली गेट पर मौजूद। • अमृत विचार

संवाददाता हसनपुर

- पीड़ित परिवार के साथ कोतवाली पहुचंकर लोगों नें की शिकायत

अमृत विचार: क्षेत्र के एक गांव के ग्रामीण ने गुरुवार को कोतवाली पहुंचकर एक युवक पर झूठे मुकदमा लगाकर अवैध वसूली करने का आरोप लगाया। वही पीड़ित द्वारा कोतवाली पुलिस से आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की।

कोतवाली क्षेत्र के गांव मनौटा निवासी नासिर अली ने बताया है कि वह अपने खेत पर गांव निवासी युवक के बच्चों को फसल खराब करने से रोक रहा था। तब बच्चों के पिता ने उस पर झूठा छेड़छाड़ का मुकदमा लगवाने की धमकी देनी शुरू कर दी। अब आरोपी युवक मुकदमा वापस लेने के नाम पर रुपए मांग रहा है। बताया कि आरोपी पहले भी कई लोगों को इसी तरह फंसा कर पैसे ले चुका है। आरोपी संभल का रहने वाला है। उसके खिलाफ पहले से कई मुकदमे दर्ज हैं। गांव के लोगों ने कोतवाली पहुंचकर आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग की है। शिकायत करने वालों में सोरन सिंह, नासिर अली, शहादत अली, महेंद्र सिंह, शौकीन, खचेड़ू सिंह, दिलशाद, अजहर अली, परवेज आलम, कुर्बान अली, आदि लोग मौजूद रहे।

इंस्टाग्राम की रील ने महिला को लगाया चूना

कार्यालय संवाददाता, बिजनौर

- छोटे टास्क का पेमेंट देकर बढ़ाया भरोसा, फिर लाखों की ठगी

अमृत विचार:ऑनलाइन एप्स और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से साइबर ठगी के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। नगीना नगर की शाहीन परवीन नामक एक घरेलू महिला के साथ हुआ, जिन्हें इंस्टाग्राम पर दिखाई गई एक लुभावनी रील ने भारी आर्थिक नुकसान पहुंचा दिया।

शाहीन परवीन ने पुलिस को बताया कि इंस्टाग्राम पर उन्हें एक रील दिखाई दी, जिसमें दावा किया गया था कि ऑनलाइन टास्क पूरा करके प्रतिदिन पांच हजार से आठ हजार छह सौ पचास रुपये तक कमाए जा सकते हैं। आकर्षक कमाई देखकर उन्होंने रील में दिए गए लिंक पर क्लिक किया, जिसके बाद वह व्हाट्सएप पर लीलावती नाम के एक नंबर से जुड़ गईं। इसके बाद टेलीग्राम पर श्रीया नामक उपयोगकर्ता ने उनसे संपर्क किया और ऑनलाइन टास्क देने का दावा किया।

शुरुआत में उन्हें छोटे-छोटे रिव्यू टास्क कराए गए, जिनके लिए 180 और 1300 रुपये का भुगतान किया गया। शुरुआती पेमेंट मिलने के बाद उनका विश्वास बढ़ा और इसी भरोसे का फायदा उठाते हुए ठगों ने प्रीपेड टास्क के नाम पर अलग-अलग यूपीआई आईडी पर क्रमशः 1,000, 2,000, 10,500 और 32,500 रुपये ट्रांसफर करवा लिए।

पूर्व सांसद ने बताया एसआईआर का महत्व

शॉल भेंट करते पूर्व सांसद हरीश नागपाल। • अमृत विचार

संवाददाता गजरौला

अमृत विचार : अमरोहा के पूर्व सांसद, भाजपा नेता एवं स्वर्गीय रामदास नागपाल मेमोरियल ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष हरीश नागपाल ने अपने पुत्र जय नागपाल के साथ ई-रिक्शा चालकों एवं गरीब महिलाओं को शॉल वितरित किए। इस दौरान उन्होंने लोगों को मतदाता गहन पुनरीक्षण (सीआईआर) का महत्व समझाते हुए सीआईआर फार्म भरने का आह्वान किया। गुरुवार को पूर्णिमा के पर्व पर पूर्व सांसद हरीश नागपाल ने हाईवे किनारे स्थित एक होटल में एकत्र ई-रिक्शा, तांगा चालकों एवं निर्धन लोगों को शॉल वितरित किए। उन्होंने भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी बताया।

शक्ति ने छात्राओं को सिखाए सुरक्षा के मंत्र

सैदनगली, अमृत विचार: मिशन शक्ति 5 के विशेष अभियान के तहत थाना सैदनगली की महिला सुरक्षा दल शक्ति दीदी/बीट आरक्षी द्वारा राम सेवक मेमोरियल जूनियर हाई स्कूल, कस्बा सैदनगली में छात्राओं को जागरूक किया गया। टीम ने विद्यालय में पहुंचकर छात्राओं को सुरक्षा संबंधी जानकारी देते हुए विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों, महिला सुरक्षा उपायों तथा बढ़ते साइबर अपराधों से बचाव के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान शक्ति दीदी ने छात्राओं को पैम्पलेट वितरित किए और ऑनलाइन ठगी, सोशल मीडिया सुरक्षा आदि का मार्गदर्शन दिया। विद्यालय के प्रबंधक प्रशांत गुप्ता ने कहा कि प्रशासन द्वारा चलाया जा रहा यह विशेष अभियान विद्यार्थियों को सुरक्षा के प्रति जागरूक करेगा।

विश्व दिव्यांग दिवस को काला दिवस के रूप में मनाएंगे दिव्यांग

कार्यालय संवाददाता,बिजनौर

- विभिन्न मांगों को लेकर राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन ने किया धरना प्रदर्शन
- दिव्यांग अधिकार अधिनियम 2016 को सभी प्रावधानों में लागू करने की मांग

अमृत विचार : राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन ने शहर स्थित नुमाइश मैदान में बैठक की। बैठक के बाद सभी रैली निकालते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां डीएम कार्यालय पहुंचकर घेराव किया। इसके साथ ही विभिन्न मांगों को लेकर डीएम को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने कहा कि दिव्यांग जन विश्व विकलांग दिवस को काला दिवस के रूप में मनाएंगे।

इस मौके पर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एमआर पाशा कहा कि देश में 11 करोड़ से अधिक दिव्यांगजन हैं। लेकिन उन्हें अब तक सरकारी सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। इसलिए एसोसिएशन ने निर्णय लिया है कि विश्व विकलांग दिवस को काला दिवस के रूप में मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि शासन और प्रशासन दिव्यांगजनों की समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रहा है। उन्होंने दिव्यांग आयोग का गठन करनें, देश में जिला स्तर पर दिव्यांग भवन बनवानें, दिव्यांगजनों को 4 प्रतिशत के स्थान पर 10 प्रतिशत का आरक्षण दिए जाने समस्त परिवाहन में किराया में छूट दिए जाने समेत कई मांगे की। इस मौके पर इस मौके पर आजम अंसारी, गुरबचन सिंह, मास्टर शहजाद गोविंदपुर वाले, नकुल कुमार, सुशील कुमार, विदेश कुमार, गजेंद्र सिंह, मोहम्मद शाकिर, अमित कुमार, ॠषिपाल सिंह, तुलसी सिंह, शमशेर आदि उपस्थित रहे।

धरना पर बैठे दिव्यांगजन। • अमृत विचार

गोवंशीय अवशेष मिलने पर हंगामा

संवाददाता गजरौला

अमृत विचार: गोवंशीय पशु के अवशेष मिलने पर बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने जमकर हंगामा किया। आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। मौके पर पहुंची पुलिस ने कार्यकर्ताओं को कार्रवाई करने का आश्वासन देकर शांत कराया।

शहर के निकट स्थित चाकीखेड़ा मंदिर के निकट एक गोवंशीय पशु बीमार था। इसकी सूचना बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को बुधवार को किसी ने दी थी। गुरुवार को कार्यकर्ता मौके पर पहुंचे तो वहां गोवंशीय पशु के अवशेष पड़े मिले। यह देख उन्होंने पशु की हत्या करने का आरोप लगाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची तथा आसपास मौजूद लोगों से घटना के बारे में जानकारी की। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने पुलिस से इस मामले में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ जल्द ही कार्रवाई करने की मांग की। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार ने कार्यकर्ताओं को किसी तरह समझाकर शांत कराया। हंगामा करने वालों में प्रांत गोरक्षा प्रमुख पश्चिमी उत्तर प्रदेश हेमंत शर्मा, अशोक सैनी, तेंजेंद्र, ललित जयंत, शनी, दीपक मौजूद रहे।

गोवंशीय अवशेष मिलने के बाद मौके पर मौजूद पुलिस व लोग। • अमृत विचार

- मौके पर पहुंची पुलिस ने की मामले की जांच

कोचिंग सेंटर पर छात्रा का हंगामा, लगा जाम

संवाददाता हसनपुर

- केंद्र संचालक ने छात्रा के खिलाफ दी तहरीर

अमृत विचार: नगर के बाईपास स्थित एक कोचिंग सेंटर पर गुरुवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब कोचिंग पढ़ने वाली छात्रा ने सेंटर पर जमकर हंगामा कर दिया। छात्रा के जोर-जोर से चिल्लाने और आरोप लगाने के कारण आसपास के लोग मौके पर जमा हो गए।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, छात्रा कोचिंग सेंटर के अंदर से बाहर आई और जोर-जोर से गलत काम किए जाने का आरोप कोचिंग सेंटर संचालक पर लगाना शुरू कर दिया। छात्रा के इस तरह हंगामा करने से कोचिंग सेंटर के बाहर भीड़ जुट गई। काफी देर तक हंगामा होता रहा। सूचना मिलने पर कुछ लोग सेंटर के अंदर भी गए। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं हो सका कि छात्रा ने किसके ऊपर और किस प्रकार के गलत काम का आरोप लगाया है। केंद्र संचालक ने हंगामा कर रही छात्रा के खिलाफ कोतवाली में तहरीर दे दी। जैसे ही तहरीर देने की बात छात्रा को पता लगी तो गुरुवार की दोपहर बाद फिर से सेंटर पर पहुंच गई और हंगामा करने लगी। कुछ लोगों के संचालक व छात्र का समझौता कर दिया गया। इस संबंध में जब कोतवाली प्रभारी प्रेमपाल सिंह से संपर्क किया गया, तो उन्होंने बताया कि मामला उनके संज्ञान में नहीं आया है और न ही किसी पक्ष द्वारा अभी तक कोई शिकायत तहरीर दी गई है।

किसानों के उत्पीड़न पर हुई चर्चा

गजरौला, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन संयुक्त मोर्चा की गांव नागलिया बहादुरपुर में जिला अध्यक्ष राहुल सिद्धू के आवास पर गुरुवार को पंचायत का आयोजन हुआ। जिसमें किसानों की समस्याओं पर विचार व्यक्त किए और उनके निराकरण पर चर्चा की गई। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश चौधरी, जिला अध्यक्ष राहुल सिद्धू और प्रदेश अध्यक्ष राम कृष्ण चौहान विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पीतम सिद्धू को जिला संगठन मंत्री अरुण चौधरी को युवा जिला उपाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया।

कार्यालय सम्पत्ति प्रबन्ध
(मुरादाबाद/चन्दौसी/अमरोहा/बिजनौर)
उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद
IS15700 : 2018 सेवोत्तम प्रमाणित — भारतीय मानक ब्यूरो IS 15700
ऑफिस कॉम्प्लेक्स (भूतल), सेक्टर-5, मझोला योजना सं. 4, भाग-2, मुरादाबाद E-mail: emombd@upavp.com

पत्र सं. 2088/स.प्र.-मुरादाबाद/ **सर्वसाधारण को सूचना** दिनांक : 04.12.2025

परिषद की सिविल लाइंस योजना, मुरादाबाद में स्थित मध्यम आय वर्ग भवन संख्या-147 श्री प्रकाश नरायन टंडन पुत्र स्व0 श्री मथुरा प्रसाद टंडन के पक्ष में आवंटित है। जिसका उन्होने अनुबन्ध कराकर दिनांक 12.02.1976 को भौतिक कब्जा प्राप्त कर लिया था। श्री प्रकाश नरायन टंडन ने दिनांक 03.02.1991 को अपने पुत्र श्री नरेश नरायन टंडन के पक्ष में अपंजीकृत वसीयतनामा किया था। श्री नरेश नरायन टंडन ने अपने प्रार्थना पत्र द्वारा अपने पिता श्री प्रकाश नरायन टंडन की मृत्यु दिनांक 30.09.1993 को होने का मृत्यु प्रमाण पत्र एवं वसीयतनामा की प्रति प्रस्तुत करते हुए भवन का नामान्तरण अपने नाम में करने का अनुरोध किया है। अपंजीकृत वसीयतनामा को मा0 सक्षम न्यायालय से प्रोवेट कराने हेतु सूचित करने पर श्री नरेश नरायन टंडन ने उक्त अपंजीकृत वसीयतनामा को मा0 सक्षम न्यायालय द्वारा प्रोवेट किये जाने का आदेश दिनांक 07.11.2025 कार्यालय में प्रस्तुत किया है।
यदि इस नामान्तरण में किसी को कोई आपत्ति है तो वह इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति साक्ष्य सहित सम्पत्ति प्रबन्ध कार्यालय, उ0प्र0 आवास एवं विकास परिषद, ऑफिस कॉम्प्लेक्स (भूतल), सेक्टर-5, मझोला योजना संख्या-4, भाग-2, मुरादाबाद में प्राप्त करा सकता है। निर्धारित तिथि के पश्चात् कोई क्लेम/आपत्ति मान्य न होगी तथा नियमानुसार नामान्तरण संबंधी कार्यवाही की जायेगी।
आज्ञा से- सम्पत्ति प्रबन्धक

उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
UMMEED HOUSING FINANCE — We bring your dreams to life
पंजीकृत कार्यालय: यूनिट 2009-14, 20वीं मंजिल, टॉवर - 2, मैग्नम ग्लोबल पार्क गोल्फ कोर्स एक्सटेंशन रोड, सेक्टर-58, गुरुग्राम (हरियाणा)-122002
CIN: U64990HR2016PTC057984

परिशिष्ट IV [नियम 8(1) देखें] कब्ज़ा नोटिस

जबकि, अधोहस्ताक्षरी ने **उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड** के अधिकृत अधिकारी होने के नाते "वित्तीय संपत्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित का प्रवर्तन (अधिनियम, 2002 (2002 का 54)) और सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 की [नियम 3] के साथ पठित धारा 13(12) के तहत, प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार उधारकर्ता/ओं को मांग नोटिस जारी किया गया है, जिसमें संबंधित उधारकर्ताओं से उक्त नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर भुगतान की वास्तविक तिथि तक सभी लागतों, शुल्कों और खर्चों के साथ नोटिस में उल्लिखित राशि चुकाने का आह्वान किया गया है।
उक्त उधारकर्ता/सह-उधारकर्ता/गारंटर/बंधककर्ता द्वारा राशि चुकाने में विफल रहने पर, ऋणकर्ता//सह-उधारकर्ता/गारंटर/बंधककर्ता और सामान्य रूप से जनता को नोटिस दिया जाता है कि अधोहस्ताक्षरी ने सुरक्षा हित प्रवर्तन नियम, 2002 के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (4) के तहत उसे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वर्णित संपत्ति का **प्रतीकात्मक कब्जा** निचे दी गई तिथि को ले लिया है।
एतद् द्वारा विशेष रूप से उधारकर्ता/सह-उधारकर्ता/गारंटर/बंधककर्ता और सामान्य रूप से जनता को आगाह किया जाता है कि वे संपत्ति के साथ लेनदेन न करें और संपत्ति के साथ लेनदेन उसमें निर्दिष्ट राशि के लिए पूर्ण भुगतान तक संबंधित तिथियों से अतिरिक्त ब्याज, लागत और शुल्क सहित **उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड** के अधीन होगा।
सुरक्षित संपत्तियों को छुड़ाने के लिए उपलब्ध समय के संबंध में, उधारकर्ता का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के प्रावधान की ओर आकर्षित किया जाता है।
उधारकर्ताओं, सह-उधारकर्ताओं और गारंटरों, प्रतिभूतियों, बकाया देयताओं और धारा 13(2) के तहत भेजे गए डिमांड नोटिस और उसके तहत दावा की गई राशि और कब्जे की तारीख का विवरण निम्नानुसार दिया गया है:

उधारकर्ता का नाम और पता, सह-उधारकर्ता गारंटर ऋण खाता संख्या और ऋण राशि	मांग सूचना दिनांक	प्रतीकात्मक कब्जे की तिथि
1. आकाश कुमार पुत्र कुँवर सैन (उधारकर्ता) 2. माया पत्नी कुँवर सैन (सह-उधारकर्ता) 3. कुँवर सैन पत्नी फग्गन लाल (सह-उधारकर्ता) उपरोक्त सभी निवासी-मोहल्ला भीमपुरी, तहसील टांडा चक नंबर 19, बादली, रामपुर, उत्तर प्रदेश-244925 ऋण संख्या LXKAS04122-230020624 ऋण अनुबंध दिनांक-23-नवम्बर-2022 ऋण राशि रु. 5,25,000	08-सितंबर-2025	03-दिसम्बर-2025
	देय राशि रुपये में. ₹ 4,75,917/- (रुपये चार लाख पचहत्तर हजार नौ सौ सत्रह मात्र) 08-सितंबर-2025 तक + अतिरिक्त ब्याज और अन्य शुल्क 09-सितंबर-2025 से	

सुरक्षित संपत्ति का विवरण :- संपत्ति का समस्त अंश एवं खंड जिसका मकान नंबर 1000/440/1/4/1 चक नंबर 21, क्षेत्रफल 172 वर्ग। मीटर. मोहल्ला नवाबपुर में स्थित, परगना और **तहसील टांडा, जिला-रामपुर, उत्तर प्रदेश, सीमाएँ: पूर्व-**सड़क 12 फीट और नहर, **पश्चिम-**राम किशन का घर, **उत्तर-**सड़क 6 फीट, **दक्षिण-**मुकंद राम का घर।

दिनांक: 05-दिसम्बर-2025 — प्राधिकृत अधिकारी श्री गौरव त्रिपाठी मोबाइल- 9650055701
स्थान: गुरूग्राम, हरियाणा — उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्रा. लिमिटेड

कार्यालय सहायक निबन्धक फर्म्स, सोसाइटीज एवं चिट्स मुरादाबाद मुण्डल मुरादाबाद

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हरदेव सिंह द्वारा संस्था गुरूद्वारा श्री गुरूनानक सिंह सभा समिति, ग्राम रास डंडिया जिला रामपुर का अध्यक्ष दर्शाते हुये संस्था के पंजीकरण हेतु निर्धारित शुल्क व प्रपत्र प्रस्तुत किये गये है। प्राप्त अभिलेखों के अनुसार सर्वश्री 1. बलकार सिंह-प्रधान 2. हरदेव सिंह - अध्यक्ष, 3. जोगा सिंह- उपाध्यक्ष, 4. बलविन्दर सिंह- सेकेट्री/सचिव 5. गुरबाज सिंह- कोषाध्यक्ष 6. परगट सिंह 7. सुरेन्द्र सिंह 8. गुरूदेव सिंह 9. सुखविन्दर सिंह 10. हरपाल सिंह 11. मनजीत सिंह 12. गुरूदेव सिंह 13. गुरदीप सिंह- सदस्य दर्शाये गये हैं। अतः यदि किसी व्यक्ति को उक्त संस्था के पंजीकरण पर आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर प्रस्तुत कर सकता है। निर्धारित तिथि के पश्चात् आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। और गुण-दोष के आधार पर संस्था के पंजीकरण सम्बन्धी कार्यवाही सुनिश्चित कर ली जायेगी। विदित हो कि उक्त नोटिस सो.रजि.एक्ट 1860 की धारा 3(1) के अन्तर्गत जारी किया जा रहा है।

आनन्द विक्रम सिंह
सहायक निबन्धक

अमृत विचार

मुरादाबाद, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

ममता सिंह की अमेरिका में काउंसिल पद पर जीत से ननिहाल में जश्न

बबराला, अमृत विचार : अमेरिका के जर्सी सिटी में काउंसिल एट-लार्ज सीट पर जीत दर्ज कर भारतीय मूल की ममता सिंह ने इतिहास रच दिया है। चुनाव परिणाम आने के बाद से ही उनकी ननिहाल बबराला में जश्न का माहौल है। नगर निवासी सेवानिवृत्त प्रवक्ता रतन सिंह की बहन भाग्य कुमारी की पुत्री ममता करीब 17 वर्षों से अमेरिका में रह रही हैं। जर्सी सिटी में वे 'जर्सी फैमिली' नाम से इवेंट कंपनी का संचालन करती हैं, जबकि उनके पति एक निजी कंपनी में वाइस प्रेसीडेंट हैं। ममता सिंह के फुफेरे भाई गोविंद सिंह ने बताया कि दो दिसंबर को घोषित हुए चुनाव परिणाम में ममता सिंह की जीत हुई है। ममता की जीत की जानकारी मिलने पर बबराला में परिजन जश्न मना रहे हैं।

ममता सिंह।

कुत्ते के हमले से बुजुर्ग बुरी तरह से घायल

चंदौसी, अमृत विचार : गांव भुलावई निवासी हिमचल पुत्र चंद्रसेन अपने धेवते उमेश की बाइक से चंदौसी नाती चंद्रगुप्त की शादी की खरीदारी करने आ रहे थे। दोपहर करीब एक बजे जब वे गांव में स्थित सरकारी गौशाला के पास पहुंचे, तभी अचानक पीछे से आए कुत्ते ने बुजुर्ग के बाएं पैर पर जोरदार काट लिया। परिजनों ने आनन-फानन में उन्हें बाइक से ही चंदौसी सीएचसी पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार शुरू किया।

चंदवार की मढ़ैया में कीचड़ को लेकर भड़के लोग

असमोली, अमृत विचार : थाना असमोली क्षेत्र के ग्राम चंदवार की मढ़ैयां की गलियों और मुख्य मार्गों पर फैले कीचड़ से ग्रामीणों का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। लंबे समय से सफाई न होने, मार्गों की मरम्मत कार्य रुके रहने और समस्याओं की अनदेखी से गुरुवार को ग्रामीणों का रोष खुलकर सामने आया। लोगों ने ग्राम प्रधान पर विकास कार्यों को ठप रखने और शिकायतों को नजरअंदाज करने का आरोप लगाया। तनवीर, मयूर खान, नासिर, इमरान, फरमान, आस मोहम्मद, आरिफ, शाने आलम, बाबू, मेहंदी हसन मोहम्मद, सैफ अली, गुलाम मोहम्मद आदि शामिल रहे।

संस्कृति पर हुए अनेक प्रहार, पर सनातन अडिग:रामभद्राचार्य

कल्कि पुराण कथा का चौथा दिन, स्वामी रामभद्राचार्य का प्रखर संदेश-सनातन कभी झुकेगा नहीं, काफी गहरी हैं सनातन धर्म की जड़ें

कार्यालय संवाददाता, संभल

- कहा-कल्कि धाम के लोकार्पण के अवसर पर करेंगे कल्कि पुराण का पूर्णत: शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत
- व्यक्ति को अपने वंश, अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने परिवेश पर गर्व होना चाहिए

कथा के दौरान आरती में शामिल कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य व अन्य अतिथि।

अमृत विचार: संभल के ऐंचोड़ा कंबोह स्थित कल्कि धाम में चल रही विश्व की पहली कल्कि पुराण कथा के चौथे दिन बुधवार को विशाल पंडाल में बैठे श्रद्धालुओं के बीच जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करने के अनेक प्रयास इतिहास में हुए, लेकिन सनातन धर्म आज भी अडिग खड़ा है और आगे भी अडिग रहेगा। कहा कि सनातन धर्म कभी जातिवादी नहीं रहा।

स्वामी रामभद्राचार्य ने नालंदा विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि जब राक्षसी विचारधारा वाले आक्रमणकारियों ने नालंदा के विशाल पुस्तकालय में आग लगाई, तो वह आग छह महीने तक जलती रही। इस आग में अनगिनत प्राचीन धर्मग्रंथ भस्म हो गए, जिनमें से कई अब कभी नहीं मिल सकते। उन्होंने कहा कि कल्कि पुराण के अनेक श्लोक भी समय के साथ लुप्त हो गए थे, जिन्हें ब्राह्मणों ने अपनी स्मृति से पुनः लिखा और आज 35 अध्यायों का कल्कि पुराण उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि कल्कि धाम के लोकार्पण के अवसर पर वह कल्कि पुराण का पूर्णतः शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत करेंगे, ताकि भावी पीढ़ियों को शास्त्रों का वास्तविक ज्ञान मिल सके। स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर जितने प्रहार राक्षसी प्रवृत्ति वालों ने किए, उतने किसी अन्य संस्कृति पर नहीं हुए। भारतीय पुराण, इतिहास और संस्कृति को जितना नुकसान पहुंचाया गया, वह किसी भी सभ्यता के लिए सहन करना कठिन है। किंतु सनातन धर्म की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह कभी नष्ट नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा कि जो सनातन धर्म मोहम्मद गौरी, महमूद गजनवी, चंगेज खान, मुगल शासन की कूटनीति और अंग्रेजों के षड्यंत्रों के बावजूद नहीं मिटा, वह आगे भी अक्षुण्य रहेगा। 2014 से पहले की सरकारों की तुष्टिकरण नीति भी सनातन धर्म को कमजोर नहीं कर सकी। कल्कि अवतार के संदर्भ में उन्होंने कहा कि शास्त्रों में वर्णित कंबोज क्षेत्र पंजाब के दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है और दो गंगाओं के मध्य बसा है।

यह स्थान कल्कि भगवान का ननिहाल बताया गया है। उन्होंने कहा कि कल्कि की माता को 'कन्या' बताना शास्त्र सम्मत नहीं है, क्योंकि वे विवाहित और सधवा हैं। उनके पति का नाम विष्णु यश है। स्वामी रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि भगवान को समय, दिशा और स्थान में बांधा नहीं जा सकता। भगवान थे, भगवान हैं और भगवान रहेंगे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करते हुए कहा कि अत्याचार और अनाचार की सीमाएं आज पार हो चुकी हैं। जब कलियुग में भाई बहन से विवाह कर ले और पिता पुत्री पर बुरी नजर डाले, तब समझ लो कि भगवान के अवतार की आवश्यकता है। उन्होंने भक्ति और आह्वान से भरी पंक्तियां गाईं- आओ जगत उद्धार को अवतार लो, देखो गैया कट रही, धरती पट रही, भारत का भाग्य संवार लो, अवतार लो। इसके बाद जब स्वामी रामभद्राचार्य महाराज ने- जय जय कल्कि, जय संभल धाम, जय जय सीताराम, जय जय राधेश्याम। भजन गाया तो पंडाल में बैठे श्रद्धालु झूमने लगे। कथा के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। पूरे परिसर में भक्ति, उत्साह और आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण बना रहा।

जाति के आधार पर आरक्षण खत्म करे सरकार: जगदगुरु

संभल, अमृत विचार : जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि सनातन धर्म कभी जातिवादी नहीं रहा। समाज से जातिवाद दूर करना है तो सरकार जाति के आधार पर चलाए जा रहे आरक्षण को खत्म कर आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करे। इस बात के समर्थन के लिए वह सबसे पहले तैयार हैं।संभल के ऐंचोड़ा कंबोह कल्कि धाम में विश्व की पहली श्री कल्कि कथा पुराण वाचन के चौथे दिन स्वामी रामभद्राचार्य महाराज ने सनातन पर जातिवाद का आरोप लगाने वालों को आड़े हाथ लिया। कहा कि राक्षसों ने भारतीय संस्कृति की जितनी हानि हो सकती थी उतनी हानि की है। पुराणों में भी जितना हो सका छेड़छाड़ की। इसके बाद ही अर्थ का अनर्थ कर धर्म को हानि पहुंचाने की साजिश के तहत जातिवादी होने जैसे आरोप मढ़े गये। रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि व्यक्ति को अपने वंश, अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने परिवेश पर गर्व होना चाहिए। वह विशिष्ट गोत्र से हैं इस बात का उन्हें गर्व है।

रामभद्राचार्य महाराज का अभिवादन करते आचार्य प्रमोद कृष्णम। ● अमृत विचार

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने एसआईआर को लेकर सरकार को घेरा

कार्यालय संवाददाता, संभल

कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय। ● अमृत विचार

- मृतक बीएलओ अरविंद के परिजनों से मिले अजय राय

अमृत विचार: कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय संभल के चौकुनी गांव में ने बीएलओ अरविंद के घर पहुंचे जिसकी दो दिन पहले मौत हो गई थी। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने परिवार को सांत्वना देने के साथ ही सरकार व चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पूरे देश के 12 राज्यों में एसआईआर चल रही है और जिस तरह का अत्याचार और अन्याय हो रहा है, वह चुनाव आयोग और भाजपा सरकार की मिलीभगत से हो रहा है।

चौकुनी पहुंचे अजय राय ने कहा कि एक हंसता-खेलता परिवार अनाथ हो गया है। वह जौनपुर, देवरिया, मुरादाबाद, लखनऊ, बरेली सहित कई जिलों में ऐसे ही मामले देख चुके हैं और हर जगह कर्मचारियों पर दबाव की स्थिति दिखाई दे रही है। कहा कि मृतक बीएलओ अरविंद की बूढ़ी मां, पत्नी और दो छोटे बच्चों की हालत देखकर समझा जा सकता है कि परिवार किस गहरे सदमे से गुजरा है। उन्होंने कहा कि पहले सरकारी नौकरी मिलने पर परिवार खुश होता था, लेकिन अब यह नौकरी अभिशाप बनती जा रही है। सरकार और चुनाव आयोग इन मौतों के सीधे जिम्मेदार हैं। उन्होंने सरकार से मांग की कि परिवार को एक करोड़ रुपये का मुआवजा दिया जाए, दोनों बच्चों की पढ़ाई की पूरी व्यवस्था की जाए और पत्नी को सरकारी नौकरी दी जाए। एसआईआर के लिए तीन या छह महीने का समय दिया जाना चाहिए।

जनसेवा केंद्र से नकदी और मोबाइल चोरी

कैला देवी/संभल, अमृत विचार: कैला देवी थाना क्षेत्र के मुजाहिदपुर गांव में बुधवार की मध्य रात्रि चोरों ने जन सेवा केंद्र को निशाना बनाते हुए दुकान से नकदी और मोबाइल सहित हजारों रुपये का सामान चोरी कर लिया। घटना से क्षेत्र में हड़कंप मच गया।

मुजाहिदपुर निवासी जितेंद्र पुत्र हरपाल सिंह का गांव में ही जन सेवा केंद्र संचालित है। रोजाना की तरह बुधवार रात वह दुकान बंद करके घर चले गए। गुरुवार सुबह जब वह दुकान पहुंचे तो देखा कि शटर का ताला टूटा हुआ थाऔर अंदर काफी सामान बिखरा पड़ा था। जांच करने पर पता चला कि दुकान में रखी करीब 47 हजार रुपये की नकदी और दो मोबाइल फोन गायब थे। चोरी की खबर फैलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। पीड़ित जितेंद्र ने थाने पहुंचकर अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर देते हुए कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

भारत है सनातनियों की भूमि

कार्यालय संवाददाता, संभल

ऐंचोड़ा कंबोह कल्कि धाम में पूजा अर्चना करते स्वामी कैलाशानंद गिरी।

- कल्कि पुराण कथा में पहुंचे निरंजनी अखाड़ा के महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी

अमृत विचार: ऐंचोड़ा कंबोह स्थित कल्कि धाम में आयोजित विश्व की पहली कल्कि पुराण कथा के कार्यक्रम में पहुंचे निरंजनी अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी ने कहा कि भारत सनातनियों की भूमि है और यह देश सनातनियों का ही रहेगा। भारत में रहने वाले सभी लोगों का सम्मान है, सभी को यहां रहने का पूरा अधिकार है, लेकिन राष्ट्र और धर्म की गरिमा के आगे सभी को झुकना पड़ेगा।

स्वामी कैलाशानंद गिरी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि जो कल्कि भगवान को स्वीकार करेगा वही उनके संरक्षण में रहेगा। उन्होंने अपील की कि लोग सनातन धर्म को स्वीकार करें या कम से कम उसकी जयकार तो करें। कल्कि धाम में शिला पूजन को लेकर कहा कि यह स्थल देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पूजित भूमि है और आज यह धाम पूरे विश्व में चर्चा का केंद्र बना हुआ है। यह धाम आने वाले समय में भारतीय परंपराओं को नई ऊर्जा देगा। उन्होंने कहा कि यह केवल आचार्य प्रमोद कृष्णम का धाम नहीं, बल्कि सभी सनातनियों का धाम है और इसकी उन्नति तथा विस्तार में सभी की आस्था जुड़ी है। कल्कि महोत्सव को न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व के सनातनी देख रहे हैं। इस आयोजन से सनातनियों को एक नई प्रेरणा, नई शक्ति और आत्मविश्वास प्राप्त होगा। स्वामी कैलाशानंद गिरी ने कहा कि जब भी किसी दिव्य कार्य का प्रारंभ होता है तो विघ्न अवश्य आते हैं, जैसे भगवान राम, कृष्ण और अब कल्कि अवतार के संदर्भ में वर्णित है। जो बाधाएं उत्पन्न होती हैं, उन्हें दूर कर धर्म की विजय होती है।

ट्रक ने ईको में मारी टक्कर, दो गंभीर घायल

संवाददाता, रजपुरा

रजपुरा में हादसे के बाद क्षतिग्रस्त कार।

अमृत विचार: रजपुरा थाना क्षेत्र के कस्बा रजपुरा के मुख्य चौराहे पर गुरुवार तड़के तेज रफ्तार ट्रक ने एक ईको में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में कार में सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि ट्रक चालक मौके से फरार हो गया।

घटना सुबह करीब 5:30 बजे गवां-बबराला मार्ग पर स्थित मुख्य चौराहे की है। बताया जाता है कि तेज रफ्तार में आ रहे ट्रक ने इको कार को सामने से टक्कर मारते हुए करीब 20 मीटर तक घसीटा। अचानक हुए हादसे से आसपास के लोग दहशत में आ गए। इको कार में जनपद शाहजहांपुर के ककरौआ निवासी प्रेमदास और उदयवीर सवार थे। दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। दुर्घटना में इको कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। घटना के बाद स्थानीय राहगीरों ने पहुंचकर घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रजपुरा पहुंचाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। पुलिस ने फरार ट्रक चालक की तलाश शुरू कर दी है।

ई रिक्शा की वजह से टकराये चार वाहन

संवाददाता, सौंधन

संभल में गवां मार्ग पर हादसे के बाद लगी वाहनों की कतार। ● अमृत विचार

- हादसे के चलते काफी देर तक बाधित रहा यातायात

कैला देवी थाना क्षेत्र के रायपुर में गुरुवार तड़के करीब चार बजे सड़क किनारे खड़े एक ई-रिक्शा से शुरू हुई दुर्घटना ने देखते ही देखते तीन और वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में ई-रिक्शा सहित चारों वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। वाहनों की टक्कर के बाद काफी देर तक सड़क पर यातायात थमा रहा।

शलजम लेकर जा रहा ई-रिक्शा चालक ठंड अधिक होने के कारण बस स्टैंड पर जल रही आग के पास ई-रिक्शा सड़क किनारे खड़ा कर ताप रहा था। इसी दौरान गवां निवासी फिरोज मैक्स लेकर संभल की ओर जा रहा था। धुंध और तेज रफ्तार के बीच मैक्स खड़े ई-रिक्शा से जा टकराई, जिससे ई-रिक्शा पलट गया और उसके परखच्चे उड़ गए। मैक्स के पीछे आ रहा आलुओं से भरा केंटर भी अचानक ब्रेक नहीं लगा पाया और मैक्स में जोरदार टक्कर मार दी। दूसरी ओर संभल की तरफ से मोटरसाइकिल पार्ट्स लेकर फरीदाबाद जा रहा दूसरा केंटर, सामने हुए हादसे को देखते हुए बचने के प्रयास में सड़क किनारे लगे बिजली के पोल से जा भिड़ा। टक्कर की आवाज सुनकर मौके पर अफरा-तफरी मच गई और स्थानीय लोग बड़ी संख्या में जमा हो गए। दुर्घटनाओं की श्रृंखला के बाद ई-रिक्शा चालक मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने हाइड्रा की मदद से सभी क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाकर यातायात सुचारू कराया। थाना प्रभारी सौरभ त्यागी ने बताया कि हादसे में ई-रिक्शा पूरी तरह चकनाचूर हो गया है, जबकि एक मैक्स और दो केंटर भी क्षतिग्रस्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि सौभाग्य से इस श्रृंखलाबद्ध दुर्घटना में कोई जानमाल की हानि नहीं हुई है।

खेत से ट्रैक्टर निकालने पर दो पक्षों में मारपीट

बबराला, अमृत विचार: गुन्नौर कोतवाली क्षेत्र के गांव सिरौरा काजी में गुरुवार सुबह खेत से ट्रैक्टर निकालने को लेकर दो पक्षों में झगड़ा हो गया। विवाद बढ़ा तो लाठी-डंडे चल गए। मारपीट में दोनों ओर के करीब दर्जनभर लोग घायल हो गए। पुलिस ने सभी घायलों को अस्पताल भेजा, जहां तीन की हालत गंभीर होने पर हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

पातीराम के सरसों के खेत से खुशीराम ट्रैक्टर निकाल रहे थे। इसी पर दोनों पक्षों में कहासुनी हो गई और फिर मारपीट शुरू हो गई। मारपीट में सत्यपाल, श्रीपाल, रघुनन्दन, सोनू, पातीराम, प्रेम सिंह, धीरेन्द्र, सुरेश, गजेन्द्र व खुशीराम सहित बारह लोग घायल हो गए। थाना प्रभारी अखिलेश प्रधान ने बताया कि घायलों को सीएचसी भेजा गया है।

मुझे नुकसान पहुंचाने की साजिश: डा. उठवाल

- भड़काऊ भाषण देकर माहौल बिगाड़ने का आरोप
- षड्यंत्र का पर्दाफाश होना आवश्यक है

संभल, अमृत विचार: वरिष्ठ अधिवक्ता एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी सूचना का अधिकार विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार उठवाल ने आरोप लगाया कि 40 वर्षों से आचार्य प्रमोद कृष्णम राजस्व विभाग की सरकारी भूमि पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस अवैध कब्जे की शिकायत उन्होंने लगातार सरकार और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों को पत्र भेजकर की तो आचार्य प्रमोद कृष्णम बौखलाकर उन्हें नुकसान पहुंचाने की साजिश रच रहे हैं।

कहा कि उन्होंने फिरोज खान नाम के व्यक्ति से उनके खिलाफ झूठी तहरीर दिलवाई। उन पर फोन पर जान से मारने की धमकी और भड़काऊ भाषण देकर माहौल बिगाड़ने का आरोप लगाया गया है।

उन्होंने जांच अधिकारी से आग्रह किया है कि संबंधित मोबाइल नंबर और आवाज की जांच कर कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि वह जांच में पूरा सहयोग करेंगे। षड्यंत्र का पर्दाफाश होना आवश्यक है। डॉ. उठवाल ने कहा कि पुलिस और प्रशासन उनकी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था करे।

चंदौसी में अतिक्रमण हटाने को चला अभियान

संवाददाता, चंदौसी

अतिक्रमण हटाती पालिका की टीम व मौजूद पुलिस बल। ● अमृत विचार

- दुकानदारों को टीम खओ दी गई कड़ी चेतावनी

अमृत विचार: बृहस्पतिवार की दोपहर नगर पालिका और पुलिस प्रशासन की संयुक्त टीम ने चंदौसी शहर में अतिक्रमण को हटाने के लिए विशेष अभियान चलाया। अभियान के दौरान ठेला-रेहड़ी वालों को पीछे कराने के साथ ही दुकानदारों को कड़ी चेतावनी दी गई कि दो दिन के भीतर फुटपाथ पूरी तरह खाली कर दें, अन्यथा कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

नगर पालिका ईओ धर्मराज राज, सीओ मनोज कुमार सिंह, कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मोहित चौधरी पुलिस बल और जेसीबी मशीन के साथ फव्वारा चौक, मुरादाबाद गेट, हुसैनी बाजार, बड़ा बाजार और घंटाघर तक अभियान चलाया गया।

टीम ने सड़क और नाले पर किए गए अतिक्रमण को हटाया। जेसीबी के जरिए नाले के आगे फैलाए गए कब्जों को ध्वस्त किया गया। अभियान के दौरान कई दुकानदारों के चालान काटे गए और फुटपाथ पर रखा सामान जब्त करने की चेतावनी भी दी गई।

अधिकारियों ने साफ कहा कि तय समय में अतिक्रमण नहीं हटाया गया तो नगर पालिका टीम फुटपाथ पर रखा सामान जब्त कर सख्त कार्रवाई करेगी। अतिक्रमण हटाने के दौरान कई दुकानदार विरोध करते हुए नोकझोंक करते हुए सामने आये लेकिन टीम ने अपना काम जारी रखा।

सड़क हादसे में बाइक सवार चौकीदार की मौत

संभल/कैला देवी, अमृत विचार: कैला देवी थाना क्षेत्र के रझेड़ा सलेमपुर गांव के निकट गुरुवार देर शाम एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। अज्ञात वाहन ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

खनुपुरा गांव निवासी राकेश (45) पुत्र पीतंबर किसी काम से संभल गए हुए थे। वापस लौटते समय संभल-गव् मार्ग पर रझेड़ा सलेमपुर के पास तेज रफ्तार वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के समय राकेश ने हेलमेट नहीं पहना हुआ था, जिसके चलते सिर में गंभीर चोट लगने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई। ग्रामीणों ने घटना को देखकर तत्काल डायल 112 को सूचना दी। सूचना पर पुलिस टीम पहुंची और थोड़ी देर बाद थाना प्रभारी सौरभ त्यागी भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर उसे जिला अस्पताल की मोर्चरी भेज दिया। मृत्यु की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। बताया जाता है कि राकेश गांव में पुलिस चौकीदार के रूप में कार्यरत थे।

ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार तीन घायल

बहजोई, अमृत विचार : बहजोई के गांव आनंदपुर निवासी विवेक पु अपने साथी लखन सिंह व सोनू के साथ बाइक पर किसी काम से गांव अकबरपुर गए थे। रात्रि 7:30 बजे के लगभग में अपनी बाइक पर सवार होकर घर वापस लौट रहे थे।जैसे ही वह गांव अकबरपुर से निकले तो सामने से आ रहे ट्रैक्टर ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे तीनों बाइक सवार घायल होकर सड़क पर गिर गए। उधर से गुजर रहे राहगीरों ने जब उन्हें घायल होता देखा तो इसकी सूचना एंबुलेंस 108 को दे दी।

खेलों में बच्चों ने दिखाया अपना दम

चंदौसी, अमृत विचार: सीता आश्रम रोड स्थित नगर के प्रतिष्ठित आरआरके स्कूल में चल रही त्रिदिवसीय स्पोर्ट्स मीट के दूसरे दिन बृहस्पतिवार को विभिन्न प्रतियोगिताओं का उत्साहपूर्ण माहौल में आयोजन किया गया। सुबह खेलों की शुरुआत प्राइमरी वर्ग की रस्साकशी प्रतियोगिता से हुई।

बालिका वर्ग में टोपाज हाउस विजेता और सफायर हाउस उपविजेता रहा, जबकि बालक वर्ग में रूबी हाउस ने प्रथम और सफायर हाउस ने द्वितीय स्थान हासिल किया। इसके बाद 100 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में टोपाज हाउस प्रथम और रूबी हाउस द्वितीय स्थान पर रहा। बालिका वर्ग में भी टोपाज हाउस ने बाजी मारी और सफायर हाउस दूसरे स्थान पर रहा।

50 मीटर बाधा दौड़ में बालक वर्ग में एमरल्ड हाउस ने प्रथम और सफायर हाउस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बालिका वर्ग में एमरल्ड हाउस प्रथम और रूबी हाउस द्वितीय रहा। सीनियर वर्ग की स्पर्धाओं में भी छात्रों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। अन्य प्रतियोगिताओं में भी बच्चों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। उप प्रधानाचार्य डॉ. अर्चना शर्मा ने कहा कि खेलों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना का विकास होता है। प्रधानाचार्य डॉ. संजय कुमार पाण्डेय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को मेडल और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। संचालन इप्सिता वशिष्ठ एवं परीका अग्रवाल ने किया।

आरआरके स्कूल में प्रतियोगिता के विजेता बच्चे। ● अमृत विचार

- शुरुआत प्राइमरी वर्ग की रस्साकशी प्रतियोगिता से हुई

न्यूज ब्रीफ

दो औषधि निरीक्षकों को मिला प्रशस्ति पत्र

अमृत विचार, लखनऊ : खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश (एफएसडीए) द्वारा नारकोटिक्स दवाओं के अवैध व्यापार, उनके डायवर्जन तथा नशे के रूप में दुरुपयोग को रोकने हेतु एक माह का विशेष राज्यव्यापी अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान विभिन्न राज्यों की फर्मा से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर जिला स्तर पर छापेमारी, निरीक्षण एवं प्रवर्तन की प्रभावी कार्रवाई की गई। इस सफल अभियान के लिए मुख्यालय से नियुक्त दो ड्रग इंस्पेक्टर वैभव बब्बर एवं सीमा सिंह को सम्मानित करते हुए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त डॉ .रोशन जैकेब ने गुरुवार को बताया कि नारकोटिक्स ब्यूरो ग्वालियर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और रांची समेत विभिन्न राज्यों की फर्मों से प्राप्त सूचनाओं को विभाग ने संगठित रूप से संकलित किया तथा उनका गहन विश्लेषण किया। इन सूचनाओं के आधार पर जिला स्तर पर छापेमारी, निरीक्षण एवं प्रवर्तन की कार्रवाई की है।

गन्ना पर्यवेक्षक पद की डीपीसी हो : अतुल

अमृत विचार, लखनऊ : गन्ना विभाग में बीते 36 वर्षों से गन्ना पर्यवेक्षक की पदोन्नति गन्ना विकास निरीक्षक के पद पर नहीं हुई है। विभाग में डीपीसी न होने की वजह से गन्ना पर्यवेक्षक बिना पदोन्नति सेवाएं दे रहे हैं। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद उप्र. के महामंत्री अतुल मिश्रा ने नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव उप्र. सरकार से मांग करते हुए कहा कि राज्य कर्मचारियों को उनका अधिकार मिलना चाहिए, पदोन्नति के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया जाए। संयुक्त परिषद के महामंत्री ने ज्ञापन के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी को अवगत कराया कि मुख्य सचिव द्वारा समस्त विभागों को कई बार निर्देशित किया जा चुका है कि कर्मचारियों की पदोन्नति समय पर की जाये। परन्तु गन्ना विभाग द्वारा शासनादेशों को अनदेखी कर पदोन्नति की प्रक्रिया को विगत कई वर्ष से लम्बित रखे हुये है।

भूजल सुधरा, किसानों का भविष्य सुरक्षित

अमृत विचार, लखनऊ : जालौन में योगी आदित्यनाथ सरकार की जल संरक्षण नीतियों ने बड़ा बदलाव लाया है। जिले में भूजल स्तर दो मीटर तक बढ़ा है, जिससे खेतों की सिंचाई आसान हुई और कृषि चक्र स्थिर हुआ। हजारों चेकडैम, तालाबों के पुनर्जीवन और फार्म पॉन्ड्स ने जल पुनर्भरण को मजबूत किया। कई ब्लॉकों में ट्यूबवेल पंपिंग के घंटे बढ़े हैं, जिससे सिंचाई लागत घटी है। जल उपलब्धता बढ़ने से फसल उत्पादन में तेज वृद्धि और पलायन में गिरावट दर्ज की गई है। जल पंचायतों और सामुदायिक प्रयासों से जालौन को राष्ट्रीय जल पुरस्कार भी मिला, जिसने इसे जल संरक्षण का मॉडल बना दिया।

पूर्वांचल विकास का नया केंद्र बनकर उभरा

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में पूर्वांचल विकास का नया केंद्र बनकर उभरा है। वाराणसी और आसपास के जिलों में उद्योग, लॉजिस्टिक्स और पर्यटन क्षेत्र तेजी से विस्तार ले रहे हैं। वाराणसी में चल रही 48 औद्योगिक परियोजनाओं में 1,180 करोड़ का निवेश और भावी परियोजनाओं के लिए 5,700 करोड़ के प्रस्ताव से 15,000 से अधिक रोजगार सृजन की संभावना बनी है। सड़क, रेल और एयर कनेक्टिविटी से उद्योगों को लाभ मिला है। भंडारण क्षमता, एग्री-लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक टाउनशिप परियोजनाओं ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को नई मजबूती दी है। पूर्वांचल अब यूपी की वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी के प्रमुख स्तंभों में शामिल है।

रोजगार नीतियों से बदला आर्थिक परिदृश्य

अमृत विचार, लखनऊ : योगी सरकार की रोजगार नीतियों ने यूपी में बड़ी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की नींव रखी है। प्रदेश की बेरोजगारी दर 19 फीसदी से घटकर 2 .4 आ गई है, जो नीति आधारित विकास मॉडल की सफलता को दर्शाती है। एमएसएमई सेक्टर की 96 लाख इकाइयों ने 2 करोड़ से अधिक युवाओं को रोजगार दिया है। कौशल विकास मिशन से 14 लाख युवा प्रशिक्षित हुए, जिनमें से 5 .66 लाख को नौकरी मिली। रोजगार महाकुंभ, जीसीसी नीति 2025 और सरकारी प्रोत्साहन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ा है। महिला श्रम भागीदारी भी 25 फीसदी तक पहुंची है, जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति में बड़ा सुधार आया है।

सचिवालय सेवा के 8 अधिकारी बनेंगे विशेष सचिव, बढ़ेंगे पद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र.सचिवालय सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए बड़ा अवसर खुल गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विशेष सचिव के आठ नए पदों के सृजन को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों की कुल संख्या 35 से बढ़कर 43 हो गई है।

सूत्रों के मुताबिक, सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों के आठ पद बढ़ाने का प्रस्ताव कैबिनेट से 6 मई को स्वीकृत हो गया था, लेकिन संबंधित आदेश जारी नहीं हो पा रहा था। बताते हैं कि शासन के एक उच्चाधिकारी ने इस फाइल को रोक रखा था। वह अधिकारी सचिवालय सेवा के दो संयुक्त सचिवों के सेवानिवृत्त हो जाने का इंतजार कर रहे थे। इनमें से एक अधिकारी 31 अक्टूबर को और दूसरे अधिकारी 30 नवंबर को सेवानिवृत्त हुए। इन दोनों के सेवानिवृत्त हो जाने के बाद पद बढ़ाए जाने की फाइल आगे बढ़ी। सचिवालय संघ के अध्यक्ष अर्जुन देव भारती ने मुख्यमंत्री योगी, मुख्य सचिव और संबंधित प्रमुख सचिव के प्रति आभार व्यक्त किया है। उनका कहना है कि इससे न केवल पदोन्नति के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि अनुभवी अधिकारियों को नीति-निर्माण के उच्च स्तर पर कार्य करने का अधिक अवसर मिलेगा।

मानक पूरे न करने वाले मदरसे में पांच शिक्षकों की नियुक्ति

झांसी के मदरसे में फर्जीवाड़ा : पूर्व रजिस्ट्रार ने नियुक्ति को सही ठहराते हुए दे दी वित्तीय अनुमति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- तीन कमरों के मदरसे में तैनात हैं 24 शिक्षक, मान्यता रद होने के बाद भी नहीं पूरा हुआ मानक

अमृत विचार: झांसी के नगरीय क्षेत्र में जर्जर तीन कमरों में मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज, भट्टागांव संचालित हो रहा है। यह एक अनुदानित मदरसा है। जिसमें पहले से 24 अध्यापक तैनात हैं। जो सरकारी फंड से हर महीने मोटा वेतन उठा रहे हैं। हकीकत यह है कि मदरसे में बच्चों की संख्या न के बराबर है। इस मदरसे की मान्यता पहले मदरसा बोर्ड द्वारा निलंबित की गई थी। जिसे मानक पूरा करने की शर्त पर बहाल किया गया। समय सीमा 2016 में समाप्त हो गई। पर, आज तक मानक पूरे नहीं हो सके। मदरसे में नियुक्तियों पर रोक लगा दी गई थी। इसके बाद भी मदरसा बोर्ड के तत्कालीन रजिस्ट्रार और संप्रति मुरादाबाद मंडल के उपनिदेशक का कार्य देख रहे जगमोहन सिंह बिष्ट ने पांच नए शिक्षकों की नियुक्तियों का अनुमोदन और भुगतान की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में 22 जुलाई 2016 को नई मदरसा नियमावली लागू की थी। जिसमें भवन, कक्ष संख्या और छात्र-शिक्षक अनुपात के मानक सख्त कर दिये थे। 2017 में प्रदेश में भाजपा की सरकार आई। शासन ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि अनुदानित मदरसों के मानक की जांच कराई जाए। आठ महीने में जांच रिपोर्ट आई। जिसमें 35 मदरसे मानकविहीन संचालित पाये गये। पर, स्थानीय अधिकारियों की मिलीभगत के कारण मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज भट्टागांव का नाम सूची में नहीं डाला गया।

अधिकारी ने दी थी मानकविहीन होने की रिपोर्ट

अमृत विचार : झांसी के तत्कालीन जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी ने 28 जुलाई 2021 को मदरसा बोर्ड के रजिस्ट्रार को लिखित रूप से रिपोर्ट दी थी कि मदरसा कॉस्मोपॉलिटन कॉलेज भट्टागांव मानक विहीन है। इसमें भविष्य में किसी भी नियुक्ति पर वित्तीय अनुमोदन न दिया जाए। इस रिपोर्ट को भी मदरसा बोर्ड के तत्कालीन रजिस्ट्रार ने नजरअंदाज कर दिया। मदरसे में गलत तरीके से पांच नए शिक्षकों की नियुक्तियों पर न केवल अनुमोदन प्रदान किया, बल्कि भुगतान की वित्तीय सहमति भी जारी कर दी। अनुमोदन देते समय न तो मदरसे के भवन व मानकों की जांच की गई। न ही छात्र-शिक्षक के अनुपात का परीक्षण किया गया। शिक्षकों की नियुक्ति व वित्तीय अनुमोदन मदरसा प्रबंधन, जिला स्तर के कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से यह खेल किया गया। इस खेल में सरकारी धन का लाखों रुपये का दुरुपयोग किया गया।

खेलोगे तो खिलोगे, मुख्यमंत्री ने किया आह्वान

महंत अवेद्यनाथ महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के हर नौजवान से अपेक्षा की है कि वह किसी न किसी खेल से जुड़ें, क्योंकि 'खेलोगे तो खिलोगे' केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन का सिद्धांत है। उन्होंने कहा कि कबड्डी जैसे खेल स्फूर्ति, टीम भावना और सामूहिक कार्य संस्कृति को बढ़ाते हैं। खेल, व्यक्ति को अनुशासन, त्वरित निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास देता है।

क्षेत्रीय स्टेडियम में ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता-2025 के विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से खेलों के प्रति जागरूकता रही है और पिछले 11 वर्षों में पीएम मोदी की प्रेरणा से खेल संस्कृति को नई दिशा मिली है। खेलो इंडिया, सांसद-विधायक खेल प्रतियोगिताएं और विभिन्न खेल मिशनों के कारण आज भारत ओलंपिक, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ और विश्व चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है।

कबड्डी प्रतियोगिता की विजेता यूपी टीम को 2 लाख रुपये का चेक देते प्रदान कर पुरस्कृत करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, साथ में अन्य।

यूपी की टीम विजेता, पूर्वोत्तर रेलवे बना उपविजेता

अमृत विचार : ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज सप्तम अखिल भारतीय प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता-2025 में उत्तर प्रदेश की टीम ने खिताब जीता, जबकि पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर उपविजेता रही। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विजेता यूपी टीम को 2 लाख रुपये, ट्रॉफी व मेडल दिया, जबकि उपविजेता टीम को 1 लाख रुपये और ट्रॉफी प्रदान की। हरियाणा और आंध्र प्रदेश की टीमें तीसरे स्थान पर रहीं। दोनों को 50-50 हजार रुपये का चेक और ट्रॉफी दी गई। प्रतियोगिता में 12 टीमों के 168 खिलाड़ियों और 24 कोच-मैनेजरों ने प्रतिभाग किया। खिलाड़ियों ने तीन दिनों तक रोमांचक मुकाबलों में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई।

राष्ट्रीय विद्यालयीय कुश्ती के विजेता सम्मानित

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर स्थित वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में आयोजित 69वीं राष्ट्रीय विद्यालयीय ग्रीको रोमन कुश्ती (अंडर-17 व 19 वर्ग) के विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। प्रतियोगिता में 23 राज्यों की 23 टीमों के 393 खिलाड़ी और 81 कोच/मैनेजर शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने स्वर्ण विजेताओं को 75,000 रुपये, रजत विजेताओं को 50,000 रुपये और कांस्य विजेताओं को 30,000 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की। मुख्यमंत्री ने युवाओं को 2030 में अहमदाबाद में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारी अभी से शुरू करने की सलाह दी।

सभी विभाग समन्वय बना निर्माण कार्यों को दें गति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्य सचिव ने बीडा की महायोजना-2045 और ललितपुर फार्मा पार्क के निर्माण कार्यों की समीक्षा की

एसपी गोयल

अमृत विचार : मुख्य सचिव एसपी गोयल ने कहा कि परियोजनाएं प्रदेश के औद्योगिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित कर तेज गति से कार्य करें। उन्होंने सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा करने और कार्यों में आने वाली बाधाओं को तत्परता से दूर करने के लिए निर्देशित किया।

मुख्य सचिव, गुरुवार को अपने कार्यालय में प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग ग्रुप (पीएमजी) की बैठक में बुन्देलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (बीडा) की महायोजना-2045 तथा ललितपुर में प्रस्तावित फार्मा पार्क सहित यूपीडा की प्रमुख औद्योगिक परियोजनाओं की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में अवगत कराया गया कि बीडा की महायोजना-2045 के लिए कुल 8349 एकड़ भूमि अर्जन हेतु दिसंबर 2025 से मार्च 2026 तक माहवार लक्ष्य तय कर दिया गया है। आसामी पट्टा भूमि के त्वरित क्रय के लिए मंत्रिपरिषद अनुमोदन हेतु प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसे शीघ्र शासन को भेजा जाएगा। बीडा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल एवं सेक्टर प्लानिंग का कार्य प्रगति पर है और इसे दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीडा क्षेत्र के बाहर राइजिंग मेन पंप स्टेशन एवं ओएंडएम कार्य जल निगम द्वारा किए जाएंगे, जिसके लिए एमओयू की प्रक्रिया जारी है। पंपिंग स्टेशन, सीडब्ल्यूआर एवं आरओडब्ल्यू हेतु भूमि चिन्हित की जा चुकी है तथा परीक्षण उपरांत डीपीआर संशोधन की प्रक्रिया जारी है। एक्टिवेशन क्षेत्र के लिए 15 मेगावाट विद्युत आपूर्ति की डीपीआर स्वीकृत हो चुकी है, जबकि शेष 40 मेगावाट की डीपीआर तैयार की जा रही है। 60 मीटर चौड़ी मुख्य सड़क की डीपीआर प्राप्त हो चुकी है और अन्य सड़कों की डीपीआर दिसंबर 2025 तक तैयार कर ली जाएगी।

रोहिंग्या व बांग्लादेशी अप्रवासियों पर कार्रवाई तेज, पुलिस व खुफिया इकाइयों का जांच अभियान शुरू

अमृत विचार, लखनऊ, एजेंसी : प्रदेश सरकार द्वारा अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्या और बांग्लादेशी अप्रवासियों के खिलाफ राज्यव्यापी कार्रवाई के बीच, पुलिस और खुफिया इकाइयों ने गुरुवार को प्रमुख जिलों में गहन सत्यापन अभियान चलाया। इस समन्वित अभियान के तहत, राज्य की राजधानी लखनऊ, कन्नौज, प्रयागराज, वाराणसी, मेरठ, अलीगढ़, गाजियाबाद, गोरखपुर, आगरा, सहारनपुर, मथुरा और कई अन्य जिलों में इसी तरह की जांच की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने नगर निकायों और पुलिस इकाइयों को अपने क्षेत्र में रहने वाले सभी संदिग्ध विदेशी नागरिकों की पहचान करने, उनके दस्तावेजों की जांच करने और वैध दस्तावेजों के अभाव वाले अप्रवासियों की जिला-वार सूची तैयार करने का निर्देश दिया है। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने अधिकारियों को सरकारी भवनों और पुलिस केंद्रों की पहचान करने का निर्देश दिया है जिन्हें निर्वासन प्रक्रिया पूरी होने तक अस्थायी हिरासत केंद्रों में परिवर्तित किया जा सके।

काशी विश्वनाथ धाम: 4 साल में 26 करोड़ श्रद्धालु

अमृत विचार, लखनऊ : नव्य-भव्य काशी विश्वनाथ धाम ने चार वर्षों में लगभग 26 करोड़ श्रद्धालुओं का स्वागत किया है। धाम का विस्तार 3,000 से बढ़कर 5 लाख वर्ग फीट होने से दर्शन की सुविधा, सुगमता और सुरक्षा बढ़ी है। बेहतर व्यवस्था, व्हीलचेयर, गोल्फ कार्ट, चिकित्सा, जर्मन हैंगर और ठंड-गर्मी में राहत देने वाली व्यवस्थाओं से भक्तों का अनुभव सहज हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नियमित समीक्षा से काशी वैश्विक धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनी है।

आरक्षित वर्ग के युवकों को मिलेगा कोचिंग का लाभ

राज्य बयूरो, लखनऊ

- यूपीपीसीएस-2025 मुख्य परीक्षा के लिए नि:शुल्क कोचिंग को मांगे गए आवेदन

अमृत विचार : भागीदारी भवन के संयुक्त निदेशक आनंद कुमार सिंह ने बताया कि प्रतिभाशाली युवाओं को उच्च गुणवत्ता का मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से समाज कल्याण विभाग द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उक्त क्रम में ही यूपीपीसीएस प्री परीक्षा-2025 उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए मुख्य परीक्षा की निःशुल्क कोचिंग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस कोचिंग में दाखिले के लिए आवेदन प्रक्रिया 12 दिसंबर 2025 तक जारी रहेगी।

गोमती नगर में गुरुवार को आयोजित समाज कल्याण की बैठक संबोधित कर रहे थे। संयुक्त निदेशक ने बताया कि परीक्षा की तैयारी छत्रपति शाहू जी महाराज शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, भागीदारी भवन में आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि यह सुविधा केवल पुरुष अभ्यर्थियों के लिए उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि इसके अंतर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के वे अभ्यर्थी, जिनकी पारिवारिक वार्षिक आय 6 लाख रुपये से अधिक न हो तथा जिन्होंने यूपीपीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा-2025 उत्तीर्ण की हो, उन्हें लेटरल एंट्री से प्रवेश दिया जाएगा।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण समय से पूरा करें : रिणवा

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देशित किया है कि मतदाता सूची के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े सभी कार्य निर्धारित समय में पूर्ण किए जाएं। साथ ही गुरुवार को उन मतदाताओं से अपील की है कि जिन्होंने अभी तक अपने गणना प्रपत्र जमा नहीं किए हैं, वे अंतिम तिथि का इंतजार न करें, शीघ्र बीएलओ को प्रपत्र उपलब्ध करा दें। उन्होंने बताया कि एसआईआर की समयसीमा बढ़ाकर 11 दिसंबर 2025 कर दी गई है, इसलिए पात्र मतदाता अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के लिए आगे आएं।

आयुष चिकित्सकों की ग्रामीण क्षेत्रों में नियुक्ति जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- विकसित यूपी 2047 को लेकर पर्यटन क्षेत्र की रूपरेखा को लेकर हुई बैठक

विकसित यूपी 2047 की तैयार की जा रही रूपरेखा पर चर्चा के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते प्रमुख सचिव आयुष रंजन कुमार।

अमृत विचार : प्रमुख सचिव आयुष रंजन कुमार ने कहा कि राज्य में समग्र स्वास्थ्य सेवा को बढ़ाने के लिए आयुष चिकित्सा प्रोटोकॉल का मानकीकरण, नए आयुष चिकित्सकों की ग्रामीण क्षेत्रों में अनिवार्य नियुक्ति तथा आयुष सेवाओं का दूरस्थ क्षेत्रों तक विस्तार अत्यंत आवश्यक है। साथ ही आयुष को चिकित्सा एवं वेलनेस पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करने पर भी विशेष बल दिया।

प्रमुख सचिव आयुष, गुरुवार को योजना भवन में विकसित यूपी 2047 को लेकर तैयार की जा रही रूपरेखा पर चर्चा के लिए परामर्श बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। प्रमुख सचिव योजना आलोक कुमार ने सुझाव दिया कि अयोध्या, वाराणसी, मथुरा जैसे तीर्थ स्थलों पर आध्यात्मिक पर्यटन के साथ वेलनेस पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने औषधीय जड़ी-बूटियों की खेती को प्रोत्साहित करने और आयुष क्षेत्र में पंजीकृत योग्य चिकित्सा पेशेवरों की संख्या बढ़ाने पर भी जोर दिया। साथ ही, वर्ष 2047 के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए अल्पकालिक और दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने की आवश्यकता बताई। प्रमुख सचिव पर्यटन, अमृत अभिजात ने मानक गुणवत्ता, प्रमाणन, ब्रांडिंग और प्रशिक्षित थेरेपिस्ट वर्कफोर्स जैसे मुद्दों के समाधान पर बल दिया।

मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं पूर्व डीसीजीआई डॉ. जीएन सिंह ने सुझाव दिया कि पीलीभीत और गोरखपुर जैसे क्षेत्रों में दो आयुष घाटियां विकसित की जाएं।

इको-टूरिज्म | विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस पर विशेष

पर्यटकों को लुभा रहा वन्यजीवों का संरक्षण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि वन, सिंचाई सहित अन्य विभागों से समन्वय कर पर्यटकों के लिए आकर्षक सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। हमारा प्रयास वन्य जीव संरक्षण को सुदृढ़ करते हुए स्थानीय समुदाय को आजीविका के नए अवसरों से जोड़ना है।

पर्यटन मंत्री ने गुरुवार को जारी बयान में बताया कि प्रदेश में गैंडा, बाघ, बारहसिंघा, घड़ियाल जैसे दुर्लभ वन्यजीव न सिर्फ सुरक्षित हैं, बल्कि उनके लिए वातावरण भी विकसित किया गया है। दुधवा, पीलीभीत, कतर्नियाघाट, अमानगढ़ और सोहगीबरवा जैसे वन क्षेत्र पर्यटकों को विशेष अनुभव प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि तराई, ब्रजभूमि, गंगा नदी का क्षेत्र, बुंदेलखंड और विंध्य वनक्षेत्र हर इलाके में जैव विविधता के संरक्षण और सतत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा निरंतर कार्य किया गया है।

तीन वर्षों में 161 करोड़ रुपये खर्च

अमृत विचार : मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि इको-टूरिज्म विकास बोर्ड ने पिछले तीन वर्षों में 161 करोड़ रुपए से अधिक की राशि खर्च कर विभिन्न प्राकृतिक स्थलों पर पर्यटन सुविधाएं विकसित की हैं। इनमें मार्ग सुधार, कैफेटेरिया, इको-फ्रेंडली विश्राम स्थलों, गजिबो, नेचर ट्रेल, बर्ड वॉचिंग स्थान और बच्चों के लिए खेलने के क्षेत्र जैसी सुविधाएं शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में निरंतर बढ़ता निवेश राज्य की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है।

विकसित यूपी 2047 की ओर बढ़े कदम

अमृत विचार : पर्यटन मंत्री ने बताया कि हाल ही में संपन्न 'विकसित उत्तर प्रदेश 2047' कार्यशाला में ईको-टूरिज्म को राज्य की भविष्य रणनीति का अहम आधार माना गया है। वेटलैंड्स और वाइल्ड लाइफ जोन में हरित नेटवर्क विकसित किया गया है। उत्तर प्रदेश को प्रकृति-आधारित पर्यटन का नया प्रमुख गंतव्य बनाने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि इको टूरिज्म को गुणवत्तापूर्ण और समृद्ध अनुभव बनाने के लिए दुधवा, पीलीभीत और कतर्नियाघाट क्षेत्रों में नेचर गाइड्स को प्रशिक्षण दिया गया है। साथ ही, स्थानीय निवासियों को होम स्टे विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर 150 आईएएस अफसरों का होगा प्रशिक्षण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए जारी की 547 पात्र अधिकारियों की सूची
- यूपी के 113 अधिकारी शामिल 15 जनवरी तक कराना होगा पंजीकरण, 2 फरवरी से प्रशिक्षण

अमृत विचार : अखिल भारतीय सेवाओं में पदोन्नति पाए राज्य सिविल सेवा अधिकारियों के लिए केंद्र सरकार ने 128वें इंडक्शन ट्रेनिंग प्रोग्राम (आईटीपी) की तैयारियां पूरी कर ली हैं। कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय ने देशभर के 547 पात्र आईएएस अधिकारियों की सूची जारी करते हुए राज्यों को निर्देश दिया है कि वे पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर अपने अधिकारियों का नामांकन सुनिश्चित करें। प्रशिक्षण की कुल सीटें 150 तय की गई हैं, इसलिए समय पर पंजीकरण कराने वालों को ही मसूरी में प्रशिक्षण का अवसर मिल सकेगा।

सूची में यूपी के 113 अधिकारी शामिल है, ऐसे में कार्मिक विभाग ने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिए हैं कि 15 जनवरी तक होने वाले पंजीकरण में पहले आओ को आधार मानते हुए अतिशीघ्र पंजीकरण प्रक्रिया पूरी कराएं। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी में यह प्रशिक्षण 2 फरवरी से 13 मार्च 2026 तक आयोजित होगा। केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने साफ कहा है कि पूर्व चयन सूची में शामिल वे अधिकारी, जो किसी कारण पूर्व प्रशिक्षण में भाग नहीं ले पाए और वर्तमान चयन सूची के सभी अधिकारी इसमें सम्मिलित होने के पात्र हैं।

अकादमी ने राज्यों को निर्देश दिया है कि नामांकित अधिकारी 15 जनवरी 2026 तक की वेबसाइट पर अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण पूरा कर लें। समयसीमा के बाद पंजीकरण स्वीकार नहीं किया जाएगा।

अमृत विचार

शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

व्यक्ति अपने विचारों के सिवा कुछ नहीं है। वह जो सोचता है, वह बन जाता है।
–महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता

निर्णय से नकार तक

संचार साथी ऐप को अचानक वापस लेने का निर्णय कई राजनीतिक, तकनीकी और सामाजिक प्रश्न उठाता है। सरकार ने इससे पहले इसे मोबाइल फ़ोन में अनिवार्य रूप से शामिल कराने की कोशिश की, चाहे उपभोक्ताओं के माध्यम से या हैंडसेट कंपनियों के जरिए, लेकिन दबाव बढ़ते ही इसे वापस लेना बताता है कि सरकार विपक्ष के आरोपों से ज्यादा सार्वजनिक स्वीकार्यता को लेकर असहज हो गई थी। सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब विश्व की कोई भी सरकार इस तरह के ऐप को प्री-इंस्टॉल करने की बाध्यता नहीं बनाती, तो भारत को इतनी गहन चिंता क्यों हुई?

साइबर अपराध, डिजिटल फ्रॉड और मोबाइल चोरी की समस्या महत्वपूर्ण अवश्य है, लेकिन इन्हें हल करने के लिए दुनिया भर में स्वैच्छिक उपकरण अपनाए जाते हैं, न कि बाध्यकारी ऐप। सरकार यह समझा न सकी कि यह कदम जनहित में है, न ही यह कि बाध्यकारी इंस्टॉलेशन नागरिकों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य क्यों है। यदि सरकार समय रहते ऐप की तकनीकी संरचना, डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल और निजता-संरक्षण की गारंटी जनता के साथ साझा करती, तो शायद स्थिति अलग होती। पारदर्शिता की इस कमी ने जनता में संदेह बढ़ाया कि कहीं यह निगरानी उपकरण तो नहीं। विपक्ष ने इसी बिंदु को पकड़ा और जासूसी के आरोपों को उछाला। सरकार ने इससे पहले भी कई बार अपने फैसलों पर यू-टर्न लिया है। नीति-निर्माण में लचीलेपन को लोकतांत्रिक गुण माना जा सकता है, लेकिन बार-बार हुई पीछे हटने की घटनाएं यह संकेत भी देती हैं कि फैसले पर्याप्त विचार-विमर्श के बिना लिए जा रहे हैं। यदि नीति निर्माण पर सवाल खड़े होने लगें, तो लंबे समय में इससे सरकार की विश्वसनीयता पर दुष्प्रभाव पड़ता है। यह निर्णय पूरी तरह नकारात्मक प्रभाव डालेगा यह कहना गलत होगा। इससे यह संदेश गया कि सरकार विपक्ष और जनता की आवाज़ पर कान देती है, तो सरकार के प्रति जनविश्वास बढ़ सकता है। लगेगा कि सरकार प्राइवेसी संबंधी चिंताओं पर संवेदनशील है और निर्णयों को एकतरफा नहीं थोपती। प्रश्न यह भी उठता है कि जब ऐप को लेकर शुरुआती जनता का रुझान अच्छा था और लोग स्वेच्छा से इसे डाउनलोड कर रहे थे, तो प्री-इंस्टॉल अनिवार्यता की आवश्यकता क्यों पड़ी? यह सरकार की नीति-निर्माण शैली में निहित एक असंगति को उजागर करता है। अगर लोग इसे अपना ही रहे थे, तो उन्हें मजबूर करने की आवश्यकता क्यों? यह कदम उल्टा अविश्वास पैदा करता है, न कि सुरक्षा।

इस निर्णय से सरकार को लाभ यह हो सकता है कि वह इसे 'जनभावना का सम्मान' बताते हुए सकारात्मक कहानी गढ़ सके। सरकार यह कह सकती है कि उसका उद्देश्य सुरक्षा था, निगरानी नहीं और वह नागरिकों की प्राइवेसी को सर्वोपरि मानती है। इसके साथ ही वह यह भी साबित करना चाहेगी कि वह लोकतांत्रिक आलोचना को स्वीकार करती है, लेकिन नीति-निर्माण का मूल पाठ है कि पारदर्शिता और विश्वास किसी भी लोकतांत्रिक शासन की नींव हैं। संचार साथी ऐप प्रकरण ने सरकार को यह सिखा दिया होगा कि तकनीकी समाधान जितने उपयोगी होते हैं, उतने ही संवेदनशील भी और जनस्वीकृति के बिना कोई भी डिजिटल नीति आगे नहीं बढ़ सकती।

प्रसंगवश

सीरिया में मिलीं तीन हजार बरस पुरानी ऋग्वेद रेखाएं

भारतीय वैदिक संस्कृतियों ने न सिर्फ दुनिया को एक सूत्र में पिरोया है, बल्कि 'ऋग्वेद' विधाओं के जरिए 'वसुधेव कुटुंबकम्' का नारा भी समूचे संसार में बुलंद हुआ। हाल में पुरातत्व गाथाओं के अध्ययन में एक बात सिद्ध हुई है कि सीरिया में आज से तीन हजार साल पहले भारतीय वैदिक संस्कृति 'ऋग्वेद' की ऋचाएं उकेरी गई थीं। संगीत की धुनों का आगाज तभी से हुआ था। पता ये भी चला है कि सीरियाई सीमाएं अखंड भारत का हिस्सा थीं। ऋग्वेद की ऋचाए वैदिक अध्याय की सबसे पुरानी हैं, जिसके शुरूआती निशान सीरिया से जुड़े पाए जाते हैं, यानी उनका उद्गम वहीं से हुआ। पिछले दिनों इसको लेकर एक संयुक्त शोध हुआ।

शोध में सीरियाई शहर 'लाम्चू' के 'उगारित' प्रांत में मिले भजनों के प्राचीन ग्रंथ 'हिम्न टू निकल' में कई समानताएं भारतीय संगीत और परंपराओं में पाई गईं। इससे तय होता है कि हमारी पारंपरिक वैदिक संस्कृति शताब्दियों से समूची दुनिया को भाईचारे, सभ्यता, मानवता, एकजुटता और संगीत का पाठ पढ़ाती-सुनाती आई हैं। ये खोज यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ता व प्रसिद्ध प्रोफेसर डैन सी बासियू द्वारा की गई है। बासियू ने कंप्यूटर टूल्स की सहायता से ग्रंथों के रिद्म और मेलोडी के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करके ये बात जानी। सीरिया के उगारित प्रांत की गुफाओं में पट्टिका पर उकेरे गए भजन में आज भी बाकायदा ऋग्वेद की श्रृंखलाओं की कड़ियां मौजूद हैं। उनका जब उन्होंने मिलान किया, तो आपस में समानताएं मिली।

डॉ. रमेश ठाकुर
लेखक

'मित्तानी साम्राज्य और संगीत यात्रा' के अध्ययन पर भी कई मर्तबा विभिन्न देशों में शोध हुआ, उनमें भी हर दफे ऐसी ही समानताएं मिलीं थीं। भारत और पश्चिमी सभ्यताओं के बीच सदैव सांस्कृतिक पुल रहा। ये बात अलग है कि अब दोनों की सभ्यताएं भिन्न-भिन्न हो गई हैं। पश्चिमी सभ्यता ने मॉर्डन युग को पूरी तरह से अपना लिया है, पर, भारत आधुनिक होते हुए भी, अपनी मूल जड़ों से नहीं कटा, आज भी जुड़ा है। संगीत-सभ्यता की ताकत को कोई कमतर नहीं आंक सकता, क्योंकि संगीत प्राचीन सभ्यताओं को जोड़ने वाली असली वैश्विक भाषा रही है। भले ही, एक इंसान दूसरे इंसान की जुबान न समझ पाए, पर संगीत की धुन एक-दूसरे को आसानी से समझ आती है। संगीत ऋग्वेद की ही देन है और ऋग्वेद भारत की।

'ऋग्वेद' से जुड़ी इस रिसर्च में जो तथ्य निकले हैं, उनको लेकर शोधकर्ता बासियू ने कहा है कि यही धुनें और पैटर्न यूनानी कवयित्री सैफो की कविताओं और जर्मन कवि फ्रेडरिक होल्डरलिन की रचनाओं में भी दिखती हैं। दोनों महान रचनाधर्मियों की कविताओं में 'ऋग्वेद' की झलक है। उन्होंने विश्व से आह्वान किया है कि संगीत की वैश्विक भूमिका को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। शोध में ये भी पुष्टि हुई कि विभिन्न देशों के संगीत विधा में भी ऋग्वेद का पैटर्न मिलता है। ये मेल निश्चित रूप से दुर्लभ है, इसलिए कह सकते हैं कि संगीत का जन्म 'ऋग्वेद' से ही हुआ, हालांकि ये बात भारतीय इतिहासकार सदियों से कहते आए हैं कि भजन की धुनें 'ऋग्वेद' से ही फूटी हैं।

ऋग्वेद, जिसका मूल अर्थ है स्तुति का ज्ञान, इसीलिए हिंदू धर्म में इसे चार सबसे पुराने और पवित्र वेदों में गिना गया है। यह संस्कृत श्लोकों का एक संग्रह है, जो देवताओं की स्तुति करता है। सीरिया से इस ग्रंथ की जड़ें जुड़ना बताता है कि भारतीय संस्कृति के तत्व पहले कहां-कहां मौजूद थे।

संचार साथी ऐप पर फैसला बदलने की मजबूरी

विवेक सक्सेना
अयोध्या

साइबर अपराधों की बढ़ती जटिलता, 'डिजिटल अरेस्ट' से लेकर गुमनाम व बड़े पैमाने पर घपलों, आम जनता के साथ आए दिन ठगी आदि के तमाम ऐसे मामले हैं, जिसमें साइबर अपराधियों ने सुरक्षा खामी का भरपूर फायदा उठाया है। फर्जी या छेड़छाड़ किए हुए आईएमईआई नंबरों के धड़ल्ले से इस्तेमाल ने भी कानून और प्रवर्तन एजेंसियों के लिए अपराधियों को खोज निकालना लगभग नामुमकिन बना दिया है। साइबर अपराध पर सुप्रीम कोर्ट ने भी चिंता जताई। ऐसे में सरकार द्वारा सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर संबंधी इन कमजोरियों के निवारण के लिए उठाए गए कदम पर राजनीति चिंतनीय है। हालांकि, दुनियाभर में किसी भी देश ने स्मार्टफोन में साइबर सुरक्षा ऐप को पहले से लगाना अनिवार्य नहीं किया है। एकमात्र अपवाद रूस को छोड़कर, जिसने सरकारी संदेश सेवा 'मैक्स' को सभी फोन और टैबलेट में इंस्टॉल करना अनिवार्य किया है। सरकार ने सभी स्मार्टफोन में संचार साथी ऐप अनिवार्य किया और फिर विवाद होने के बाद आदेश वापस भी ले लिया।

सरकार का कहना है कि इस ऐप के जरिये डिजिटल स्कैम, फर्जी कॉल और दूसरी धोखाधड़ियों को रोकने में मदद मिलेगी, लेकिन इसके साथ ही निजता के उल्लंघन की चिंता भी खड़ी होती है। कहीं यह ऐप यूजर्स के निजी जीवन में ताकझांक तो नहीं करेगा? इससे लोगों की निजता को लेकर सवाल उठ रहे हैं। डेटा की सुरक्षा और उसके बेजा इस्तेमाल को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने निजता को मौलिक अधिकार माना है। चौतरफा विरोध के बाद केंद्र ने भले साफ किया हो कि इस ऐप को अपने फोन में रखना या डिलीट करना यूजर की मर्जी पर निर्भर करता है, लेकिन इससे चिंता का समाधान नहीं होता।

सरकार ने हाल में साइबर सिक्यॉरिटी से जुड़े दो आदेश दिए हैं। 28 नवंबर को 'सिम बाइंडिंग' का निर्देश दिया। व्हाट्सऐप, टेलिग्राम जैसे सभी कम्युनिकेशन से कहा कि वे अपनी सर्विस को सिम कार्ड से जोड़कर रखें। मतलब कि ये ऐप तभी चलें, जब मोबाइल में सिम लगा हो। टेलिकम्युनिकेशन कंपनियों ने इस फैसले का स्वागत किया। इसी बीच पहली दिसंबर को स्मार्टफोन निर्माताओं को मार्च 2026 तक सभी नये यंत्रों (डिवाइस) में डिवाइस ऑथेंटिसिटी के सत्यापन के लिए संचार साथी ऐप इंस्टॉल करना अनिवार्य करने के आदेश दे दिये। निर्देश में साफ कहा गया कि ये ऐप 'पहली बार इस्तेमाल या डिवाइस सेटअप के समय अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए आसानी से नजर आने वाला और सुगम पहुंच वाला हो तथा इसकी कार्यशीलताओं को अक्षम या सीमित नहीं किया जा सके', जिसका मतलब यह हुआ कि इस ऐप को फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम के भीतर उच्च सुरक्षा मंजूरी दी जाएगी।

निजता पर संभावित खतरे मुख्य रूप से इसके द्वारा मांगी जा रही अत्यधिक अनुमतियों से जुड़े हैं। ऐप कैमरा, एसएमएस, फोन कॉल्स, डिवाइस आईडी, फोटो-मीडिया फाइल और स्टोरेज तक पहुंच मांगता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को अपने डेटा की सुरक्षा को लेकर चिंता होती है। लोग मानते हैं कि इससे उनकी निजी जानकारियां सरकार या अन्य एजेंसियों द्वारा ट्रैक की जा सकती हैं, जिससे निगरानी और जासूसी का खतरा बनता है। राज्य निगरानी (स्टेट सर्विलांस) के लिए इस ऐप के दुरुपयोग और सुरक्षा से समझौते के बाद किसी बदनीयत व्यक्ति या संगठन द्वारा करोड़ों उपयोगकर्ताओं को निशाना बनाए जाने की आशंका मौजूद है।

पेगासस सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल के साथ जो हुआ है, उसे देखते हुए यह डर बेबुनियाद भी नहीं है। हालांकि संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने संसद में कहा कि यह ऐप पूरी तरह स्वैच्छिक और लोकतांत्रिक व्यवस्था से जुड़ा है। यूजर्स चाहें तो ऐप को सक्रिय कर इसका लाभ ले सकते हैं और न चाहें तो वे किसी भी समय इसे अपने फोन से आसानी से डिलीट कर सकते हैं। ऐप के पक्ष में कहा जा सकता है कि यह फोन की असलियत जांचने, धोखाधड़ी रिपोर्ट करने, मोबाइल ब्लॉक करने और खोए हुए फोन का पता लगाने में मदद करता है। यह ऐप आईएमईआई नंबर की जांच करता है और यूजर्स को फर्जी कनेक्शनों की जानकारी देने में सहायक है। इसके जरिए फर्जी कॉल या धोखाधड़ी को रोका जा सकता है।

सरकार का तर्क है कि अब तक 1.5 करोड़ लोगों ने ऐप को डाउनलोड किया है। विरोध के बीच एक दिन में ही छह लाख लोगों ने ऐप को डाउनलोड करने के लिए पंजीकरण कराया। इस ऐप से चोरी हुए 26 लाख हैंडसेट का पता लगाया गया और 41 लाख मोबाइल ब्लॉक हो चुके हैं। वहीं मुख्य आलोचना यह है कि संचार साथी ऐप को अनिवार्य रूप से मोबाइल में इंस्टॉल करने को निगरानी और जासूसी बताया जा रहा है। विपक्षी पार्टियों द्वारा इसे नागरिकों की निजता पर बड़ा खतरा बताते हुए इस ऐप को असंवैधानिक करार दिया गया है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि यह ऐप लोगों की निजी जानकारी पर नजर रखने का साधन बन सकता है।

कांग्रेस ने भाजपा को 'भारतीय जासूस पार्टी' होने का आरोप लगाते हुए दावा किया कि ये ऐप लोगों के घरों में घुसने का षडयंत्र है। डिवाइस के सच्चेपन के सत्यापन के लिए सरकार के पास पहले ही कम घुसपैठ वाले साधन मौजूद हैं। संचार साथी वेब पोर्टल, एसएमएस-आधारित परीक्षण और यूएसएसडी कोड पर्याप्त होने चाहिए। कम घुसपैठ वाले विकल्पों की अनदेखी करके, संचार साथी पर जारी निर्देश आनुपातिकता संबंधी मानक को धता बताते हैं। इस ऐप की उपयोगिता और सुरक्षा तत्त्वों को देखते हुए यह माना जा सकता है कि यह ऐप फर्जीवाड़े और चोरी के खिलाफ एक सक्षम उपकरण साबित हो सकता है, हालांकि नागरिक गोपनीयता के अधिकार का सम्मान करते हुए उसकी पारदर्शिता और यूजर नियंत्रण के पहलुओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

सरकार ने सभी स्मार्टफोन में संचार साथी ऐप अनिवार्य किया और फिर विवाद होने के बाद आदेश वापस भी ले लिया। ये पूरा घटनाक्रम कई गंभीर सवाल भी खड़े करता है।

आमने

स्वतंत्रता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू बाबरी मस्जिद के पुनर्निर्माण के लिए सरकारी धन का उपयोग करना चाहते थे, लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसे रोक दिया। मोदी सरकार ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनाकर पटेल को सम्मान दिया।
–राजनाथ सिंह
केंद्रीय रक्षा मंत्री

सामने

सरकार रोज कोई नया विवाद खड़ा करती है, ताकि जनता के असली मुद्दों से ध्यान हटाया जा सके। यह बयान उसी भटकाव की राजनीति का हिस्सा है। यह सब असली मुद्दों जैसे प्रदूषण, बेरोजगारी से ध्यान भटकाने की साजिश है।
–प्रियंका गांधी
कांग्रेस सांसद

पीएमओ, राजभवनों के नाम बदलने के निहितार्थ

प्रो. महेश चंद गुप्ता
शिक्षाविद्

अक्सर कहा जाता है कि नाम में क्या रखा है? लेकिन भारतीय संस्कृति इस प्रश्न का सीधा उत्तर देती है कि नाम में ही सब कुछ रखा है। हमारे यहां 'यथा नाम तथा गुण' की परंपरा उतनी ही पुरानी है, जितनी हमारी सभ्यता। जब हम 'राम' का नाम लेते हैं, तो हमारे भीतर स्वतः शांति, करुणा और मर्यादा का भाव जाग उठता है। 'कृष्ण' का नाम लेते ही मन में प्रेम और मधुरता की अनुभूति होती है। हमारी मान्यताओं के अनुसार नाम एक ध्वनि है, ऊर्जा है, पहचान है और दिशा है, इसीलिए हमारे समाज में नाम केवल किसी की पहचान ही नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व और नेतृत्व का वाहक है।

मौजूदा दौर में जब दुनिया के अनेक देशों में मूल्यहीनता, आपसी संघर्षों, तानाशाही और सत्ता केंद्रित शासन का बोलबाला है, तब मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम 'सेवा तीर्थ', राजभवनों का नाम 'लोक भवन' और केंद्रीय सचिवालय का नाम 'कर्तव्य भवन' करके एक गहरी सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित किया है। यह केवल बोर्ड बदलने अथवा दीवारों पर नई पट्टिका लगाने का कदम भर नहीं है, बल्कि इसके पीछे शासन की आत्मा बदलने वाले सांकेतिक, दार्शनिक और वैचारिक बदलाव की भावना निहित है। पीएम नरेंद्र मोदी बार-बार कहते रहे हैं कि वे प्रधान सेवक हैं और उनका कार्य सत्ता का प्रदर्शन नहीं बल्कि सेवा की साधना है।

उनके इसी मनोभाव के अनुरूप प्रधानमंत्री कार्यालय को अब सेवा तीर्थ कहा जाएगा। हमारे यहां तीर्थ शब्द का बड़ा महत्व है। तीर्थ शब्द पवित्रता, तप, श्रद्धा और जन कल्याण के भाव को व्यक्त करता है। हम तीर्थ उन स्थानों को कहते हैं, जहां लोग समाधान, शांति और आशा की उम्मीद लेकर जाते हैं। मोदी सरकार ने पीएमओ को तीर्थ कहकर यह संदेश दिया है कि वहां सत्ता संचालन नहीं, सेवा का कार्य होगा। राज भवनों का नाम बदलकर लोक भवन करना एक क्रांतिकारी कदम है। 'राज' शब्द में हमेशा एक दूरी, एक अधिकार और सत्ता भाव का अहसास जन मानस को होता रहा है, लेकिन 'लोक' शब्द में अपनापन, भागीदारी और साझेदारी का भाव समाया हुआ है। केंद्रीय सचिवालय का नाम कर्तव्य भवन रखने के पीछे नौकरशाही में सेवा भाव और कर्तव्य बोध का संचार करने का भाव निहित है। दशकों से इसे अधिकार, फाइलों की गति, निर्णयों की शक्ति और नौकरशाही की ताकत का प्रतीक माना जाता रहा है, लेकिन अब जब इसका नाम कर्तव्य भवन कर दिया गया है, तो अब प्रत्येक अधिकारी को हर घड़ी स्मरण रहेगा कि शासन का आधार अधिकार नहीं, कर्तव्य है।

दो दिन पहले तक जब हम प्रधानमंत्री कार्यालय सुनते थे तो मन में एक विशाल, अधिकार प्रदर्शित करने वाली इमारत का भाव आता था, लेकिन सेवा तीर्थ नाम सुनते ही मन में एक अलग ही पवित्रता, जनता से जुड़ाव और विनम्रता का भाव उमड़ने लगा है। यही इस नामकरण का वास्तविक निहितार्थ है। राज कपूर की फिल्म का मशहूर गीत हर किसी को याद है- मेरा जूता है जापानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी। नाम के साथ पहचान का रिश्ता कैसा गहरा होता है, इस गीत से बेहतर कोई उदाहरण नहीं हो सकता। जापानी शब्द जापान की आत्मा से जोड़ देता है, रूसी शब्द रूस से और हिंदुस्तानी दिल की धड़कन बना रहता है। यानी नाम हमेशा भाव जगाते हैं, भाव संस्कृति गढ़ते हैं और संस्कृति राष्ट्र का चरित्र तय करती है।

मोदी सरकार ने सिर्फ नाम ही नहीं बदले हैं, बल्कि संदेश दे दिया है कि अब सत्ता जनता के पास लौट रही है। राजभवन अब उस पुराने औपनिवेशिक प्रतीक जैसे नहीं रहेंगे, जहां जनता दूर खड़ी ताकती रहे। मेरे विचार में भविष्य में यह भी संभव है कि प्रधानमंत्री कार्यालय और राजभवनों तक जनता की सहज पहुंच और बढ़े, क्योंकि मोदी सरकार का संकल्प ही जनता का शासन, जनता के लिए शासन और जनता के बीच रहकर शासन है।

देश में यह पहला अवसर है, जब कोई सरकार हर मोर्चे पर कर्तव्य-पथ, अमृत काल और सेवा जैसे शब्दों को अपने कामकाज की आधारशिला बनाकर काम कर रही है। ऐसे में अब कर्तव्य भवन केवल नाम नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय मनोवृत्ति का निर्माण करने वाला है। यह नाम एक ऐसी भावना को बढ़ाएगा जो नौकरशाही को अधिक उत्तरदायी, संवेदनशील और नैतिक बनाएगी। यह नामकरण भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का महत्वपूर्ण अध्याय है। हम सब जानते हैं कि मोदी सरकार ने पहले भी कई औपनिवेशिक, विदेशी आक्रांताओं के नाम वाले और अप्रासंगिक नामों को बदलकर भारतीयता से जुड़े नाम स्थापित किए हैं। राजपथ को कर्तव्य पथ बनाना और मुगल गार्डन को अमृत उद्यान बनाना इसके बड़े उदाहरण हैं।

विपक्षी दल आलोचना कर रहे हैं। वह सवाल उठा रहे हैं कि यह सब करके सरकार करना क्या चाह रही है? सरकार का इसके पीछे कोई छिपा हुआ एजेंडा नहीं है, बल्कि सरकार का उद्देश्य तो स्पष्ट है। सरकार भारतीय संस्कृति को उसका खोया हुआ गौरव लौटाने के लिए हर काम करना चाहती है। कुछ लोगों को नाम बदलने का यह अभियान प्रतीकात्मक लग सकता है, मगर अभियान यह भारतीय आत्मा, भारतीय विचार और भारतीय मूल्यों की पुनः स्थापना है।

पीएमओ, राजभवनों और केंद्रीय सचिवालय के नाम परिवर्तन के साथ ही भारत एक नए दौर में प्रवेश कर गया है, जहां शासन सेवा का प्रतीक बनेगा।

सोशल फोरम

आस्ट्रेलियाई कवि मारिया रिल्के के नाम एक पत्र

प्रिय रेनर मारिया रिल्के,

दरअस्ल, यह पत्र आपको कल लिखा था, दिसंबर की ठंड से ठिठुरते हुए, दिसंबर की शुरुआत के पहले दिन के उन अंधेरे क्षणों में, जब कुछ ही देर में रोज़ की तरह रात, अपनी पारी पूरी कर जाने की तैयारी कर रही थी। कदाचित, इस दुनिया से आपके जाने का भी यही दिन था। शायद यही समय भी।

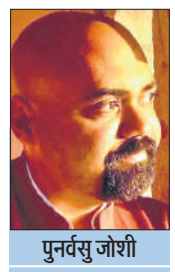

पुनर्वसु जोशी
ब्लॉगर

आपकी और मेरी सदी के बीच एक बड़े अंतर के बावजूद, मैं आपको यह ख़त उसी तरह भेज रहा हूं, जिस तरह कोई याचक अपनी प्रार्थनाओं को हर्फों में निथार कर, अपने इष्ट की मूर्ति के सामने चुपचाप रख आता है। भीतर यह उम्मीद लिए कि इष्ट की पाषाण प्रतिमा भले ही बोलेगी नहीं, पर व्यथा को सुन तो लेगी।

आपने एक बार लिखा था, सब कुछ मनन है और हमें सवालों के साथ तब तक जीना सीख लेना चाहिए, जब तक उनके जवाब, ऋतुओं की तरह ख़ुद-ब-ख़ुद हमारे सामने खुलने न लग जाएं। श्रीमान फ्रान्ज़ को लिखे आपके वे ख़त, एक आत्मीय ईमानदारी के साथ आज भी हमारे साथ मौजूद हैं। एकांत की याद दिलाते हुए, हमें हमारे अपने भीतर जाने का आग्रह करते हुए, लेकिन, कहीं न कहीं, आपके उन खतों को लिखने और मेरे इस जवाब को लिखने के बीच के समय में दुनिया बहुत ज़्यादा बदल गई है, रेनर। अब हवा में एक अजीब तरह की बैचेनी है और दुनिया की धड़कन में एक अजीब तरह की तेज़ी।

आप यह जान कर हैरान होंगे, रेनर! कि आज की इस दुनिया में, बिना अकेलापन महसूस किये एकांत में रहना कितना मुश्किल है। कहने को तो एकांत एक क्लिक से मिल सकता है, लकिन वह सच्चा एकांत, जैसा आप अपनी चिठ्ठियों में लिखा करते थे, वह एकांत जो आत्मा को विस्तार देता था, अब पहले से कहीं ज़्यादा दुर्लभ है। अब हम पहले से भी ज़्यादा आसानी से ख़ुद से पलायन करते हैं और पलायन के तरीके हमेशा हमारे मुट्ठी में ही रहते हैं।

और प्रेम की तो क्या ही कहूं, रेनर। क्या ही कहूं। प्रेम जो आपके लिए एक लम्बा चलने वाला शिष्यत्व था, एक ऐसा अनुभव जहां दो एकांत, एक दूसरे को बचाते हुए, एक दूसरे का अभिवादन करते हुए, एक दूसरे के इर्द-गिर्द रहते हैं, वैसा प्रेम लुप्त हो गया है।

शेष शुभ!

सादर, एक यायावर जो सतत आपके बताए एकांत की खोज में है।

सामयिकी

स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में जीते पहाड़ के गांव

उत्तराखंड के ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रो में बसे गांवों का दृश्यमान सौंदर्य किसी चित्र की तरह मन मोह लेता है, परंतु इन पहाड़ियों के भीतर एक ऐसी सच्चाई छिपी है, जिसे देखना जितना ज़रूरी है उतना ही कष्टकारी भी। यहां के तमाम गांव आज भी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा के इंतजार में है। गांव में न अस्पताल हैं न ही कोई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जबकि स्वास्थ्य सुविधा किसी भी समाज की पहली आवश्यकता होती है।

देश की जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का जीवन ग्रामीण क्षेत्रों में व्यतीत होता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार लगभग साठ प्रतिशत महिलाएं और चालीस प्रतिशत किशोरियां समय पर स्वास्थ्य जांच नहीं करा पातीं। पर्वतीय जिलों के लिए यह प्रतिशत और भी चिंताजनक हो जाता है, जहां दूरी और परिवहन की कमी स्वास्थ्य सेवा को और कठिन बना देती है।

निशा आर्य
एक्टिविस्ट

गांव की युवा पीढ़ी इस स्थिति को गहराई से महसूस करती है, हालांकि यह समस्या केवल युवाओं तक सीमित नहीं है। उम्रदराज लोगों के लिए यह स्थिति और गंभीर हो जाती है। किसी भी समाज में बुजुर्गों के लिए उपचार सबसे सहज उपलब्ध होना चाहिए, क्योंकि उन्हें सबसे अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। गांवों के कई परिवार आर्थिक रूप से भी कमजोर होते हैं। रोज मजदूरी करने वाले परिवारों के लिए इलाज का खर्च उठाना कठिन हो जाता है। ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा सुविधा की अनुपलब्धता के कारण कई बार लोग घरेलू उपचार पर निर्भर हो जाते हैं, या झोलाछाप डॉक्टरों के पास जाते हैं। इससे स्थिति बिगड़ने का खतरा बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य सुविधा केवल बीमार होने पर दवा तक सीमित नहीं होती, इसमें जागरूकता, रोकथाम, समय पर जांच और उचित सलाह शामिल होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं के लिए यह और भी महत्वपूर्ण होता है। कई रिपोर्ट बताती हैं कि दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान नियमित जांच नहीं मिल पाती, जिससे प्रसव संबंधी जटिलताओं का खतरा बढ़ जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी लगभग पैंतीस प्रतिशत घरों के पास स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचने में आधे घंटे से अधिक समय लगता है। पर्वतीय क्षेत्रों में यह दूरी और समय कहीं अधिक बढ़ जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार सुरक्षित मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य केंद्र की उपलब्धता अनिवार्य है।

सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई गई हैं, जिनका उद्देश्य दूरदराज क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाना है। परंतु योजनाओं का लाभ तभी मिलता है, जब वे सही ढंग से लागू हों। कागजों में दर्ज योजनाएं गांव के जीवन में बदलाव तब ही लाती हैं, जब वे व्यवहारिक रूप से जमीन पर उतरती हैं। अब समय आ गया है कि प्रशासन इस क्षेत्र की वास्तविक जरूरतों को समझें और स्वास्थ्य सुविधा को प्राथमिकता दे। यह किसी प्रदर्शन की मांग नहीं, बल्कि जीवन का अधिकार है। हर व्यक्ति को उपचार पाने का वही अधिकार होना चाहिए जो शहरों में रहने वालों को मिलता है।

गांव हमारे देश की वह तस्वीर हैं. जो अक्सर नजरों से दूर रह जाती है। प्रकृति भले ही खूबसूरत हो पर जीवन केवल सुंदर दृश्यों से नहीं चलता। जीवन चलता है सुविधा के साथ, सुरक्षा के साथ और इस विश्वास के साथ की बीमारी की स्थिति में इलाज पास ही उपलब्ध है। पहाड़ के गांवों का यह दर्द तभी कम होगा जब स्वास्थ्य सुविधा गांव तक पहुंचेगी और उनका जीवन सुरक्षित और संतुलित बन सकेगा।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं एलआईजी 23, प्रथम तल, आशियाना फेस-1, कांठ रोड मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- सुनील कुमार सिंह*** 0591-3551286(कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2020/79034 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुरादाबाद होगा)।

टाइम ट्रैवल

विज्ञान, अंतरिक्ष और समय का संगम

समय मानव जीवन की सबसे रहस्यमय अवधारणा है। यह वह आयाम है, जो हर क्षण हमारे अस्तित्व को आगे बढ़ाता है, परंतु जिसे हम रोक नहीं सकते। सभ्यता की शुरुआत से ही मनुष्य यह समझने की कोशिश करता आया है कि क्या समय की गति को नियंत्रित किया जा सकता है, क्या अतीत या भविष्य में यात्रा संभव है? समय यात्रा या टाइम ट्रैवल का विचार इसी जिज्ञासा से जन्मा और आज यह कल्पना से निकलकर वैज्ञानिक शोध का गंभीर विषय बन चुका है। हाल के वर्षों में वैज्ञानिकों ने समय और अंतरिक्ष को समझने के लिए कई नई खोजें की हैं। ऑस्ट्रिया की एकेडमी ऑफ साइंसेज और वियना विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने क्वांटम स्विच प्रयोग में एक फोटॉन को उसकी प्रारंभिक अवस्था में लौटाने में सफलता पाई। यह मानवीय स्तर की समय यात्रा तो नहीं है, लेकिन यह दर्शाता है कि सूक्ष्म कणों की दुनिया में समय की दिशा बदली जा सकती है। इसी तरह, एटम इंटरफेरोमीटर का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले सूक्ष्म समय विस्तार को मापने की नई विधि विकसित कर रहे हैं। यह प्रयोग भविष्य में ऐसी घड़ियां बनाने का आधार बन सकता है, जो ब्रह्मांडीय स्तर पर भी समय की सटीकता को माप सकें।

राजेश श्रीनेत
वरिष्ठ पत्रकार

कारण और परिणाम का संतुलन

इसी साल 2025 में एक नए सिद्धांत में कोनिकल सिंगुलैरिटी वाले ब्रह्मांड की परिकल्पना की गई है, जिसमें समय एक चक्र के रूप में घूम सकता है। इस मॉडल के अनुसार यदि ब्रह्मांड की संरचना किसी स्थान पर कोन के आकार में मुड़ी हुई हो, तो वहां समय अपने आप पर लौट सकता है यानी अतीत और भविष्य आपस में जुड़ सकते हैं। एक अन्य अध्ययन ने ग्रैंडफादर पैराडॉक्स जैसी दार्शनिक उलझनों का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत किया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि यदि कोई प्रणाली समय चक्र से गुजरे, तो उसकी ऊर्जा और स्मृति स्वतः रीसेट हो जाती है। इस प्रकार, कारण और परिणाम का संतुलन बना रहता है और कोई विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता। यह विचार क्वांटम संगति सिद्धांत से जुड़ा हुआ है। इसी बीच कॉस्मिक स्ट्रिंग की संरचनाओं पर भी अध्ययन चल रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि ऐसी अत्यंत घनी और पतली स्ट्रिंग्स ब्रह्मांड में मौजूद हों, तो वे अंतरिक्ष-काल को इस प्रकार मोड़ सकती हैं कि बंद काल वक्र बन जाए। इससे समय एक लूप में बदल सकता है, जिससे समय यात्रा सैद्धांतिक रूप से संभव हो जाती है।

अतीत में लौटना अभी भी रहस्य

बीसवीं सदी की शुरुआत में अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत ने समय और अंतरिक्ष की हमारी समझ को पूरी तरह बदल दिया था। इससे पहले इन्हें दो अलग-अलग इकाइयां माना जाता था, परंतु आइंस्टीन ने बताया कि ये दोनों मिलकर अंतरिक्ष-काल (स्पेस-टाइम) नामक एक चार आयामी संरचना बनाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, जब कोई वस्तु बहुत तेज गति से चलती है, तो उसके लिए समय धीमा हो जाता है। यही समय विस्तार (टाइम डाइलेशन) है, जो समय यात्रा की वैज्ञानिक नींव रखता है। यह विचार केवल सैद्धांतिक नहीं है। प्रयोगों में पाया गया है कि पृथ्वी के चारों ओर उपग्रहों में लगे परमाणु घड़ियों का समय जमीन की घड़ियों से थोड़ा धीमा चलता है। यह अंतर बहुत सूक्ष्म होता है, पर सटीक गणनाओं से इसकी पुष्टि हुई है। इसका अर्थ यह है कि जो वस्तु तेजी से चल रही है, उसके लिए समय की गति सचमुच बदल जाती है। ब्लैक होल के पास यह प्रभाव और अधिक स्पष्ट होता है। वहां गुरुत्वाकर्षण इतना प्रबल होता है कि समय लगभग थम जाता है। वैज्ञानिक मानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति ब्लैक होल के निकट कुछ मिनट बिताए और फिर पृथ्वी पर लौटे, तो यहां सैकड़ों वर्ष बीत चुके होंगे। इस प्रकार भविष्य की यात्रा सैद्धांतिक रूप से संभव है। परंतु अतीत में लौटना अब भी रहस्य है, क्योंकि भौतिकी के अधिकांश नियम समय की दिशा को उलटने की अनुमति नहीं देते। सापेक्षता सिद्धांत से ही वर्महोल की कल्पना उत्पन्न हुई, एक काल्पनिक सुरंग जो ब्रह्मांड के दो दूरस्थ बिंदुओं को जोड़ सकती है। यदि वर्महोल के दोनों सिरों पर समय की गति अलग-अलग हो, तो यह सैद्धांतिक रूप से समय में आगे पीछे जाने का मार्ग बन सकता है। हालांकि अब तक इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला है, पर वैज्ञानिक इसे गणितीय समीकरणों के माध्यम से संभव मानते हैं।

मानव पर गहरा प्रभाव

खगोलशास्त्रियों ने दूरस्थ क्वासरों के अध्ययन से यह भी पाया है कि अत्यधिक दूर स्थित ब्रह्मांडीय पिंडों की गतिविधियों में समय का प्रवाह अपेक्षा से धीमा दिखाई देता है। यह कॉस्मिक टाइम डाइलेशन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यानी जैसे-जैसे ब्रह्मांड फैल रहा है, समय स्वयं भी फैल रहा है। क्वांटम स्तर पर भी समय को लेकर नई समझ विकसित हो रही है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय और स्थान संभवतः ब्रह्मांड के मूल तत्व नहीं, बल्कि किसी गहरे क्वांटम ढांचे से उत्पन्न गुण हैं। यदि यह सत्य है, तो समय की दिशा और प्रवाह केवल हमारी चेतना का अनुभव हो सकता है, वास्तविक नहीं। समय यात्रा का विषय दार्शनिक दृष्टि से भी उतना ही रोचक है। यदि कोई व्यक्ति अतीत में जाकर कुछ बदल दे, तो क्या वर्तमान बदल जाएगा? यह प्रश्न मानव स्वतंत्र इच्छा और नियति दोनों पर गहरा प्रभाव डालता है। स्थिर ब्रह्मांड सिद्धांत के अनुसार अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों समान रूप से अस्तित्व में हैं, हम केवल एक बिंदु से दूसरे की ओर बढ़ते हैं। इस दृष्टिकोण में समय यात्रा केवल धारणा का विस्तार है, वास्तविक गमन नहीं। विज्ञान कथाओं में यह विषय हमेशा से लोकप्रिय रहा है। एचजी वेल्स की द टाइम मशीन से लेकर इंटरस्टेलर और टेनेट जैसी फिल्मों तक, समय यात्रा ने लोगों को न केवल मनोरंजन दिया है, बल्कि विज्ञान के प्रति जिज्ञासा भी जगाई है। इंटरस्टेलर में दिखाया गया ब्लैक होल का समय विस्तार वास्तविक आइंस्टीनियन गणनाओं पर आधारित था और वैज्ञानिक रूप से सही भी माना गया। इन सभी प्रयोगों और सिद्धांतों से यह स्पष्ट है कि समय केवल एक बहती हुई नदी नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की संरचना का सक्रिय तत्व है। हम अभी उसकी सतह को ही समझ पाए हैं, पर जैसे-जैसे तकनीक और सिद्धांत आगे बढ़ रहे हैं, भविष्य में समय को समझने और नियंत्रित करने की संभावना वास्तविक होती जा रही है। कुल मिलाकर समय यात्रा अब केवल कल्पना की सीमा में सीमित नहीं रही, बल्कि आधुनिक भौतिकी की गंभीर खोज बन चुकी है। चाहे यह कभी व्यावहारिक रूप ले या नहीं, यह मानवता को यह विश्वास अवश्य दिलाती है कि ब्रह्मांड में असंभव कुछ नहीं है।

जब विज्ञान ने दिमाग को काबू करने की कोशिश की

रोचक किस्सा

मैड्रिड विश्वविद्यालय के स्नातक जोस डेलगाडो (1915-2011) को येल विश्वविद्यालय में भले ही एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर का पद मिला हो, लेकिन इस प्रतिष्ठित संस्थान के शरीर विज्ञान विभाग में उनका शोध बेहद अजीब था, क्योंकि यह कुल मिलाकर मन पर नियंत्रण से संबंधित था। हम मजाक नहीं कर रहे हैं: 1950 और 60 के दशक में येल में रहते हुए, डेलगाडो ने प्राइमेट्स के मस्तिष्क में इलेक्ट्रोड इम्प्लांट लगाए और एक रिमोट कंट्रोल का इस्तेमाल करके रेडियो फ्रीक्वेंसी जारी की जिससे जानवर जटिल गतिविधियां कर पाए। बाद में, उन्होंने एक बैल के मस्तिष्क में एक इम्प्लांट लगाया और उस जानवर के साथ रिंग में उतरे और अपने ट्रांसमीटर का इस्तेमाल करके उसे चार्ज होने से पहले ही रोक दिया। शायद सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह थी कि डेलगाडो ने कम से कम 25 लोगों को तार से जोड़ा था। व्यावहारिक रूप से, उनके उपकरण का असर सिर्फ लोगों की आक्रामकता पर था, लेकिन वे मन पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार प्रयास करते रहे, एक बार उन्होंने डरावने अंदाज में कहा था, "हमें मस्तिष्क को इलेक्ट्रॉनिक रूप से नियंत्रित करना होगा। किसी दिन सेनाओं और जनरलों को मस्तिष्क के विद्युतीय उत्तेजना से नियंत्रित किया जाएगा।"

जंगल की दुनिया

गोल्डन लंगूर: असम-भूटान की सीमा का सुनहरा रत्न

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम और पड़ोसी देश भूटान की सीमा पर बसे घने, शांत और जैव-विविधता से समृद्ध जंगलों में एक अनोखा जीव पाया जाता है-गोल्डन लंगूर। अपनी चमकीली सुनहरी फर और सौम्य व्यवहार के कारण यह बंदर दुनिया की सबसे रहस्यमयी और मनमोहक प्रजातियों में गिना जाता है। हैरानी की बात यह है कि इतना सुंदर और दुर्लभ जीव वैज्ञानिकों की नजर में पहली बार 1950 में आया। उससे पहले तक स्थानीय लोग इसके बारे में जानते तो थे, लेकिन आधुनिक विज्ञान को इसकी उपस्थिति की कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। गोल्डन लंगूर अपनी लंबी रेशमी पूंछ, नरम सुनहरी से लेकर क्रीम रंग तक फैली फर और अभिव्यक्तिपूर्ण चेहरे की वजह से तुरंत ध्यान आकर्षित करता है। ये आमतौर पर 40 से 50 कीड़ों, फलों, पत्तियों और फूलों पर निर्भर रहते हैं। इनका अधिकांश जीवन ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर बीतता है, जहां ये छोटे समूहों में रहते हुए शांतिपूर्वक भोजन और आश्रय खोजते हैं।

इनकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये 'एंडेमिक' प्रजाति हैं, यानी दुनिया में केवल एक सीमित क्षेत्र असम के पश्चिमी हिस्से और भूटान के दक्षिणी इलाकों में ही पाए जाते हैं। यही सीमित आवास इन्हें और भी संवेदनशील बनाता है। जंगलों का कटाव, मानव बस्तियों का फैलाव, सड़क निर्माण और कृषि गतिविधियों के कारण इनका प्राकृतिक घर लगातार सिकुड़ता जा रहा है। इसी वजह से गोल्डन लंगूर आज संकटग्रस्त श्रेणी में शामिल है और इनका संरक्षण बेहद आवश्यक हो गया है। सरकारों, स्थानीय समुदायों और संरक्षण संगठनों द्वारा इनके आवास को बचाने, जागरूकता बढ़ाने और वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। गोल्डन लंगूर न केवल प्राकृतिक विरासत का अनमोल हिस्सा हैं, बल्कि यह भी याद दिलाते हैं कि पृथ्वी पर मौजूद हर प्रजाति कितनी कीमती है और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी हम सबकी है। - फीचर डेस्क

तीन हजार तारों का भरापूरा परिवार सप्तऋषि तारामंडल

जानकारी

अंतरिक्ष के तारामंडलों में सर्वाधिक लोकप्रिय सप्तऋषि तारामंडल का अस्तित्व 12 .7 करोड़ साल पुराना है। सप्तऋषि तारामंडल तीन हजार तारों का भरा पूरा परिवार है। अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना के वैज्ञानिकों के नए शोध में इसका खुलासा हुआ है। सप्तऋषि तारामंडल को प्लीएड्स (सेवन सिस्टर्स) भी कहा जाता है। यह तारा मंडल हिंदू पुराणों में खास स्थान रखता है, तो दुनिया में इससे अधिक लोकप्रिय कोई दूसरा तारामंडल नहीं है। सप्तऋषि में सात तारों को बखूबी नग्न आंखों से देखा जा सकता है। इसके किस्से और चर्चे दुनियाभर में सदियों से मशहूर हैं। मगर नई खोज ने इस तारामंडल की गहराई में झांकने का प्रयास किया और नई जानकारियां सार्वजनिक की हैं।

बबलू चंद्रा
नैनीताल

पूर्व में इस मंडल में माना जाता था कि सप्तऋषि में सात तारों के साथ एक हजार तारों का विशाल समूह है, मगर नई खोज के अनुसार इस तारा मंडल में तीन हजार तारे शामिल हैं, जो एक ही समय में और एक ही गैस के बादलों से इनका निर्माण हुआ है। यह दो हजार प्रकाशवर्ष के दायरे में फैले हुए हैं। तारों की इस अजूबी दुनिया को दूरबीन से बखूबी देखा जा सकता है। अब यह तारे एक दूसरे से बहुत दूर-दूर बिखर चुके हैं।

खोजकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि स्वच्छंद तारा समूह एक स्थान में स्थायी नहीं होते हैं। सप्तऋषि मंडल में कुछ मिलियन सालों में आकाश गंगा के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव और पास के बादलों से टक्कर के कारण तारे धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर जा रहे हैं। यानी बिखरने लगे हैं। अगले कुछ लाखों साल बाद इसके सातों चमकीले खूबसूरत तारे अलग-अलग दिशाओं में चले जाएंगे।

सप्तऋषि मंडल का धार्मिक आध्यात्मिक व वैदिक महत्व

हिंदू धर्म और ज्योतिषशास्त्र में सप्तऋषि तारा मंडल का बहुत ऊंचा धार्मिक, आध्यात्मिक और वैदिक महत्व है और पवित्र माना जाता है। सप्तऋषि तारा मंडल को सात महान ऋषियों का आकाशीय रूप माना जाता है, जिनमें कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि व भारद्वाज शामिल हैं। ये सात ऋषि वेदों के द्रष्टा हैं और ब्रह्मज्ञान के संरक्षक माने जाते हैं।

वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के तारों के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे कहते हैं कि सप्तऋषि तारामंडल खगोल वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र है। समय-समय पर वैज्ञानिक इस पर अध्ययन करते आ रहे हैं। नया अध्ययन बेहद दिलचस्प है। इस तारामंडल की भविष्य में और कई जानकारियां निकलकर सामने आएंगी।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	85,265.32	26,033.75
बढ़त	158.51	47.75
प्रतिशत में	0.19	0.18

सोना 1,31,600 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,80,000 प्रति किलो

अमृत विचार

मुरादाबाद, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

कारोबार

बिजनेस ब्रीफ

नोकिया ने एयरटेल से मिलाया हाथ

नई दिल्ली। प्रमुख दूरसंचार कंपनी नोकिया ने तीसरे पक्ष के डेवलपरों को नेटवर्क क्षमताएं उपलब्ध कराने के लिए भारती एयरटेल के साथ साझेदारी की है। इस साझेदारी से नए प्रौद्योगिकी समाधान तैयार होंगे और मौद्रीकरण के नए अवसर पैदा होंगे। नोकिया ने कहा कि सफल परीक्षणों के बाद वह अपने 'नेटवर्क ऐज कोड' मंच के जरिये एयरटेल के नेटवर्क एपीआई को डेवलपरों, सिस्टम इंटीग्रेटर और विभिन्न उद्यमों के लिए ग्राहकी मॉडल पर उपलब्ध कराएगी। नेटवर्क एपीआई का मतलब ऐसे सॉफ्टवेयर इंटरफेस है जिनकी मदद से बाहरी डेवलपर किसी दूरसंचार नेटवर्क की लोकेशन सेवाएं, सुरक्षा, 5जी नेटवर्क क्षमता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी क्षमताओं को अपने ऐप, मंच या उद्यम समाधान में जोड़ सकते हैं। एयरटेल बिजनेस के सीईओ शरत सिन्हा ने इसकी जानकारी दी।

एल्केम लैब्स को 27.14 लाख का जीएसटी नोटिस

नई दिल्ली। दवा कंपनी एल्केम लैबोरेटरीज को उत्तराखंड जीएसटी विभाग से 27.14 लाख के जीएसटी की मांग को लेकर नोटिस मिला है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि कि उसे 2018-19 से 2022-23 की अवधि के लिए देहरादून सेंट्रल जीएसटी डिवीजन से एक आदेश मिला है, जिसमें 27,79,266 रुपये के जुर्माने के साथ 27,14,603 रुपये के जीएसटी की मांग की गई है। अधिकारियों ने केंद्रीय माल एवं सेवा कर (सीजीएसटी) / केंद्रीय माल एवं सेवा कर (एसजीएसटी)/ एकीकृत माल एवं सेवा कर (आईजीएसटी) अधिनियम, 2017 के लागू प्रावधानों के तहत लागू ब्याज की भी मांग की है।

सुजलॉन तीन पवन चक्की करेगी स्थापित

पुडुचेरी। वीकरणीय ऊर्जा कंपनी सुजलॉन ग्रुप अपने ऑर्डर बुक के निष्पादन को तेज करने और घरेलू पवन उद्योग की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए तीन कृत्रिम मेधा (एआई)-संचालित पवन चक्की कारखानों की स्थापना करने की योजना बना रही है। कंपनी के सह-संस्थापक गिरीश तांती ने यह जानकारी दी। योजना के तहत गुजरात और कर्नाटक में दो पवन चक्की स्थापित की जाएंगी, जबकि तीसरी की जगह तय की जा रही है। सुजलॉन के पास जैसलमेर, भुज, रतलाम, धुले और अनंतपुर में पांच पवन चक्की कारखाने हैं।

भारत-रूस व्यापार को संतुलित बनाने की जरूरत

केंद्रीय मंत्री गोयल बोले- द्विपक्षीय व्यापार 70 अरब डॉलर तक पहुंचा

- दोनों पक्षों ने 2030 तक 100 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य किया निर्धारित

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत-रूस व्यापार मंच के दौरान केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, रूसी राष्ट्रपति कार्यालय के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ मक्सिम ओरेशिकन और फिक्की अध्यक्ष अनंत गोयनका।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को कहा कि भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने तथा इसे और अधिक संतुलित बनाने की दिशा में काम करने के व्यापक अवसर मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता वस्तुएं, खाद्य उत्पाद, मोटर वाहन, ट्रैक्टर, भारी वाणिज्यिक वाहन, स्मार्टफोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक, औद्योगिक कल-पुर्जे और वस्त्र भारत से रूस को निर्यात बढ़ाने की क्षमता रखने वाले में क्षेत्रों में शामिल हैं।

गोयल ने उद्योग मंडल फिक्की द्वारा आयोजित भारत-रूस व्यापार मंच की बैठक में कहा द्विपक्षीय व्यापार 70 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच रहा है, लेकिन हम आराम से नहीं बैठ सकते, हमें आगे बढ़ना होगा और संतुलन बनाना होगा। भारत का रूस को निर्यात 2024-25 में 4.9 अरब अमेरिकी डॉलर रहा जबकि आयात 63.8 अरब डॉलर था। इससे व्यापार घाटा करीब 59 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। दोनों पक्षों ने 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि भारत सेवा क्षेत्र में भी रूस को बड़ी पेशकश कर सकता है।

रूसी संघ के राष्ट्रपति कार्यालय के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ मैक्सिम ओरेशिकन ने कहा कि रूस के आयात में भारत की हिस्सेदारी दो प्रतिशत से भी कम है और इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। ओरेशिकन ने कहा कि अधिक संतुलित व्यापार के लिए इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत छह प्रमुख क्षेत्रों में आपूर्ति बढ़ा सकता है जिनमें कृषि, औषधि, दूरसंचार उपकरण, औद्योगिक कल-पुर्जे एवं मानव संसाधन शामिल हैं। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने प्रक्रियाओं को सरल बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि भारतीय व्यवसाय रूस को निर्यात बढ़ा सकें।

भारत-कनाडा ने व्यापार पर बातचीत की रूपरेखा और तौर-तरीकों पर की चर्चा

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और कनाडा के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री मनिंदर सिद्धू ने बुधवार को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत शुरू करने की रूपरेखा, उद्देश्यों और तौर-तरीकों पर चर्चा की। दोनों पक्ष हाल ही में इस समझौते पर बातचीत फिर से शुरू करने पर सहमत हुए हैं, जिसे आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) कहा जाता है। इसका उद्देश्य 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 50 अरब डॉलर तक बढ़ाना है। गोयल ने एक्स पर लिखा, कनाडा के साथ व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए मंत्री सिद्धू के साथ सार्थक बातचीत हुई। हमने सीईपीए वार्ता शुरू करने की तैयारियों के तहत समग्र दृष्टिकोण, रूपरेखा, व्यापक उद्देश्यों और तौर-तरीकों पर शुरुआती और व्यापक चर्चा की। उन्होंने अगले साल कनाडा में एक उच्च-स्तरीय व्यापार और निवेश प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने पर भी सहमति जतायी। उल्लेखनीय है कि 2023 में, कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत का हाथ होने का आरोप लगाया था। उसके बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आई थी। उसके बाद कनाडा ने भारत के साथ समझौते पर बातचीत रोक दी थी। सीईपीए एक प्रकार का मुक्त व्यापार समझौता है जिसके तहत दो देश अपने बीच व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की अधिकतम संख्या पर सीमा शुल्क को या तो काफी कम कर देते हैं या समाप्त कर देते हैं।

स्बरबैंक भारत में करेगा 10 करोड़ डॉलर का निवेश

नई दिल्ली, एजेंसी

- 10 शहरों में 10 शाखाएं खोलने के लिए आरबीआई से मांगा लाइसेंस

रूस के सबसे बड़े बैंक स्बरबैंक ने गुरुवार को कहा कि वह भारत में अपने कारोबार का धीरे-धीरे विस्तार करने की योजना बना रहा है और तीन वर्ष में यहां 10 करोड़ डॉलर का निवेश करेगा।

स्बरबैंक के सीईओ एवं चेयरमैन हरमन ग्रेफ ने कहा कि हमारे पास यहां पूर्ण बैंकिंग लाइसेंस है। हम बी2बी कारोबार को बढ़ाएंगे और बी2सी (व्यवसाय से उपभोक्ता) खंड में प्रवेश करेंगे। 2010 में अपना परिचालन शुरू करने वाले इस बैंक ने आरबीआई से 10 शहरों में 10 शाखाएं खोलने के लिए लाइसेंस मांगा है। उन्होंने कहा कि हमने भारत के केंद्रीय बैंक से कार्यालय खोलने के लिए 10 शाखा लाइसेंस देने का अनुरोध किया है। वर्तमान में इसकी दो शाखाएं हैं। बेंगलुरु में एक आईटी इकाई है जो आंतरिक डेटा प्रसंस्करण केंद्र के रूप में कार्य करती है।

स्बरबैंक, जेएससी फर्स्ट ने नया म्यूचुअल फंड 'फर्स्ट-इंडिया' किया पेश

रूसी बैंक स्बरबैंक और जेएससी फर्स्ट एसेट मैनेजमेंट ने नया म्यूचुअल फंड 'फर्स्ट-इंडिया' पेश किया है जो निफ्टी 50 सूचकांक के प्रदर्शन से जुड़े निवेश की पेशकश करता है। इससे रूसी खुदरा निवेशकों को भारत के शेयर बाजार में सीधे निवेश का मौका मिलेगा। शेयर बाजार ने गुरुवार को कहा कि इस फंड की पेशकश की घोषणा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया (एनएसई) में आयोजित कार्यक्रम में स्बरबैंक के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं कार्यकारी बोर्ड के चेयरमैन हरमन ग्रेफ ने अपनी भारत की व्यावसायिक यात्रा के दौरान की।

फिच ने भारत की वृद्धि अनुमान को बढ़ाकर किया 7.4%

नई दिल्ली, एजेंसी

- उपभोक्ता खर्च में वृद्धि व जीएसटी सुधारों के साथ बेहतर धारणा के कारण वृद्धि अनुमान को बढ़ाया

साख निर्धारित करने वाली एजेंसी फिच रेटिंग्स ने गुरुवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि अनुमान को 6.9 से बढ़ाकर 7.4 प्रतिशत कर दिया। मुख्य रूप से उपभोक्ता खर्च में वृद्धि और जीएसटी सुधारों के साथ बेहतर धारणा के कारण वृद्धि अनुमान को बढ़ाया गया है।

फिच ने कहा कि घटती मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को दिसंबर में नीतिगत दरों में एक और कटौती करके इसे 5.25 प्रतिशत पर लाने गुंजाइश देती है। आरबीआई इस साल अब तक मुख्य नीतिगत दर रेपो में एक प्रतिशत की कटौती कर चुका है। उसने कहा कि जुलाई-सितंबर तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर बढ़कर 8.2 प्रतिशत हो गई जो इससे पिछली अप्रैल-जून तिमाही के 7.8 प्रतिशत थी। रेटिंग एजेंसी ने दिसंबर के लिए अपनी वैश्विक आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 (मार्च के अंत तक) की शेष अवधि में वृद्धि धीमी रहेगी, लेकिन हमने पूरे वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि अनुमान को सितंबर के 6.9 से बढ़ाकर 7.4 प्रतिशत कर दिया है। इस वर्ष वृद्धि को मुख्य रूप से निजी उपभोक्ता खर्च गति दे रहा है। इसका कारण मजबूत वास्तविक आय गतिशीलता, उपभोक्ता धारणा में सुधार और हाल ही में लागू किए गए वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) सुधारों का प्रभाव है। जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाये जाने के तहत लगभग 375 वस्तुओं पर कर की दरें कम की गई है। इससे 99 प्रतिशत से अधिक उपभोग की वस्तुएं सस्ती हुई हैं। जीएसटी में संशोधित दरें 22 सितंबर से प्रभावी हुई हैं।

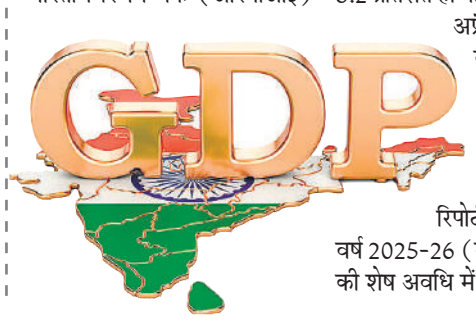

2026-27 में जीडीपी वृद्धि धीमी होकर रहेगी 6.4%

फिच को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2026-27 में जीडीपी वृद्धि दर धीमी होकर 6.4 प्रतिशत रहेगी। इसने अनुमान लगाया है कि वित्तीय स्थिति में सुधार के साथ अगले वित्त वर्ष (2026-27) की दूसरी छमाही में निजी निवेश में तेजी आएगी। खाने-पीने की चीजों की कम कीमतों के कारण अक्टूबर में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति 0.3 प्रतिशत के अबतक के सबसे निचले स्तर पर आ गई। फिच ने कहा कि घटती मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को दिसंबर में नीतिगत दर में एक और कटौती करके इसे 5.25 प्रतिशत करने की गुंजाइश देगी...। आरबीआई शुक्रवार को अपनी मौद्रिक नीति समीक्षा की घोषणा करेगा। फिच के अनुसार, मुख्य मुद्रास्फीति में सुधार और गतिविधियों के मजबूत बने रहने के अनुमान के साथ आरबीआई नीतिगत दर में कटौती के उच्चतम स्तर तक पहुंच गया है और अगले दो साल तक नीतिगत दर 5.25 प्रतिशत पर बनी रहेगी।

मौद्रिक नीति के फैसलों की आज घोषणा

मुंबई, एजेंसी

- रेपो दर में 0.25 प्रतिशत कटौती किए जाने की उम्मीद, गवर्नर मल्होत्रा एमपीसी की तीन-दिवसीय बैठक में लिए गए निर्णयों की करेंगे घोषणा

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) शुक्रवार को द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा में लिए गए निर्णयों की घोषणा करेगा। विशेषज्ञों ने रेपो दर में 0.25 प्रतिशत कटौती किए जाने की उम्मीद जताई है। आरबीआई की ओर से गुरुवार को जारी बयान के मुताबिक, गवर्नर संजय मल्होत्रा शुक्रवार सुबह मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तीन-दिवसीय बैठक में लिए गए फैसलों की घोषणा करेंगे। अगली द्विमासिक मौद्रिक नीति पर एमपीसी की बैठक बुधवार को शुरू हुई थी।

यह बैठक घटती मुद्रास्फीति, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की तेज वृद्धि, डॉलर के मुकाबले रुपये के 90 के पार जाने और मौजूदा भू-राजनीतिक तनावों की पृष्ठभूमि में हो रही है। खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट के बीच आरबीआई ने फरवरी से रेपो दर में तीन किस्तों में कुल एक प्रतिशत की कटौती की है। हालांकि पिछली दो बार से रेपो दर को 5.5 प्रतिशत पर स्थिर रखा गया है। कई विशेषज्ञों का कहना है कि वृद्धि दर मजबूत बनी हुई है लेकिन खुदरा मुद्रास्फीति में उल्लेखनीय गिरावट ने प्रमुख अल्पकालिक ऋण दर में कटौती की अतिरिक्त गुंजाइश पैदा कर दी है।

आरबीआई गवर्नर ने भी पिछले महीने कहा था कि नीतिगत ब्याज दरों में और कटौती की गुंजाइश है। भारतीय युवा शक्ति ट्रस्ट (बीवाईएसटी) की संस्थापक लक्ष्मी वेंकटरमण वेंकटेशन ने कहा कि मौजूदा रेपो दर एक साल पहले की 6.5 प्रतिशत दर से काफी नीचे है।

अक्टूबर में मुद्रास्फीति एक दशक के अपने सबसे निचले स्तर 0.25 प्रतिशत पर रही और थोक मूल्यों में 1.21 प्रतिशत की गिरावट आई है। सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को दिए जाने वाले लगभग 70 प्रतिशत ऋण सीधे रेपो दर से जुड़े होते हैं।

उन्होंने कहा कि नीतिगत माहौल में सुधार के बावजूद, ऋण का अंतर अब भी व्यापक है और कार्यान्वयन स्तर पर वित्त तक पहुंच अब भी कठिन है। इस स्थिति को देखते हुए, ब्याज दर में 0.25 से 0.50 प्रतिशत की और कटौती करके उन्हें 5.25 प्रतिशत पर लाना उचित एवं आवश्यक है।

राष्ट्रीय

उपकर से मिला राजस्व राज्यों से होगा साझा

वित्त मंत्री सीतारमण ने लोकसभा में पेश किया स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को लोकसभा में कहा कि पान मसाला के उत्पादन पर उपकर लगाने के प्रावधान का मकसद स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाना है तथा इससे मिलने वाले राजस्व का एक हिस्सा राज्यों के साथ साझा किया जाएगा। उन्होंने सदन में 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' को चर्चा और पारित कराने के लिए रखते हुए यह भी कहा कि इस विधेयक का माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ेगा तथा पान मसाला के उपभोग पर 40 प्रतिशत की जीएसटी बरकरार रहेगा।

सीतारमण ने कहा कि इस विधेयक का उद्देश्य दो प्रमुख आयामों स्वास्थ्य सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संसाधनों का स्रोत तैयार करना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरत होती है कि सतत निवेश हो। यह उपकर आवश्यक वस्तुओं पर नहीं लगाया जाएगा। यह सिर्फ ऐसी हानिकारक वस्तुओं पर लगाया जाएगा, जो स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि इस उपकर को लगाने से पान मसाला का दाम बढ़ेगा तो इन्हें खाने में रुकावट पैदा होगी। इससे जो राजस्व मिलेगा उसमें से एक हिस्सा राज्यों को भी देने का प्रावधान किया गया है ताकि वे स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं में इसका उपयोग कर सकें।

लोकसभा में विधेयक पर चर्चा करतीं निर्मला सीतारमण

- बोलीं- जीएसटी की व्यवस्था पर विधेयक का नहीं पड़ेगा कोई असर
- पान मसाला के उपभोग पर 40 प्रतिशत की जीएसटी रहेगा बरकरार

राजस्व हानि की भरपाई के लिए था क्षतिपूर्ति उपकर

एक जुलाई 2017 को जीएसटी की शुरूआत हुई थी तो जीएसटी कार्यान्वयन के कारण राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए 30 जून 2022 तक पांच वर्षों के लिए क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था लागू की गई थी। क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था को बाद में 31 मार्च 2026 तक चार साल के लिए बढ़ा दिया गया था और इसके संग्रह का उपयोग उस ऋण को चुकाने के लिए किया जा रहा है जो केंद्र ने राज्यों को कोविड महामारी की अवधि के दौरान जीएसटी राजस्व हानि की भरपाई के लिए लिया था।

सड़क दुर्घटना पीड़ितों के कैशलेस उपचार के 20% अनुरोध खारिज

नई दिल्ली। सरकार ने बताया कि सड़क दुर्घटना के पीड़ितों के कैशलेस उपचार की योजना के तहत किए 6,833 अनुरोधों में से अब तक सिर्फ 5,480 पीड़ित ही पात्र मिले हैं, और बाकी 1,353 मामले (20 प्रतिशत) पुलिस ने खारिज किए हैं। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लोकसभा में बताया कि मोटर वाहन दुर्घटना कोष के तहत कुल 73,88,848 रुपये की धनराशि दी गई है। गडकरी ने कहा कि सड़क दुर्घटना के पीड़ितों के 'कैशलेस' उपचार की योजना, 2025 के तहत, हर दुर्घटना के मामले में पीड़ित का 1.5 लाख रुपये तक का 'कैशलेस' उपचार किया जाएगा।

विधेयक का उद्देश्य स्वास्थ्य से जुड़े खर्चों के लिए संसाधन जुटाना

उन्होंने कहा कि पान मसाला को लेकर जीएसटी की जो व्यवस्था है, उसमें कोई बदलाव नहीं होगा। जीएसटी के तहत पान मसाला के उपभोग पर सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत कर भी लगाया जा रहा है। 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पान मसाला पर लगाए जाने वाले क्षतिपूर्ति उपकर की जगह लेगा। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े खर्चों के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाना है। इसके तहत उन मशीनों या प्रक्रियाओं पर उपकर लगाया जाएगा, जिनके माध्यम से उक्त वस्तुओं का निर्माण या उत्पादन किया जाता है।

वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार

नई दिल्ली, एजेंसी

- विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा- अमेरिका के पास सुरक्षा आधार पर निर्णय लेने का अधिकार

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार को राज्यसभा में कहा कि वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार है और अमेरिका के पास उसके राष्ट्रीय सुरक्षा आकलन के आधार पर वीजा देने या नहीं देने का निर्णय लेने का अधिकार है। उच्च सदन में पूरक प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने बताया कि अमेरिका ने हाल ही में, ताजा घोषणा बुधवार को, वीजा निर्णयों को पूरी तरह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा फैसला घोषित किया है।

जयशंकर ने यह बात ऐसे समय पर कही है जब इस बात पर चिंता जताई जा रही है कि अमेरिका ने वीजा 'स्क्रीनिंग' प्रणाली को और कड़ा कर दिया है और अब वह आवेदकों के सोशल मीडिया खातों की विस्तृत जांच भी करेगा, जिसका असर भारतीय आवेदकों पर भी पड़ने का अनुमान है। जयशंकर ने कहा कि वीजा जारी करना किसी भी सरकार का संप्रभु अधिकार है। अमेरिका के मामले में, उनका यह स्पष्ट मत है और ताजा घोषणा कल की है कि हर वीजा निर्णय एक राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय है। इसलिए वे किसी व्यक्ति की राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित स्थिति का आकलन कर वीजा पर निर्णय लेने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सरकार ने कहा है कि छात्र वीजा मामलों में वे सभी आवेदकों से सोशल मीडिया खातों की गोपनीयता सेटिंग को सार्वजनिक करने को कहेंगे ताकि वे सोशल मीडिया पोस्ट की पूरी तरह जांच कर सकें।

न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं : मेघवाल

सरकार ने गुरुवार को राज्यसभा में कहा कि देश की विभिन्न अदालतों में न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है। उच्च सदन में विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने भाजपा के संजय सेठ द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में यह बात कही। सेठ ने सरकार को ध्यान दिलाया कि सरकार द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में उठाए गए विभिन्न कदमों से देश में नागरिकों की औसत आयु सीमा बढ़ गयी है। अमेरिका में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश आजीवन सेवा देते हैं, जबकि ब्रिटेन, बेल्जियम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में इनकी आयु 70 वर्ष है। भारत में जिला अदालतों में न्यायाधीशों की आयु सीमा 60 वर्ष, उच्च न्यायालयों में 62 वर्ष और उच्चतम न्यायालय में 65 वर्ष है। उन्होंने सरकार से जानना चाहा कि अदालतों में लंबित मामलों की बड़ी संख्या को देखते हुए क्या वह न्यायाधीशों की पद पर बने रहने की आयु सीमा बढ़ाने पर विचार कर रही है। इसके जवाब में मेघवाल ने कहा कि अभी कोई ऐसा प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए बनाएं राष्ट्रीय कानून

राज्यसभा सदस्य फौजिया खान ने गुरुवार को डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाने की मांग की। राकांपा (एसपी) की नेता खान ने कहा कि डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी जीवनरक्षक होते हैं और लोग उन पर ईश्वर के बाद सर्वाधिक भरोसा करते हैं। लेकिन आज यही डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी धमकाए जा रहे हैं, उन पर हमले हो रहे हैं, उन्हें गालियां दी जा रही हैं और भीड़ द्वारा घेरा भी जा रहा है। उन्होंने कहा कि समस्या का स्तर इतना बड़ा है कि उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

जल जीवन मिशन संबंधी शिकायतों पर होगी कार्रवाई : पाटिल

नई दिल्ली। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने लोकसभा में कहा कि 'जल जीवन मिशन' को लेकर सांसदों की तरफ से जो शिकायतें आई हैं, उन पर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी हर घर नल से जल पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा इस योजना में किसी भी तरह की गड़बड़ी स्वीकार नहीं की जाएगी। पाटिल ने बताया कि 'जल जीवन मिशन' के तहत अब तक 15 करोड़ घरों में पानी पहुंचा दिया गया है तथा चार करोड़ और घरों में पानी पहुंचाने का काम जारी है। इस बार भी योजना के लिए 67 हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

वक्फ पंजीकरण की समयसीमा बढ़ाने की मांग

विपक्ष के कई सांसदों ने गुरुवार को लोकसभा में सरकार से आग्रह किया कि उम्मीद पोर्टल पर वक्फ संपत्तियों के पंजीकरण की समयसीमा बढ़ाई जाए क्योंकि अब भी बहुत सारी संपत्तियों का पंजीकरण नहीं हो पाया है। केंद्र ने सभी वक्फ संपत्तियों की जियो-टैगिंग के बाद डिजिटल सूची बनाने के लिए छह जून को एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास (उम्मीद) अधिनियम केंद्रीय पोर्टल शुरू किया था। 'उम्मीद' पोर्टल के प्रावधान के अनुसार, देश भर में सभी पंजीकृत वक्फ संपत्तियों का विवरण अनिवार्य रूप से छह महीने के भीतर अपलोड किया जाना है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद, टीएमसी की सजदा अहमद ने शून्यकाल के दौरान यह मुद्दा उठाया।

नीट परीक्षा ने शिक्षा का व्यावसायीकरण किया : कांग्रेस

कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने देश में कोचिंग प्रणाली पर सवाल उठाते हुए सरकार से मांग की कि चिकित्सा प्रवेश परीक्षा नीट की समीक्षा की जाए। टैगोर ने कहा कि राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट) ने मेरिट को बढ़ावा नहीं, बल्कि निजी कोचिंग संस्थानों को मजबूत करके व स्कूलों को कमजोर कर शिक्षा का व्यावसायीकरण किया है।

टीईटी परीक्षा पास करने की अनिवार्यता में हस्तक्षेप करे सरकार

देश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पहले से कार्यरत शिक्षकों के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करने की अनिवार्यता संबंधी अदालती आदेश का हवाला देते हुए गुरुवार को कुछ सांसदों ने सरकार से हस्तक्षेप का अनुरोध किया। शिवसेना के वैर्यशील माने ने लोकसभा में कहा कि पहले से सेवारत प्राथमिक शिक्षकों के लिए टीईटी परीक्षा अनिवार्य करने की वजह से उनके भविष्य को लेकर अनिश्चितता की स्थिति बन गई है।

देवी-देवताओं पर रेवंत की टिप्पणी को लेकर भाजपा ने कांग्रेस को घेरा

नई दिल्ली। देवी-देवताओं पर दिए तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के बयान को लेकर भाजपा ने गुरुवार को कांग्रेस पर निशाना साधा और मांग की कि राहुल गांधी इस मामले पर चुप्पी तोड़ें और साफ करें कि क्या वह जिहाद के साथ खड़े दिखना चाहते हैं।

कांग्रेस की बैठक में रेड्डी ने कहा था कि पार्टी सभी को साथ लेकर चलती है। यह बात उन्होंने हिंदू धर्म से तुलना करते हुए की और कहा कि भक्त कई भगवानों की पूजा करते हैं। हिंदुओं के कितने भगवान हैं? तीन करोड़? जिनकी शादी नहीं हुई है उनके लिए हनुमान हैं। जिनकी दो बार शादी हुई है उनके लिए एक और भगवान हैं। इस टिप्पणी पर नाराजगी जताते हुए भाजपा सांसद संबित पात्रा ने रेड्डी के बयान को सनातन विरोधी बताया।

लंबित तेजाब हमले के मामलों का ब्योरा दें हाईकोर्ट

- सुप्रीम कोर्ट ने चार सप्ताह का समय देते हुए 16 वर्षों से लंबित मामले को बताया शर्मनाक

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सभी हाईकोर्ट को निर्देश दिया कि वे देश भर में तेजाब हमले के मामलों से संबंधित लंबित मुकदमों का ब्योरा चार सप्ताह के भीतर प्रस्तुत करें। न्यायालय ने दिल्ली की अदालत में तेजाब हमले का एक मामला 16 वर्षों से लंबित रहने को शर्मनाक करार दिया।

प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने तेजाब हमले की पीड़िता शाहीन मलिक द्वारा दायर जनहित याचिका पर केंद्र और दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग को भी नोटिस जारी किए। पीठ ने मलिक के मुकदमे में लंबे समय से हो रही देरी को राष्ट्रीय स्तर पर शर्म की बात कहा। यह मुकदमा रोहिणी की अदालत में 2009 से लंबित है। पीठ ने कहा कि यह न्याय व्यवस्था का कैसा मजाक है। यह बहुत शर्मनाक है। अगर देश की राजधानी में ऐसे मामलों से निपटा नहीं जा सकता तो कौन इससे निपटेगा? सीजेआई ने मलिक से कहा कि वह याचिका में ही आवेदन दायर कर बताएं कि मामला अभी तक समाप्त क्यों नहीं हुआ है।

सेना पर टिप्पणियों के मामले में राहुल गांधी पर मुकदमा चलाने पर लगी रोक बढ़ी

सुप्रीम कोर्ट ने 2022 में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान सेना पर की आपत्तिजनक टिप्पणियों के मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ मुकदमा चलाने पर लगी रोक की अवधि अगले साल 22 अप्रैल तक के लिए बढ़ा दी है। न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने गुरुवार को गांधी की अपील स्वीकार कर ली और कहा कि वह मामले की विस्तार से सुनवाई करेगी। राहुल गांधी ने निचली अदालत के समन के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय का रुख किया था लेकिन उच्च न्यायालय ने 29 मई को उनकी याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद गांधी ने उच्च न्यायालय के फैसले को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी थी।

वर्ल्ड ब्रीफ

बांग्लादेश में 4.1 तीव्रता के भूकंप के झटके, नुकसान नहीं

ढाका। बांग्लादेश में बृहस्पतिवार तड़के 4.1 तीव्रता का भूकंप आया जिसके झटके राजधानी ढाका और आसपास के जिलों में महसूस महसूस किए गए। समाचार पोर्टल 'टीबीएसन्यूज डॉट नेट' ने यूरोपीय भूमध्यसागरीय भूकंप विज्ञान केंद्र के हवाले से बताया कि भूकंप स्थानीय समयानुसार सुबह छह बजकर 14 मिनट पर आया और उसका केंद्र नरसिंगडी में 30 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था। हालांकि भूकंप में जान माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। खबर के अनुसार भूकंप का केन्द्र कम गहराई पर होने के कारण ढाका और आसपास के जिलों के निवासियों को हल्के झटके ही महसूस हुए।

खालिदा जिया की हालत नाजुक, लंदन ले जाने की तैयारी

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की हालत नाजुक बनी हुई है और उनका परिवार उन्हें इलाज के लिए लंदन ले जाने की तैयारी कर रहा है। लंदन में जिया के बेटे एवं बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान रहते हैं। खालिदा जिया (80) को हृदय और फेफड़ों में संक्रमण की शिकायत के बाद 23 नवंबर को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। चार दिन बाद, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ने पर उन्हें कोरोनरी केयर यूनिट में भर्ती किया गया।

अमेरिका: गोलीबारी में तीन पुलिस अधिकारी घायल, हमलावर ढेर

ओमाहा। ओमाहा में एक गैस स्टेशन पर हुई गोलीबारी में तीन पुलिस अधिकारी घायल हो गए, जबकि संदिग्ध हमलावर मारा गया। पुलिस प्रमुख टॉड श्माडरर ने बताया कि संदिग्ध हमलावर की उम्र 20 वर्ष के आसपास थी, जिसने दोपहर के समय किराने की दुकान पर पहले 61 वर्षीय व्यक्ति के सीने पर कई गोलियां मारी थीं। अधिकारियों ने घटनास्थल से संदिग्ध की कार की लाइसेंस प्लेट नंबर हासिल की और उसकी कार का पीछा करते हुए गैस स्टेशन तक पहुंचे।

रूस: आतंकवाद के समर्थन के आरोप में रोब्लॉक्स पर प्रतिबंध

मॉस्को। रूस ने लोकप्रिय गेमिंग प्लेटफॉर्म 'रोब्लॉक्स' पर आतंकवाद के समर्थन और बच्चों को एलजीबीटी-संबंधित कंटेंट परोसने के आरोप में प्रतिबंध लगा दिया है। रूसी मीडिया के अनुसार रोब्लॉक्स हिंसक अपराधों के आह्वानों में भी शामिल रहा है। बयान में कहा गया कि यह गेमिंग प्लेटफॉर्म ऐसे असभ्य कंटेंट से भर गया था जो बच्चों के आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर नकारात्मक असर डाल सकता है।

मोजाम्बिक में विस्थापितों के लिए 60 लाख अमेरिकी डॉलर आवंटित

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी

- हिंसा के कारण 1,20,000 लाख विस्थापित झेल रहे हैं समस्याएं

संयुक्त राष्ट्र ने उत्तरी मोजाम्बिक प्रांत में हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोगों के लिए 60 लाख अमेरिकी डॉलर आवंटित किए हैं। नामपुला प्रांत में 1,20,000 लोग विस्थापित हुए हैं जिनके लिए केंद्रीय आपातकालीन प्रतिक्रिया कोष (सीईआरएफ) से बुधवार को सहायता जारी की गई।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी ने कहा कि मंगलवार तक लगभग एक लाख लोग मध्य नवंबर में प्रांत में हिंसा फैलने के बाद से अपने घरों से पलायन कर चुके हैं। ओसीएचए ने कहा, विस्थापित लोगों में से दो तिहाई से अधिक बच्चे हैं जो अब भीड़भाड़ वाले स्कूलों, अस्थायी संरचनाओं, खुले स्थानों या पहले से ही कमजोर मेजबान परिवारों में आश्रय ले रहे हैं। आश्रय के अलावा उनके पास सुरक्षित जल, संरक्षण, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता सेवाओं तक भी सीमित पहुंच है जबकि कुछ क्षेत्रों में हैजा फैल रहा है। कार्यालय ने कहा कि महत्वपूर्ण सहायता का भंडार लगभग समाप्त हो चुका है और सीईआरएफ की धनराशि से एराटी और मेम्बा जिलों में लोगों के लिए जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य सहायता, बुनियादी घरेलू सामान, साथ ही आश्रय, सुरक्षा और आजीविका सहायता को प्राथमिकता दी जाएगी।

भारत-रूस संबंध

जवाहरलाल नेहरू से नरेंद्र मोदी तक

भारत की आजादी के वक्त से ही रूस के साथ उसके संबंध गहरे और बहुआयामी रहे हैं। पिछले करीब सात दशक तक इन संबंधों का आधार आपसी विश्वास के साथ रणनीतिक सहयोग भी रहा है। रूस के साथ भारत के आधिकारिक राजनयिक संबंध स्वतंत्रता से ठीक पहले 13 अप्रैल 1947 को स्थापित किए गए थे। शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति के बावजूद सोवियत संघ भारत का मजबूत सहयोगी बना। इस साझेदारी ने रक्षा, भिलाई स्टील प्लांट जैसे भारी उद्योग और अंतरिक्ष सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अगस्त 1971 में हस्ताक्षरित 'शांति, मैत्री और सहयोग की संधि' इन संबंधों में एक मील का पत्थर थी। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी यह रिश्ता बना रहा। अक्टूबर 2000 में 'भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी पर घोषणा' पर हस्ताक्षर किए गए, और 2010 में इसे 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाया गया।

जब-जब सच्चा दोस्त साबित हुआ रूस

- 1971 के युद्ध के दौरान जब अमेरिका और चीन पाकिस्तान का समर्थन कर रहे थे, तब सोवियत संघ ने भारत को महत्वपूर्ण राजनयिक और सैन्य सहायता प्रदान की।
- रूस और सोवियत संघ ने कश्मीर मुद्दे और अन्य राजनीतिक मामलों पर भारत के रुख का समर्थन करते हुए कई बार संयुक्त राष्ट्र में अपने वीटो पावर का इस्तेमाल किया।
- भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' का 1975 में सोवियत रॉकेट से प्रक्षेपण, बाद में ब्रह्मोस मिसाइल जैसी संयुक्त परियोजनाओं ने गहरे तकनीकी सहयोग को दर्शाया।
- भारत की ओर से 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण पर पश्चिमी देशों की ओर से प्रतिबंध लगाए जाने के बाद भी रूस ने भारत के साथ अपने संबंध पूर्ववत बनाए रखे।

संबंधों का वर्तमान महत्व

- भारत अमेरिका के साथ संबंध बढ़ाना चाहता है लेकिन रूस उसकी रणनीतिक स्वायत्तता का आधार हैं।
- भारत अपनी सैन्य जरूरतों के लिए अभी भी बड़े पैमाने पर रूसी उपकरणों और स्पेयर पार्ट्स पर निर्भर है।
- यूक्रेन संघर्ष के दौरान भारत ने रूस से तेल आयात जारी रखा जो उसकी ऊर्जा सुरक्षा में मददगार रहा।
- दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, एससीओ और ब्रिक्स जैसे बहुपक्षीय मंचों पर एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

रूस और पश्चिमी देश

- रूस के साथ संबंध रक्षा, ऊर्जा और राजनीतिक समर्थन जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में कसौटी पर खरे उतरे हैं। पश्चिमी देशों के साथ भारत के संबंध लेनदेन वाले और वैश्विक परिदृश्य से प्रभावित हैं, रूस के साथ ऐतिहासिक भावनाओं पर टिके हैं।

78 साल : 1947 से अब तक

- जवाहर लाल नेहरू ने सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन के ढांचे के भीतर।
- इंदिरा गांधी के समय में भारत-रूस संबंध चरम पर पहुंचे। इस बीच 1971 की शांति, मैत्री और सहयोग की संधि एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी।
- लियोनिद ब्रेजनेव ने सोवियत नेता के रूप में इंदिरा गांधी के साथ 1971 की संधि में निभाई, जिससे मजबूत सैन्य और आर्थिक संबंधों की नींव पड़ी।
- अटल बिहारी वाजपेयी और पुतिन ने वर्ष 2000 में रणनीतिक साझेदारी की घोषणा पर हस्ताक्षर किए, जिसने पुराने संबंधों को एक नई दिशा दी।
- रूस के सबसे लंबे समय नेता रहे पुतिन ने भारत के साथ संबंधों को लगातार प्राथमिकता दी। उनके कार्यकाल में कई क्षेत्रों में साझेदारी मजबूत हुई है।
- मनमोहन सिंह ने पुतिन और दिमित्री मेदवेदेव के साथ असैन्य परमाणु सहयोग जैसे प्रमुख समझौते किए, जिससे ऊर्जा सुरक्षा क्षेत्र में आगे बढ़े।
- नरेंद्र मोदी ने रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखी, वार्षिक शिखर सम्मेलनों में भाग लिया है और द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने पर जोर दिया है।

अमेरिकी सांसदों का रूबियो को पत्र पाकिस्तान पर लगाएं कड़े प्रतिबंध

शरीफ और मुनीर पर मानवाधिकार संकट और अंतर्राष्ट्रीय दमन का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी

वाशिंगटन से डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद प्रमिला जयपाल की अगुवाई में अमेरिकी संसद के कई सदस्यों ने विदेश मंत्री मार्को रुबियो को एक पत्र लिखकर पाकिस्तान पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। इन सांसदों का कहना है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर की सरकार में मानवाधिकार संकट और अंतरराष्ट्रीय दमन लगातार बढ़ रहा है। सांसदों ने उन पर वीजा पाबंदी से लेकर उनकी संपत्ति फ्रीज करने तक कई प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया है।

जयपाल की ओर से बुधवार को सार्वजनिक किए गए इस पत्र में अमेरिका में प्रभावित लोगों की सुरक्षा और इस्लामाबाद के साथ डील में मानवाधिकार स्तर को बनाए रखने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर अमेरिकी प्रशासन से औपचारिक जवाब भी मांगा गया है। पत्र में इन घटनाओं को पाकिस्तान में लोकतंत्र के पतन के एक बड़े पैटर्न से जोड़ा गया है, जिसमें पत्रकारों, विपक्षी नेताओं और नागरिक समाज पर कार्रवाई का जिक्र किया गया है। पत्र में लिखा गया है कि हाल के सालों में, पाकिस्तान में तानाशाही के गलत इस्तेमाल के खिलाफ बोलने वाले अमेरिकी नागरिकों और निवासियों को धमकियों, डर और परेशानी का सामना करना पड़ा है। ये परेशानियां अक्सर पाकिस्तान में उनके परिवारों तक भी पहुंच जाती हैं।

पत्र में यह भी कहा गया है कि इन तरीकों में मनमाने ढंग से हिरासत में लेना, जबरदस्ती करना और हिंसा करना शामिल है। सरकार इन तरीकों से बाहर से आए लोगों और उनके रिश्तेदारों को निशाना बनाती है। सांसदों ने कहा कि इसके अलावा, उन्होंने अमेरिका की जमीन पर विदेशी दखल के लिए एक खतरनाक मिसाल कायम की है। उन्होंने कहा, हालांकि हम मानते हैं कि आतंकवाद विरोध और दूसरे मुद्दों पर अमेरिका-पाकिस्तान साझेदारी अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी है, लेकिन यह साझेदारी मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक शासन और कानून के राज के लिये आपसी प्रतिबद्धता पर आधारित होनी चाहिए।

विदेश विभाग से मांगा जवाब : पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले सांसदों ने पूछा कि अमेरिकी प्रशासन पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व के साथ इस तरह से कैसे जुड़ने का प्लान बना रहा है, जिससे मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के लिए अमेरिका के बताए गए वचनों को बनाए रखा जा सके और तानाशाही व्यवहार को सही ठहराने की किसी भी सोच से बचा जा सके। उन्होंने विदेश विभाग से 17 दिसंबर तक लिखकर जवाब देने को कहा है।

तानाशाही शासन की ओर से बढ़ रहा है पाकिस्तान

सांसदों ने दावा किया कि पाकिस्तान तानाशाही शासन की तरफ ओर बढ़ रहा है। राजनीतिक विरोधियों को बिना किसी औपचारिक आरोप के जेल में डाला जा रहा है, स्वतंत्र पत्रकारों को धमकाया जा रहा है या देश निकाला दिया जा रहा है। नागरिकों को भी ऑनलाइन गतिविधि के लिए हिरासत में लिया जा रहा है। उन्होंने महिलाओं, धार्मिक अल्पसंख्यकों और बलूचिस्तान सहित अन्य जातीय समूहों पर बढ़ते खतरे की ओर भी इशारा किया। सांसदों का कहना है कि ये समूह सरकारी दमन का खामियाजा भुगत रहे हैं। सांसदों ने ऐसी घटनाओं को नागरिक समाज को कुचलने और सैन्य शासन की सभी चुनौतियों को खत्म करने की एक सोचे-समझी साजिश करार देते हुए कहा, पाकिस्तान तानाशाही के बढ़ते संकट का सामना कर रहा है, जहां लोकतांत्रिक संस्थाओं और बुनियादी आजादी को व्यवस्थित तरीके से खत्म किया जा रहा है।

कट्टरपंथी इस्लाम विश्व और अमेरिका के लिए खतरा : मार्क रूबियो

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने चेतावनी दी कि कट्टरपंथी इस्लाम की ज्यादा क्षेत्रों और अधिक लोगों को नियंत्रित करने की महत्वाकांक्षा दुनिया के लिए एक आसन्न खतरा है। उन्होंने घोषणा की कि अमेरिका नाइजीरिया और विश्व स्तर पर ईसाइयों के खिलाफ हिंसा को धन मुहैया कराने या उनका समर्थन करने वालों के लिए वीजा प्रतिबंधित करेगा। रूबियो ने एक साक्षात्कार में कट्टरपंथी इस्लामवादियों को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए सबसे बड़ा खतरा बताते हुए दावा किया कि इस्लामी कट्टरपंथी अमेरिका को पृथ्वी पर बुराई का मुख्य स्रोत मानते हैं। रूबियो ने कहा, यह विचार कि कट्टरपंथी इस्लाम इराक या सीरिया के किसी प्रांत को नियंत्रित करके ही संतुष्ट रहेगा, ऐसा इतिहास से सिद्ध नहीं होता है। कट्टरपंथी इस्लाम ने दिखाया है कि उनकी इच्छा सिर्फ दुनिया के एक हिस्से पर कब्जा करके अपने छोटे से खलीफा से संतुष्ट होना नहीं है, वे विस्तार करना चाहते हैं।

हसीना के बेटे जॉय के खिलाफ अरेस्ट वारंट

ढाका। बांग्लादेश में एक विशेष न्यायाधिकरण ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के निर्वासित बेटे साजिब वाजेद जॉय के खिलाफ बृहस्पतिवार को गिरफ्तारी वारंट जारी किया। यह वारंट मानवता के खिलाफ अपराध करने के आरोप में उनकी मां को मौत की सजा सुनाने के एक महीने बाद जारी किया गया है।

बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी-बीडी) के एक अभियोजक ने बताया, न्यायाधिकरण ने जुलाई के विद्रोह के दौरान मानवता के विरुद्ध अपराध के लिए जॉय के विरुद्ध दर्ज मामले में वारंट जारी किया है। आईसीटी मामलों के तत्कालीन कनिष्ठ मंत्री जुनैद अहमद पलक के विरुद्ध भी ऐसा वारंट जारी किया गया था। पलक पहले से ही जेल में हैं।

ब्रिटेन: नर्व एजेंट हमले के लिए रूसी खुफिया एजेंसी पर पाबंदी

लंदन, एजेंसी

- पुतिन पर लगाया आदेश देने का आरोप, रूस का राजदूत तलब

ब्रिटेन ने 2018 के 'नर्व एजेंट' हमले को लेकर बृहस्पतिवार को रूस की खुफिया एजेंसी जीआरयू पर प्रतिबंध लगा दिया और इसके साथ मॉस्को के राजदूत को भी तलब किया। ब्रिटेन ने यह कदम एक जांच में निकले निष्कर्ष के बाद उठाया है, जिसमें दावा गया कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 2018 में ब्रिटेन की भूमि पर हुए 'नर्व एजेंट' हमले के लिए जिम्मेदार थे।

'नर्व एजेंट' ऐसे जहरीले रसायन हैं जो सीधे तंत्रिका तंत्र पर असर करते हैं। ये मस्तिष्क तक जाने वाले संकेतों को बाधित कर देते हैं, जिससे शरीर ठीक तरह से काम करना बंद कर देता है। ब्रिटिश सरकार ने कहा कि सैलिसबरी शहर में हुए उस हमले के लिए जीआरयू पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया जा रहा है, जिसमें ब्रिटेन आए पूर्व सोवियत एजेंट सर्गेई स्क्रिपल को निशाना बनाया गया था। 'नोविचोक नर्व एजेंट' के संपर्क में आने से एक ब्रिटिश महिला डॉन स्टर्गेस की मौत हो गई थी। स्टर्गेस की मौत की जांच का नेतृत्व करने वाले ब्रिटेन के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एंथनी ह्यूजेस ने कहा कि स्क्रिपल पर हमले को पुतिन की ओर से उच्चतम स्तर पर अधिकृत किया गया होगा।

अंतरिक्ष मिशन के लिए मिल सकते हैं रूस से सेमी क्रायोजेनिक इंजन

इंजन के साथ तकनीक भी हस्तांतरित करने को रूस सहमत

मॉस्को, एजेंसी

- पुतिन की दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान हो सकते हैं अहम सौदे

रूस अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत के साथ अपने संबंध मजबूत करते हुए अपने सेमी-क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन आरडी-191 की आपूर्ति करने और इसके निर्माण की तकनीक भारत को देने के लिए सहमत है। यह कदम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की गुरुवार से शुरू हो रही दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान इस बेहद खास सौदे की घोषणा हो सकती है।

रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस के महानिदेशक दिमित्री बकनोव ने एक टेलीविजन चैनल को बताया कि भारत के साथ रॉकेट इंजन का सौदा होने वाला है। उन्होंने मानव अंतरिक्ष उड़ान और अंतरिक्ष स्टेशन के विकास में भी सहयोग की संभावना जताई। बकानोव ने इंजन के प्रकार का उल्लेख नहीं किया, लेकिन विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि यह एक सेमी-क्रायोजेनिक इंजन होगा। दोनों देशों के बीच रॉकेट इंजन सौदे पर पिछले कुछ वर्षों से बातचीत चल रही थी। यह रूस और भारत के बीच दूसरा प्रमुख सौदा होगा, इससे पहले ब्रह्मोस मिसाइल का संयुक्त उद्यम सफलतापूर्वक चल रहा है।

यह दूसरी बार होगा जब भारत रूस से रॉकेट इंजन खरीदेगा।

पहले भारत ने इसरो के जीएसएलवी रॉकेट के शुरुआती चरण के लिए सात क्रायोजेनिक इंजन खरीदे थे, लेकिन अमेरिकी भूराजनीतिक दबाव के कारण रूस ने बाद में आपूर्ति रोक दी थी और कोई तकनीक हस्तांतरण नहीं किया गया था। भारत अपने मौजूदा भारी-लिफ्ट रॉकेट एलवीएम3 (लॉन्च व्हीकल मार्क-3) में आरडी-191 सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग करना चाहता है। वर्तमान में, एलवीएम3 की पेलोड क्षमता भूस्थिर कक्षा के लिए केवल चार टन है। इसरो इस क्षमता को पांच टन तक बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। इसके लिए शक्तिशाली क्रायोजेनिक इंजन के साथ एलवीएम3 के दूसरे चरण के तरल इंजन को सेमी-क्रायोजेनिक इंजन से बदला जाएगा। ये संवर्द्धन पेलोड क्षमता को बढ़ाएंगे और न्यूस्पेस इंडिया के जरिए वाणिज्यिक पेशकशों के लिए रॉकेट को तैयार करेंगे। अभी भारत को चार टन से अधिक वजन वाले संचार उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने के लिए विदेशी एजेंसियों को भारी रकम चुकानी पड़ती है।

नागरिक उड्डयन क्षेत्र में सहयोग की घोषणा

मास्को। रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मंटुरोव ने कहा है कि उनका देश नागरिक उड्डयन क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग को और बढ़ाने के लिए तैयार है। मंटुरोव ने एक साक्षात्कार में स्पुतनिक से कहा, रूस एक ऐसा भागीदार है जो भारत के साथ न केवल अत्याधुनिक विमानन तकनीक की आपूर्ति करके, बल्कि भारत के घरेलू विमानन उद्योग के विकास के लिए भी काम करने के लिए तैयार है। हमारा मानना है कि आपसी हित सैन्य क्षेत्र से आगे जाकर नागरिक उड्डयन में भी सहयोग का विस्तार करने में हो सकता है। गौरतलब है कि दोनों देशों का विमानन सहयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। सुप्रसिद्ध मिग-21 और सुखोई-30एमकेआई बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान भारत में लाइसेंस के तहत बनाए जाते हैं।

कैलिफोर्निया के रेगिस्तान में गिरा अमेरिका का एफ-16

ट्रोना। अमेरिकी वायुसेना के विशिष्ट 'थंडरबर्ड्स' दस्ते का एक लड़ाकू विमान दक्षिणी कैलिफोर्निया के रेगिस्तान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। पायलट समय रहते बाहर निकलने में सफल रहा।

सैन बर्नार्डिनो काउंटी के दमकल विभाग के अनुसार, पायलट का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है और उसे जानलेवा चोट नहीं लगी हैं। नेवादा में स्थित नेलिस एयरफोर्स बेस की ओर से जारी बयान के अनुसार, एफ-16सी फाइटिंग फाल्कन बुधवार सुबह लगभग 10:45 बजे कैलिफोर्निया में नियंत्रित हवाई क्षेत्र में प्रशिक्षण मिशन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

दमकल विभाग ने बताया कि विमान लॉस एंजिलिस से 290 किमी उत्तर में स्थित मोजावे रेगिस्तान के ट्रोना के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

ऑस्ट्रेलिया ने की यूक्रेन को 6.2 करोड़ डॉलर की सैन्य मदद देने की घोषणा

- नए सहायता पैकेज में रक्षा बल सामग्री और उपकरण शामिल

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया ने यूक्रेन के लिए 9.5 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (6.2 करोड़ अमेरिकी डॉलर) के नए सैन्य सहायता पैकेज की घोषणा की, जिसमें रक्षा बल सामग्री एवं उपकरण शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्लेस ने विदेश मंत्री पेनी वोंग और रक्षा उद्योग मंत्री पैट कॉनरॉय के साथ एक बयान में कहा कि नए पैकेज से यूक्रेन को ऑस्ट्रेलिया की कुल सहायता 1.7 अरब ऑस्ट्रेलियाई डॉलर से अधिक हो जाएगी।

नई सैन्य सहायता में नाटो की प्राथमिकता प्राप्त यूक्रेन आवश्यकता सूची में 5.0 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का योगदान शामिल होगा, जिसके माध्यम से यूक्रेन को महत्वपूर्ण उपकरण, साथ ही 4.3 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की ऑस्ट्रेलियाई रक्षा बल (एडीएफ) सामग्री एवं उपकरण की आपूर्ति की जाएगी। एडीएफ उपकरणों में सामरिक वायु रक्षा रडार, युद्ध सामग्री और लड़ाकू इंजीनियरिंग उपकरण शामिल होंगे।

पुतिन पर शांति प्रयासों में दिखावे का आरोप

कीव। यूक्रेन और उसके यूरोपीय सहयोगियों ने पुतिन पर शांति वार्ता में रुचि दिखाने का दिखावा करने का आरोप लगाया। ब्रिटेन के विदेश मंत्री य्वेट कूपर ने कहा कि पुतिन को दिखावा और खूनखराबा बंद करके वार्ता करनी चाहिए और उचित व दीर्घकालिक शांति के प्रयासों का समर्थन करना चाहिए। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने पुतिन से दुनिया का समय बर्बाद न करने की अपील की।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 5 दिसंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- पौष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा 6 दिसंबर 00 .55 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

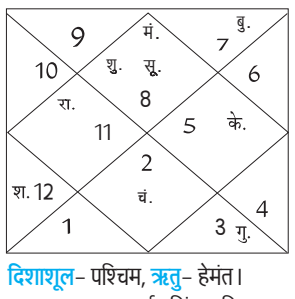

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र-रोहिणी 11.46 तक तत्पश्चात मृगशिरा।

मेष — आज अपने खर्चों में कटौती करें वरना बजट गड़बड़ा सकता है। उधार लेने से आपको बचना चाहिए। जीवनसाथी के साथ आप एकांत में समय बिताना पसंद करेंगे। बाहर का भोजन करने से पाचन खराब हो सकता है।

वृष — आज आप पूरी मेहनत से काम करेंगे। कारोबार में उत्तम धन लाभ होने के योग बन रहे हैं। ऑनलाइन शॉपिंग में धन खर्च करेंगे पुराने निवेश से धन लाभ होगा। युवा जातक प्रेम सम्बन्धों को लेकर परिवार में चर्चा कर सकते हैं।

मिथुन — आज कार्यक्षेत्र में आपका मन नहीं लगेगा। तात्कालिक निर्णय लेने में जल्दबाजी करना उचित नहीं है। बिना मांगे किसी को राय देने से अपमान हो सकता है। अनैतिक कार्यों में आप रुचि ले सकते हैं। उधार धन के लेन-देन में सावधानी रखें।

कर्क — आज कारोबार को लेकर यात्रा हो सकती है। उच्च अधिकारी आपके काम से अत्यंत प्रसन्न रहेंगे। नौकरी में आपके अधिकार बढ़ेंगे। शेयर मार्केट से धन लाभ होगा। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। लोग आपसे परामर्श लेना पसंद करेंगे।

सिंह — आज आपके कार्य धीमी गति से पूर्ण होंगे। पड़ोसियों के साथ विवाद उभरने की आशंका है। रिश्तों में मधुरता का आनंद लेंगे। कारोबार में कठिनाई हो सकती है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए दिन शुभ नहीं है। अपनी दिनचर्या संतुलित रखें।

कन्या — आज महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दिन शुभ है। धर्म-कर्म में रुचि कम होने की संभावना है। शोधकार्यों में बड़ी सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का सहयोग प्राप्त होगा। मतभेदों का निवारण हो सकता है।

तुला — आज कारोबार में बड़ा निवेश करने से पहले पूरी जांच-परख कर लें। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। नए कार्यों की शुरुआत न करें। अत्यधिक कार्यभार के कारण थकान महसूस होगी। स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर हो सकता है।

वृश्चिक — आज आपके सभी कार्य अच्छी तरह से पूर्ण होंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। साझेदारी में नया कारोबार शुरू कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ रोमांटिक समय का आनंद उठाएंगे। प्रेम विवाह को लेकर समस्या हो सकती है।

धनु — आज का दिन कानूनी मामलों के लिए शुभ है। कोई कठिन कार्य पूरा हो सकता है। किसी से द्वेष व कपटपूर्ण बर्ताव न करें। आपको कोई शुभ सूचना मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। पुराना उधार चुकाने में सफलता मिलेगी।

मकर — आज अपनी कार्यक्षमता पर विश्वास करें। नव विवाहित लोग कहीं घूमने के लिए जा सकते हैं। अपने प्रेमी जन को प्रपोज करने के लिए दिन शुभ है। प्रतियोगी परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। मार्केटिंग से जुड़े कारोबार में धन लाभ मिलेगा।

कुंभ — आज आप अपने करियर को लेकर अत्यन्त गंभीर रहेंगे। नजदीकी लोगों की सलाह की उपेक्षा करना नुकसानदेह हो सकता है। दांपत्य संबंधों में कड़वाहट हो सकती है। व्यर्थ के खर्चे बढ़ सकते हैं। सरकारी कार्यों में रुकावटें आने की संभावना है।

मीन — आज कानूनी मामलों में आपको विजय मिलने के योग बन रहे हैं। आपकी संवादशैली से लोग प्रभावित रहेंगे। करियर में बड़ा बदलाव करने की योजना बना सकते हैं। दांपत्य संबंधों में भावनात्मक लगाव और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

सुडोकू -181

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

1			3					
				4				
		7						
3			2					
5								9
			5					
						1	7	
	4	8						

सुडोकू - 180 का हल

5	1	8	7	2	4	3	9	6
2	7	4	3	9	6	1	8	5
3	9	6	5	8	1	4	2	7
9	2	7	1	6	3	5	4	8
1	8	3	2	4	5	6	7	9
6	4	5	8	7	9	2	3	1
8	5	2	6	3	7	9	1	4
7	6	9	4	1	2	8	5	3
4	3	1	9	5	8	7	6	2

रन तभी मायने रखते हैं जब आप मैच जीतते हैं। ईमानदारी से कहूं तो कम से कम मेरे लिए तो यही मायने रखता है। अगर हम दूसरा वनडे हार जाते तो मैं पिछले मैच की तरह ही दुखी होता। जीत हासिल करके मुझे बहुत खुशी हुई है।
- एडेन मार्करम

स्टेडियम

मुरादाबाद, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

नारायण 600 टी-20 विकेट चटकाने वाले पहले क्रिकेटर बने

अबु धाबी। गेंदबाजी में विविधता के लिए पहचाने जाने वाले रहस्यमयी स्पिनर सुनील नारायण ने अपना नाम इतिहास में दर्ज करा लिया जब वह प्रतिस्पर्धी टी20 क्रिकेट में 600 विकेट चटकाने वाले पहले गेंदबाज बने। वेस्टइंडीज के नारायण ने बुधवार को यहां शारजाह वारियर्स के खिलाफ अबु धाबी नाइट राइडर्स की ओर से खेलते हुए यह उपलब्धि हासिल की। त्रिनिदाद के इस 37 वर्षीय क्रिकेटर ने टॉम एबेल को आउट करके यह उपलब्धि हासिल की। उनकी यह उपलब्धि टी20 प्रारूप में महानतम गेंदबाजों में से एक के रूप में नारायण के दर्जे को और मजबूत करती है। मैच के बाद अबु धाबी नाइट राइडर्स ने नारायण के विशेष जर्सी दी जिसमें 600 अंक लिखा था जो उनकी अभूतपूर्व उपलब्धि को दर्शाता है।

चेन्नई सुपर वॉरियर्स प्लेऑफ में पहुंचा

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर वॉरियर्स बृहस्पतिवार को यहां इंडियन पिकलबॉल लीग (आईपीबीएल) में बेंगलुरु ब्लास्टर्स को 4-2 से हराकर प्लेऑफ में जगह पक्की करने वाली पहली टीम बन गई। चेन्नई की टीम चार जीत से 12 अंक के साथ तालिका में सबसे ऊपर है। उसके बाद हैदराबाद की टीम दूसरे स्थान पर है। लखनऊ की टीम तीसरे और गुड़गांव की टीम चौथे स्थान पर है। मुंबई की टीम अब तक एक भी जीत दर्ज नहीं कर पाई है जिससे वह सबसे नीचे है। वहीं बेंगलुरू पांचवें स्थान पर है।

बैडमिंटन : भारत का दमदार प्रदर्शन

गुवाहाटी। तन्वी शर्मा और अश्मिता चालिहा की अगुआई में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों ने बृहस्पतिवार को यहां गुवाहाटी मास्टर्स सुपर 100 टूर्नामेंट में दबदबा बनाते हुए क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। दुनिया की 41वीं नंबर की खिलाड़ी और आठवीं वरीय तन्वी ने महिला एकल प्री क्वार्टर फाइनल में थाईलैंड की पासा ओर्न फानाचेट को सीधे गेम में 21-17 23-21 से हराया। दुनिया की 96वें नंबर की खिलाड़ी अश्मिता ने पांचवीं वरीय हमवतन अनमोल खरब के खिलाफ पहला गेम गंवाने के बाद वापसी करते हुए 16-21 21-17 21-16 से जीत दर्ज की। भारत की इशारानी बरुआ ने हमवतन श्रेया लेले को 21-13 10-21 21-12 से हराया। तुषार सुवीर ने पुरुष एकल प्री क्वार्टर फाइनल में इंडोनेशिया के बिस्मो राया ओक्तोरा को 21-17 18-21 21-15 से शिकस्त दी।

गायत्री-त्रीसा की शीर्ष 10 में वापसी की उम्मीद

नई दिल्ली। सैयद मोदी अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में खिताब की रक्षा करके गायत्री गोपीचंद और त्रीसा जॉली ने सिर्फ एक और ट्रॉफी नहीं जीती बल्कि उन्हें वह लय भी वापस मिल गई है जिसकी तलाश वे इस सत्र में कर रहीं थी। दो बार ऑल इंग्लैंड के सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली गायत्री और त्रीसा की जोड़ी ने 2025 की सकारात्मक शुरुआत की। इस साल की शुरुआत में भारतीय जोड़ी 13 हफ्तों तक दुनिया की नौवें नंबर की जोड़ी थी और वे 2026 को दोबारा शीर्ष 10 में वापसी करना चाहती है।

अर्धशतकीय पारी के दौरान शॉट लगाते उत्तर प्रदेश के बल्लेबाज माधव कौशिक। एजेंसी

उत्तर प्रदेश ने चंडीगढ़ को 40 रनों से हराया

कोलकाता, एजेंसी

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी

समीर रिज्वी के अर्धशतक के बाद भुवनेश्वर कुमार की धारदार गेंदबाजी से उत्तर प्रदेश ने बृहस्पतिवार को यहां सैयद मुश्ताक अली टी20 टूर्नामेंट के ग्रुप बी मैच में चंडीगढ़ को 40 रन से हरा दिया।

उत्तर प्रदेश के 213 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए चंडीगढ़ की टीम भारतीय टीम से बाहर चल रहे भुवनेश्वर (23 रन पर तीन विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने आठ विकेट पर 172 रन ही बना सकी। उत्तर प्रदेश ने इससे पहले रिज्वी की 42 गेंद में छह चौकों और तीन छक्कों से 70 रन की पारी और सलामी बल्लेबाज माधव कौशिक (67 रन) के साथ तीसरे विकेट के लिए 86 रन की साझेदारी की बदौलत सात विकेट पर 212 रन बनाए। सिद्धार्थ यादव ने भी रन आउट होने से पहले 12 गेंद में तीन चौकों और दो छक्कों से 28 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए चंडीगढ़ ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए। सलामी बल्लेबाज मनन वोहरा (61 रन) ने एक छोर संभाले रखा पर दूसरे छोर से पर्याप्त समर्थन नहीं मिला।

हार्दिक पंड्या के प्रशंसकों की दीवानगी के कारण मैच स्थल बदला गया

हैदराबाद : भारत के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या को देखने के लिए जबरदस्त भीड़ को देखते हुए आयोजकों को बृहस्पतिवार को यहां जिमखाना मैदान जैसे साधारण स्थल से सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के मैच को अधिक सुरक्षित राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में स्थानांतरित करना पड़ा। यह मुकाबला उनकी टीम बड़ौदा और गुजरात के बीच खेला गया। इसमें बड़ौदा ने आठ विकेट से जीत दर्ज की। हार्दिक की मौजूदगी के कारण अप्रत्याशित भीड़ और सुरक्षा चिंताओं की वजह से यह फैसला लिया गया।

केरल की चैंपियन मुंबई पर सनसनीखेज जीत

लखनऊ : कप्तान संजू सैमसन (46), विष्णु विनोद (नाबाद 43) और शराफुद्दीन (नाबाद 35/ एक विकेट) के बाद केएम आसिफ (पांच विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर केरल ने ग्रुप ए मुकाबले में गुरुवार को चैंपियन मुंबई को 15 रनों से शिकस्त दी।

नई भूमिका से सामंजस्य बैठाने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई : गायकवाड़

बोले - ओपनिंग करूं या चौथे नंबर पर बल्लेबाजी, कुछ देर बाद समान हो जाती है प्रक्रिया

रायपुर, एजेंसी

रुतुराज गायकवाड़।

सीमित ओवरों के क्रिकेट में विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज रुतुराज गायकवाड़ चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए अपने पहले मैच में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए, लेकिन दूसरे मैच में उन्होंने शतक लगाया और उसके बाद कहा कि उन्हें अपनी नई भूमिका से सामंजस्य बिठाने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई। भारत के लिए वनडे में श्रेयस अय्यर ने चौथे नंबर पर अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन मुंबई के इस बल्लेबाज के चोटिल होने के कारण टीम प्रबंधन ने गायकवाड़ को यह जिम्मेदारी सौंपी और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे वनडे में शतक जड़कर यह भूमिका अच्छी तरह से निभाई। भारत इस मैच में हालांकि चार विकेट से हार गया था।

गायकवाड़ ने कहा मेरे लिए यह सम्मान की बात है की टीम प्रबंधन ने एक ऐसे सलामी बल्लेबाज पर भरोसा दिखाया जो चौथे नंबर पर भी बल्लेबाजी कर सकता है। मैंने अपनी इस भूमिका को इसी तरह से लिया। उन्होंने कहा यह केवल शुरुआती 10 से 15 गेंद खेलने का मामला होता है और उसके बाद प्रक्रिया समान रहती है। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने 83 गेंदों पर 105 रन की पारी खेली और विराट कोहली (102) के साथ तीसरे विकेट के लिए 195 रन की साझेदारी की, जिससे भारत ने पांच विकेट पर 358 रन बनाए।

गायकवाड़ ने कहा एकदिवसीय प्रारूप में जब मैं पारी की शुरुआत करता था तब भी मैं हमेशा यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता था कि मैं 45वें ओवर तक बल्लेबाजी कर सकूं। उन्होंने कहा मैं जानता हूं कि 11 से 40 ओवरों के बीच कैसे खेलना है, स्ट्राइक रोटेट कैसे करनी है और बाउंड्री के विकल्प क्या हैं। मुझे अपनी पारी आगे बढ़ाने के लिए खुद पर पूरा भरोसा था। गायकवाड़ चोटिल होने के कारण इस साल आईपीएल के सभी मैच में नहीं खेल पाए थे और उन्हें काफी समय तक बाहर रहना पड़ा था। उन्होंने कहा कि वह अतीत पर ध्यान नहीं देते और वर्तमान में रहने की कोशिश करते हैं।

उन्होंने कहा यही बेहतर होता है कि आप इस तरह की चीजों के बारे में अधिक नहीं सोचें क्योंकि अगर आप वर्तमान में नहीं हैं तो आपका ध्यान और तैयारी पर असर पड़ता है। मेरे दिमाग में कुछ चीजें चल रही थीं, लेकिन उसके बाद मैंने तय किया कि चाहे किसी भी प्रारूप का मैच हो मैं अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा। गायकवाड़ ने कहा अगर मुझे मौका मिलता है, तो यह अच्छी बात है, अगर मुझे मौका नहीं मिलता है, तब भी ठीक है। मुझे यह बात अच्छी तरह से पता है कि जितना हो सके रन बनाते रहना मेरा कर्तव्य है और अगर चीजें फिर से मेरे अनुकूल होती हैं तो यह अच्छी बात है और अगर नहीं होती हैं, तब भी अच्छी बात है। गायकवाड़ ने स्वीकार किया कि 12 चौकों और दो छक्कों की मदद से खेली गई 105 रन की पारी उनके करियर की अब तक की सर्वश्रेष्ठ पारी है। उन्होंने कहा मैं हां कहूंगा क्योंकि नंबर चार पर बल्लेबाजी करना भी मेरे लिए एक चुनौती थी। सुपरस्टार विराट कोहली के साथ खेलने का मौका मिलना कुछ ऐसा था जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी, लेकिन गायकवाड़ ने अपना ध्यान रन बनाने पर केंद्रित रखा।

जिन्होंने करियर में कुछ हासिल नहीं किया वे रोहित-कोहली का भविष्य तय कर रहे

शारजाह। पूर्व भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह को यह दुर्भाग्यपूर्ण लगता है कि रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गजों का भविष्य ऐसे लोग तय कर रहे हैं जिन्होंने अपने करियर में कुछ खास हासिल नहीं किया है, लेकिन उन्होंने उम्मीद जताई कि यह जोड़ी 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप तक खेलती रहेगी। रोहित 38 वर्ष के हैं और विराट कोहली 37 वर्ष के तथा यह दोनों अब केवल वनडे प्रारूप में ही खेलते हैं। वह वनडे विश्व कप तक खेलते रहेंगे या नहीं इसको लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर और चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर ने इस बात पर कोई प्रतिबद्धता नहीं जताई है कि यह दोनों वनडे विश्व कप तक खेलते रहेंगे या नहीं। हरभजन ने यहां कहा यह मेरी समझ से परे है। मैं इसका जवाब नहीं दे पाऊंगा क्योंकि मैं खुद एक खिलाड़ी रहा हूं और जो मैं देख रहा हूं वह मेरे साथ भी हुआ है। मेरे कई साथियों के साथ ऐसा हुआ है, लेकिन यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। हम इस बारे में बात नहीं करते या इस पर कोई चर्चा नहीं करते। भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में 417 विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने कोहली और रोहित के साथ किए जा रहे व्यवहार के संदर्भ में कहा जब मैं विराट कोहली जैसे खिलाड़ी को देखता हूं जो अभी भी शानदार प्रदर्शन कर रहा है तो मुझे बहुत खुशी होती है।

पहली गेंद से ही लग रहा था कि कोहली लगातार दूसरा शतक लगाने में सफल रहेंगे : गावस्कर

रायपुर। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर का मानना है कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच में शुरू से ही लग रहा था कि विराट कोहली शतक लगाने में सफल रहेंगे, क्योंकि इस दिग्गज बल्लेबाज ने छक्का लगाकर अपना खाता खोला और पिछले मैच के अपने आत्मविश्वास को बनाए रखा। कोहली ने बुधवार को यहां 93 गेंदों पर 102 रन बनाए, जो 50 ओवर के प्रारूप में उनका 53वां शतक और सभी प्रारूप में मिलाकर 84वां शतक है। हालांकि भारत यह मैच चार विकेट से हार गया। उन्होंने 30 नवंबर को रांची में खेले गए पहले मैच में 120 गेंदों पर 135 रन बनाए थे जिससे भारत ने यह मैच 17 रन से जीता था। जियोस्टार विशेषज्ञ गावस्कर ने कहा ईमानदारी से कहूं तो किसी भी समय ऐसा नहीं लगा कि वह शतक नहीं बना पाएंगे। पहली गेंद से ही ऐसा लगा कि वह रांची की अपनी पारी को ही आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कोहली ने हुक करके छक्का जड़कर शुरुआत की।

आनंद को हराकर एरिगैसी ने खिताब जीता

जेरूशलम, एजेंसी

जेरूशलम मास्टर्स

ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी ने यहां फाइनल में हमवतन और पांच बार के विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद को हराकर जेरूशलम मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट का खिताब जीता। इन दोनों खिलाड़ियों ने शुरुआती रैपिड गेम ड्रॉ किए। इसके बाद एरिगैसी ने पहले ब्लिट्ज टाईब्रेक मैच में सफेद मोहरों से जीत हासिल कर निर्णायक बढ़त हासिल कर ली। 'चेसबेस डॉट कॉम' की रिपोर्ट के अनुसार 22 वर्षीय एरिगैसी दूसरे ब्लिट्ज मुकाबले में भी जीत हासिल करने के करीब पहुंच गए थे लेकिन

आखिर में उन्हें ड्रॉ से संतोष करना पड़ा, लेकिन यह उनके लिए 2.5-1.5 से मुकाबला और खिताब जीतने के लिए पर्याप्त था।

एरिगैसी ने बाद में कहा यह जीत आसान नहीं थी। मेरे सामने कई चुनौतियां थी और मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी नहीं कर पाया। इसके बावजूद खिताब हासिल करके मैं बहुत खुश हूं। उन्होंने आगे कहा आज के दोनों मुकाबले (पीटर स्विडलर और फिर आनंद के खिलाफ) काफ़ी तनावपूर्ण रहे। आनंद सर के ख़िलाफ़ पहले गेम में हम दोनों ने मौके गंवाए। लेकिन मुझे लगता है कि ब्लिट्ज में मैंने अच्छा प्रदर्शन किया। इस जीत के साथ एरिगैसी को 55,000 अमेरिकी डॉलर, जबकि आनंद को 35,000 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि मिली। एरिगैसी ने सेमीफाइनल में रूस के ग्रैंडमास्टर पीटर स्विडलर को जबकि आनंद ने विश्व ब्लिट्ज चैंपियन इयान नेपोमनियाची को हराया था।

एशेज सीरीज में शतक लगाने के बाद जश्न मनाते इंग्लैंड के जो रूट। एजेंसी

रूट का ऑस्ट्रेलिया में पहला शतक

ब्रिस्बेन, एजेंसी

- एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट का पहला दिन
- स्टार्क के छह विकेट के बावजूद इंग्लैंड संभला

325 रन नौ विकेट पर बना लिए इंग्लैंड ने पहले दिन स्टंप तक

जो रूट (नाबाद 135 रन) ने बृहस्पतिवार को यहां एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट के पहले दिन ऑस्ट्रेलिया में अपना पहला शतक जड़ा जिससे इंग्लैंड ने स्टंप तक पहली पारी में नौ विकेट पर 325 रन बना लिए। हालांकि ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल स्टार्क ने 71 रन देकर छह विकेट झटके लेकिन इंग्लैंड शुरूआती झटकों से उबरकर अच्छी स्थिति में पहुंच गया।

ऑस्ट्रेलिया में रूट ने अभी तक शतक नहीं लगाया था और इससे पहले ऑस्ट्रेलिया में पिछले 15 एशेज टेस्ट में उनका सबसे बड़ा टेस्ट स्कोर 89 था। लेकिन उन्होंने लंबा इंतजार खत्म करते हुए 181 गेंद में 11 चौके से 100 रन पूरे किए। वह अभी तक 202 गेंद का सामना करके 15 चौके और एक छक्का जड़ चुके हैं।

स्टार्क ने बेन डकेट और ओली पोप को खाता भी नहीं खोलने दिया जिससे तीसरे ओवर में इंग्लैंड का स्कोर दो विकेट पर पांच रन हो गया था। तभी रूट क्रीज पर आए। उन्होंने पर्थ में सीरीज के पहले मैच में मिली आठ विकेट की हार के बाद इंग्लैंड की पारी को संभालते हुए आत्मविश्वास दिलाने की कोशिश की। वह 11वें नंबर के खिलाड़ी जोफ्रा आर्चर के साथ क्रीज पर मौजूद हैं। आर्चर ने अपने करियर का सबसे अच्छा नाबाद 32 रन का स्कोर बनाया। इससे रूट और आर्चर ने अंतिम विकेट के लिए 61 रन की अटूट साझेदारी निभा ली है। स्टार्क ने बीच के सत्र में हैरी ब्रूक (31 रन) को आउट कर अपने करियर का 415वां विकेट हासिल किया।

ईपीएल : आर्सेनल को पांच अंकों की बढ़त

लंदन, एजेंसी

आर्सेनल ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल टूर्नामेंट में पांच अंक की बढ़त हासिल कर ली है जबकि लिवरपूल का निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा।

आर्सेनल ने जहां ब्रेंटफोर्ड पर 2-0 की जीत के साथ प्रीमियर लीग खिताब की ओर मजबूत कदम बढ़ाए, वहीं लिवरपूल ने एनफील्ड में अंतिम क्षणों में आत्मघाती गोल की मदद से संदरलैंड के साथ 1-1 से ड्रॉ खेला।

मौजूदा चैंपियन लिवरपूल की टीम अब आठवें स्थान पर है। उसके कोच आर्ने स्लॉट आलोचकों के निशाने पर हैं और स्टार फारवर्ड मोहम्मद सलाह को लगातार दूसरे मैच में शुरुआती लाइनअप से बाहर रखने के उनके फैसले की कड़ी आलोचना होने की संभावना है। इस बीच चेल्सी को लीड्स के हाथों 3-1 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे खिताब जीतने की उसकी उम्मीदों को झटका लगा। इस हार से चेल्सी चौथे स्थान पर खिसक गई और आर्सेनल से नौ अंक पीछे हो गई, जिसने सभी प्रतियोगिताओं में अपना अजेय अभियान 18 मैचों तक बढ़ा लिया है और 2004 के बाद से पहली बार लीग खिताब जीतने की ओर अग्रसर है।

आखिरी स्थान पर चल रहे वॉल्वरहैम्प्टन को नॉटिंघम फ़ॉरेस्ट के हाथों अपने घरेलू मैदान पर 1-0 से हार का सामना करना पड़ा, जबकि एस्टन विला ने ब्राइटन पर 4-3 से जीत हासिल की।

ओलंपिक मशाल इटली को सौंपी

एथेंस (यूनान)। यूनान ने गुरुवार को ऐतिहासिक पैनाथेनाइक स्टेडियम में मिलान-कॉर्टिना ओलंपिक शीतकालीन खेल 2026 के समारोह के लिए ओलंपिक मशाल इटली को सौंपी। जहां से इसे एक महीने से अधिक समय तक देशभर में घुमाया जाएगा।

मशाल को विश्व कुश्ती चैंपियन जॉर्जियोस कौगियोउमटसिडिस स्टेडियम में ले गए। उन्होंने इसे इटली की ओलंपिक चैंपियन जैस्मीन पाओलिनी और साइकिलिस्ट फिलिपो गान्ना को सौंपा। यह मशाल ओलंपिक गेम्स की जन्मभूमि यूनान और आने वाले शीतकालीन ओलंपिक के मेजबान देश इटली के बीच लंबे समय से चले आ रहे रिश्तों की निशानी है। वर्ल्ड वॉटर पोलो चैंपियन एलेनी जेनाकी ने फिर मशॉल ली और यूनान की राष्ट्रीय टीम के साथ मिलकर, कल्लिमारमारो स्टेडियम में अग्निकुंड को प्रज्ज्वलित किया।

जूनियर हॉकी विश्व कप | क्वार्टर फाइनल में आज होगी भिड़ंत, पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में बदलने पर देना होगा ध्यान

बेल्जियम के खिलाफ भारत की होगी असली परीक्षा

चेन्नई, एजेंसी

भारत ने अपेक्षाकृत आसान पूल में लगभग प्रत्येक विभाग में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन एफआईएच पुरुष जूनियर हॉकी विश्व कप में उसकी असली परीक्षा बेल्जियम के खिलाफ शुक्रवार को यहां होने वाले क्वार्टर फाइनल मैच में होगी।

चिली, ओमान और स्विट्जरलैंड के साथ पूल बी में शामिल भारत ने शानदार प्रदर्शन करके पहले स्थान पर रहते हुए नाकआउट दौर में प्रवेश किया। भारतीय टीम ने पूल चरण में 29 गोल किए और एक भी गोल नहीं खाया, जो टूर्नामेंट में भाग ले रही सभी 24 टीमों में सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइक रेट है। लेकिन पीआर श्रीजेश की कोचिंग वाली टीम यह बात अच्छी तरह जानती है कि इन परिणामों का आगे कोई महत्व नहीं होगा, क्योंकि टूर्नामेंट के अंतिम चरण में उनका सामना मजबूत टीमों से होगा।

जूनियर हॉकी विश्व कप के एक मैच दौरान भारतीय खिलाड़ी। फाइल फोटो

यहां से कोई भी चूक भारत के नौ साल बाद घरेलू मैदान पर खिताब जीतने के सपने को चकनाचूर कर सकती है। भारत ने आखिरी बार 2016 में लखनऊ में खिताब जीता था। भारत पूल चरण में शानदार प्रदर्शन करके इस उपलब्धि को दोहराने की स्थिति में दिख रहा है। उसने अभी तक 18 मैदानी गोल किए हैं। इसके अलावा उसने नौ गोल पेनल्टी कॉर्नर से और दो पेनल्टी स्ट्रोक से किए हैं। लेकिन यहां से भारतीय टीम की राह आसान नहीं होगी और किसी भी तरह का अति आत्मविश्वास उसे खिताब की दौड़ से बाहर कर सकता है। चिली और ओमान के खिलाफ पहले दो मैचों में भारत ने दबदबा बनाए रखा और मनचाहे गोल दागे। उसने स्विट्जरलैंड को 5-0 से हराया, लेकिन स्विस टीम ने भारत की रक्षापंक्ति के सामने कड़ी चुनौती पेश की। इस मैच में गोलकीपर प्रिंस दीप सिंह और बिक्रमजीत सिंह ने कुछ शानदार बचाव किए।

2016 में भारत ने आखिरी बार जीता था खिताब

पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल करना अभी भी चिंता का विषय बना हुआ है। पिछले मैच में शिलानंद लाकड़ा ने दो बार पेनल्टी कार्नर को गोल में बदला लेकिन भारत कप्तान रोहित और अनमोल एक्का से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगा।

भारतीय स्ट्राइकरों ने पूल चरण में शानदार प्रदर्शन किया। दिलराज सिंह (06 गोल), मनमीत (05), अर्शदीप सिंह (04), अजीत यादव और गुरजोत सिंह (दोनों दो-दो गोल) सभी ने अपना प्रभाव छोड़ा है। रोसन कुजूर, एड्रोई एक्का, अंकित पाल और इंगलेम्बा लुवांग थोउनाओजम ने मध्यपंक्ति में अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन उनकी असली परीक्षा अब होगी।

इंग्लैंड ने चिली दक्षिण अफ्रीका ने मलेशिया को हराया

चेन्नई। इंग्लैंड ने जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के नौवें से 16वें स्थान के क्लासीफिकेशन मुकाबले में गुरुवार को चिली को 3-1 से हराया। मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम पर खेले गए मैच में इंग्लैंड के लिये काडेन ड्रेसे ने तेरहवें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर पहला गोल दागा। वहीं कप्तान मैक्स एंडरसन ने दूसरे क्वार्टर के चौथे मिनट में फील्ड गोल करके बढत दुगुनी कर दी। दक्षिण अफ्रीका ने जेडन बूकर के दो गोलों की मदद से मलेशिया को नौवे से 16वें स्थान के क्लासीफिकेशन मैच में 3-1 से हराया। मैच में चारों गोल पेनल्टी कॉर्नर पर हुए। बूकर ने 18वें और 39वें मिनट में गोल दागे जबकि तीसरा गोल रोस मोंटगोमेरी ने 58वें मिनट में किया।